प्रस्तावना.

नीति ए धर्मनो मूल पायो छे. कारणके नीतिकुशल पुरुषोज धर्मनो वधु फेलावो करी शके छे. वली कोइपण प्रजाना अन्युदयनो आधार तेनी नीतिपरायणताउपरज रहेलो छे एटले के जे प्रजा जेम जेम उत्तम नीति उपर आरूढ थती जशे तेम तेम वधुने वधु आबाद थती जशे. माटे दरेक माणसे नीतिना नियमोने पूरेपूरा समजीने तेने अनुसरी वर्त्तवुं जोइये.

आ आर्यावर्त्तमां प्राचीनसमये लोको एटला बधा नीतियुक्त हता के ते समयने आजे सत्ययुगना नामे ओलखवामां आवेछे. अने जे प्रमाणमां तेओ नीतियुक्त हता तेज प्रमाणमां तेओ ते काळनी इतर नीतिहीन अनार्य प्रजाओ करतां वधु आबाद थएला हता एम आपणने प्राचीन इतिहास वांचतां तरत मालम पडी रहेछे.

आपणा श्रीजैनधर्मना अनुसारे आ नीतिमार्गनो पहेल प्रथम प्रसार त्रीजा आराना छेडामां सात कुलकर उत्पन्न थया त्यारथी शरु थइ प्रथम तीर्थंकर श्रीऋषभदेव भगवान तथा तेमना जेष्ठपुत्र प्रथम चक्रवर्त्ती श्रीभरतमहाराजना समयमां पूर्णरूपमां प्रकाशवा लाग्यो.

नीति एटले वर्त्तमान द्रव्य, क्षेत्र, काल, तथा भावना अनुसारे स्वपरहितावह आचार पालन करवानो कायदो. आ कायदाप्रमाणे वर्त्तनार पुरुषो शिष्ट एटले केळवायल वर्गमां गणायछे. अने तेथीज नीतिने वळीवेळा "शिष्टाचार" एटले केळवायल जनोनो आचार एवा नामथी पण ओळखवामां आवेछे. तेमज नीतिमार्गने न्याय मार्ग एटले इन्साफनो रस्तो पण कहेवामां आवेछे.

आर्यलोको पोताना पुत्रपुत्रीओने नीतियुक्त बनाववामाटे एटला उमंगी रहेता के तेओ तेमने पांच वर्ष पूर्ण थतां लागलाज निशाल एटले "नीतिशालाओ" मां सारा उपाध्यायो (टीचरो) ना हाथमां सपुरद करता; ज्यां कुमार आर्यपुत्रो वीस वर्षलगी मावापनुं मुख जोया वगर केवल गुरुना तावामांज रहीने ब्रह्मचर्य राखवासाथे अने नीतिपालन पुरस्सर सकल विद्याओ तथा कलाओनो अभ्यास पूर्ण करी पहेलो ब्रह्मचर्याश्रम पूर्ण करता; अने आर्यपुत्रीओ चार वर्षनी उमरे आवतां स्त्रीशिक्षकोना हाथतले रही बारवर्ष पर्यंत सरस्वतीदेवीनुं आराधन करी तेनी प्रसन्नता मेलवती एटले के सकल उपयोगी विद्या तथा कलाओमां हुशीआर थइ पोते साक्षात् सरस्वतीजेवी दिव्य प्रज्ञावंत बनीने सोल वर्षनी थया बाद स्वयंवरना रिवाजथी विद्याकलावंत अने गुणरूपसंपन्न नीतिमान् आर्यकुमारने पति तरीके पसंद करती हती.

आ रीते आर्यलोको ज्यारे नीतिने चाहता हता, त्यारे जुदा जुदा नीतिकारोए पोतपोताना विचारो प्रमाणे अनेक नीतिग्रंथो रच्याछे, जेवाके;-शुक्राचार्यकृत शुक्रनीति, विदुरप्रणीत विदुरनीति, चाणक्यप्रणीत चाणक्यनीति, पंचतंत्र, वगेरा वगेरा.

परंतु ए बधा नीतिग्रंथो सामान्य हिंदुसमाजना नीतिविचारो बतावता होवाथी ए बाबतमां लोकोत्तर अने दयापरिपूर्ण जैनधर्मना शा शा विचारो रहेला छे, ते दरेक नीतिमर्मजिज्ञासु जनोने अवश्य जाणवुं जोइए अने तेना माटे उत्तममां उत्तम साधन ते आ "अर्हन्नीति" नामनो ग्रंथ छे.

अर्हत् एटले पूजा करवा लायक वीतराग देव तेमणे बतावेल नीति ते "अर्हन्नीति."

आ ग्रंथ कलिकालमां सर्वज्ञमान अनेक जैनग्रंथकर्त्ता जगत्प्रसिद्ध श्री हेमचंद्राचार्ये श्रीमान् चौलुक्यवंशीय जीवदयाप्रतिपालक परमार्हत कुमारपाल नरेश्वरना आग्रहथी प्रथमना

" बृहदर्हन्नीति " नामना ग्रंथथी साररूपे उद्धरीने रच्योछे. एटले जैनोमां ते सर्वमान्य प्रामाणिक ग्रंथ छे. अने तेटलाखातर तेनी वधु वखाण करवानी कसी जरुर रही नथी.

आ ग्रंथनुं पहेलां तो मूलसाथे भाषांतर छापी प्रसिद्ध करवानो अमारो इरादो हतो, पण तेम करतां तेनुं कद वधी जइ ते किम्मतमां मोंघो थवा जाय तो साधारण माणसथी तेनो लाभ लेतां अचकाय एम धारी साधारण प्रसंगोमां केवल भाषांतर अने वारसा जेवा गंभीर प्रसंगोमां मूलसाथे भाषांतर प्रसिद्ध कर्यो छे, जेथी वाचकवर्गने वधु सवल थशे एम अमे आशा राखीए छीये.

छेवटे अमारे एटलुंज कहेवुं बस छे के आ ग्रंथ दरेक नीतिअभ्यासिने पोताना प्राइवेट पुस्तकसंग्रहमां राखवालायक छे, दरेक जैनभंडारमां अवश्य संघरवा योग्य छे, दरेक जैनविद्यार्थीने अवश्य वांचवा लायक छे अने दरेक जैनबंधुने अवश्य सांभळवा उचित छे, माटे अमारा जैनभाइओ आवा अमूल्य ग्रंथनी योग्य कदर करवामां कदापि पछात नहि पडशे एवी अमे पूर्ण आशा राखिए छीए.

मुंबइ,
ता. १ ली नवेंबर सने १९०१

श्रावक
भीमसिंह माणेकना
कार्यप्रवर्त्तको.

आर्यलोको पोताना पुत्रपुत्रीओने नीतियुक्त बनाववामाटे एटला उमंगी रहेता के तेओ तेमने पांच वर्ष पूर्ण थतां लागलाज निशाळ एटले "नीतिशाळाओ" मां सारा उपाध्यायो (टीचरो) ना हाथमां सुपरद करता; ज्यां कुमार आर्यपुत्रो वीस वर्षलगी मावापनुं मुख जोया वगर केवळ गुरुना तावामांज रहीने ब्रह्मचर्य पाळवानाथे अने नीतिपालन पुरस्सर सकल विद्याओ तथा कळाओनो अभ्यास पूर्ण करी पछेथी ब्रह्मचर्याश्रम पूर्ण करता; अने आर्यपुत्रीओ चार वर्षनी उमरे आवतां स्त्रीशिक्षकोना हाथतळे रही बारवर्ष पर्यंत सरस्वतीदेवीनुं आराधन करी तेनी प्रसन्नता मेळववी एटले के सकल उपयोगी विद्या तथा कळाओमां हुशीयार थई पोते साक्षात् सरस्वतीजेवी दिव्य प्रज्ञावंत बनीने सोळ वर्षनी वय थये स्वयंवरना रिवाजथी विद्याकळावंत अने गुणरूपसंपन्न नीतिमान् आर्यकुमारने पति तरीके पसंद करती हती.

आ रीते आर्यलोको ज्यारे नीतिने चाहता हता, त्यारे जुदा जुदा नीतिकारोए पोतपोताना विचारो प्रमाणे अनेक नीतिग्रंथो रच्या छे, जेवा के:-शुक्राचार्यकृत शुक्रनीति, विदुरप्रणीत विदुरनीति, चाणक्यप्रणीत चाणक्यनीति, पंचतंत्र, वगेरा वगेरा.

परंतु ए बधा नीतिग्रंथो सामान्य हिंदुसमाजना नीतिविचारो दर्शावनारा होवाथी ए वाचनमां ठेकठेकाणे अने दयापरिपूर्ण जैनधर्मथी उलटा विचारो रहेला छे, ते दरेक नीतिमार्गजिज्ञासु जनोने अवश्य जाणवुं जोइए अने तेना माटे उत्तमामां उत्तम साधन ते आ "अर्हन्नीति" नामनो ग्रंथ छे.

अर्हन् एटले पूजा करवा लायक वीतराग देव तेमणे बतावेलु जे नीति ते "अर्हन्नीति."

आ ग्रंथ कलिकालमां सर्वज्ञसमान अनेक जैनग्रंथकर्ता भगवान् श्री हेमचंद्राचार्ये श्रीमान् चौलुक्यवंशीय श्रीवनराज-[illegible] कुमारपाल नरेश्वरना आग्रहथी प्रथमना

“ बृहदर्हन्नीति ” नामना ग्रंथथी सारस्पे उद्धरीने रच्योछे. एटले जैनोमां ते सर्वमान्य प्रामाणिक ग्रंथ छे. अने तेटलापातर तेनी वधु वखाण करवानी वली जरुर रही नथी.

आ ग्रंथनुं पहेलां तो मूलसाथे भाषांतर छापी प्रसिद्ध करवानो अमारो इरादो हतो, पण तेम करतां तेनुं कद वधी जइ ते किम्मतमां मोंघो थवा जाय तो साधारण माणसथी तेनो लाभ लेतां अटकाय एम धारी साधारण प्रसंगोमां केवल भाषांतर अने वारसा जेवा गंभीर प्रसंगोमां मूलसाथे भाषांतर प्रसिद्ध कर्यो छे, जेथी वाचकवर्गने वधु सवल थशे एम अमे आशा राखीए छीये.

छेवटे अमारे एटलुंज कहेवुं बस छे के आ ग्रंथ दरेक नीतिअभ्यासिने पोताना प्राइवेट पुस्तकसंग्रहमां राखवालायक छे, दरेक जैनभंडारमां अवश्य संघरवा योग्य छे, दरेक जैनविद्यार्थीने अवश्य वांचवा लायक छे अने दरेक जैनबंधुने अवश्य सांभलवा उचित छे, माटे अमारा जैनभाइओ आवा अमूल्य ग्रंथनी योग्य कदर करवामां कदापि पछात नहि पडशे एवी अमे पूर्ण आशा राखिए छीए.

मुंबइ.
ता १ ली नवेंबर सने १९०१

श्रावक
भीमसिंह माणेकना
कार्यप्रवर्त्तको.

अनुक्रमणिका.

प्रथमोऽधिकारः

द्वितीयोऽधिकारः

तृतीयोऽधिकारः

अनुक्रमणिका.

प्रथमोऽधिकारः

द्वितीयोऽधिकारः

श्री जिनाय नमः

अर्हन्नीतिनुं गुजराती भाषांतर.

(कर्ता श्रीहेमचंद्राचार्य)

श्रीमंतं नाभिजं वंदे, प्रथमं तीर्थनायकम् ॥
भूपं च योगिनं योग-विद्वद्दृश्यं रम्यविग्रहम् ॥ १ ॥

अर्थ– पेहेला तीर्थंकर, पेहेला राजा, पेहेला योगी, योगने जाणनाराओने प्रथमज दृष्टिगोचर थएला, तथा मनोहर शरीरवाला एवा श्रीमान ऋषभदेव प्रभुने हुं वंदन करुं छुं.

आ भरतक्षेत्रमां जेनाथी संसारसमुद्रने तारनारुं जेमनुं शासन प्रवर्तेलुं छे, एवा श्री वीरार्य महाराजने हुं नमस्कार करुं छुं.

विघ्नोनो नाश करनारा एवा श्री पुंडरिक महाराज आदिक गणधरोने पण हुं मन, वचन अने कायाथी नमस्कार करुं छुं.

जेमनी वाणीथी उपदिष्ट थएलुं सघलुं श्रुतज्ञान लोकोमां चाले छे, एवा पांचमा गणधर श्री सुधर्मास्वामिने हुं नमस्कार करुं छुं.

जेमनी कृपाथी उत्पन्न थएलुं ज्ञान मारामां स्फुरायमान थइ रह्युं छे, एवी श्रुतदेवता तथा एवा सद्गुरुने मारो वारंवार नमस्कार थाओ!

(हवे आ ग्रंथना कर्ता श्री हेमचंद्राचार्य कहे छे के) पूर्वे बनावेलां वृद्धदर्हन्नीति नामना शास्त्रमांथी कुमारपाल राजाना आग्रहथी किंचित् सार उधरीने राजा अने प्रजाना हित माटे, तुरत स्मरणमां आवे, एवुं आ अर्हन्नीति नामनुं सेहेलुं शास्त्र हुं रचुं छुं.

एक दहाडो श्री महावीर प्रभु गौतम आदिक गणधरोथी स्तुति कराता थका राजगृही नगरीनी बहार उद्यानमां समोसर्या. तेमना पधारवानो वृत्तांत सांभळीने तुरत तेमने वांदवामाटे श्रेणिक राजा परिवारसहित परम उत्कंठाथी त्यां गया. त्यां प्रभुने

नमस्कार करीने तथा उचित जगोए बेसीने देशना देवायाबाद अवसर मेळवीने राजाए प्रभुने पूछ्युं के हे भगवन्! पूर्वे राजनीतिनो मार्ग कोणे, केटला भेदोवाळो तथा केवो बताव्यो छे? ते जाणवानी मने घणीज उत्कंठा छे, माटे मारापर कृपा करीने ते आप प्रकाशो! केमके, महान् पुरुषो परार्थ करवामां तत्पर होय छे.

ते सांभळी प्रभुए कह्युं के, हे मगधेश्वर! तमो सांभळो! आ काळमां पहेला राजा श्रीऋषभदेव प्रभु थएला छे. ते श्रीऋषभदेव प्रभु लोकोनुं हित करवामां तत्पर हता, अने तेटलामाटे काळना दोषथी ज्यारे कल्पवृक्षो फळोने आपतां बंध थयां, अने भरत क्षेत्रना लोको तेथी क्लेश आदिक दुःखोथी दुःखी थयां, त्यारे तेमनापर करुणा लावीने प्रभुए पूर्वथी चालता आवता युग्मीधर्मने दूर करी, वर्णाश्रमोना विभागो कर्या, तेओना संस्कारोनी विधि करी, खेती, व्यापार, तथा कारीगीरी आदिक व्यवहारो स्थाप्या, तेम राजाओने माटे नीतिमार्ग, तथा नगरनी रचना आदिकनी विधिओ बतावी, तेम आ लोक अने परलोक संबंधी सघळी विधिओ तथा सर्व क्रियाओने पण प्रगट करी. त्यारबाद नव निधानमांथी प्राप्त थएला नीतिधर्मादिक सर्वने जाणनारा एवा तेमना पुत्र भरतचक्रीए तेमनुं वचन हृदयमां धरीने जगतनी स्थिति माटे चार आर्यवेदो बनाव्या, के जेथी सर्व प्रजा पुरुषार्थोने उपार्जन करवामां दक्ष थई. काळांतरे चारे वेदो नष्ट थया, अने सुविधिनाथ प्रभु आदिकना आंतरामां मिथ्यादृष्टिए, हिंसा आदिकथी दूषित वेदो बनाव्या. ते वेदोने तजीने उत्तम पूर्वाचार्योए अनेक ग्रंथो रच्या, के जे ग्रंथो आजे पण पूर्ण रीते हयात छे. ते ग्रंथोनो आधार लईने लोको व्यवहार चलावे छे, एवी रीते हे मगधराज! तमारा पहेला प्रश्नो उत्तर थयो जाणजो!

एवी रीते पेहेला प्रश्ननो उत्तर दीधाबाद प्रभुए बीजा प्रश्ननो जे उत्तर आप्यो, ते कहे छे.

तेमां पेहेलां राजा अने मंत्रिना गुणो उपयोगी होवाथी तेउंनुं वर्णन तथा तेउंने माटेनीज केटलीक शिखामणो कहे छे.

तेमां प्रथम राजाना गुणोनुं वर्णन करे छे.

संपूर्ण अंगोपांगवालो, (उत्तम) लक्षणोथी परिपूर्ण, रुपालां शरीरवालो, अहंकार विनानो, तेजस्वी, यशवालो, दयालु, कलावान, शुध्धराजकुलमां उत्पन्न थयलो, पूर्वजोनुं अनुकरण करनारो, त्रण प्रकारनी शक्तियालो, प्रजापर प्रेम राखनारो, प्रजापर अमल करवाने योग्य, त्रणे पुरुषार्थोने तुल्य रीते साधनारो, खजानावालो, वचन पालनारो, गुप्त पुरुषो मारफते तपास राखनारो, दीर्घदृष्टी, कार्य पार पाडनारो, उद्योगी, शस्त्रविद्या अने शास्त्रविद्या ए बन्नेमां प्रवीण, दंडनीति अने कृपानीति बन्नेमां तत्पर, दुष्ट अने उत्तम बन्नेनी लांच (रुशवत) नहीं लेनारो, उपायथी राज्यलक्ष्मीने मेलवनारो, दातार, निश्चयथी जय मेलवनारो, न्यायपर प्रेम राखनारो, न्यायने जाणनारो, व्यसनोने दूर करनारो, वीर्य, आचार, गंभीरता, उदारता, तथा चतुराइथी भूषित थयलो, क्षमायाचनपर्यंत क्रोधवालो, तथा सत्वगुणवालो, एवी रीतना गुणोवालो राजा तात्विक राजा कहेवाय छे.

एवी रीते राजाना गुणो जाणवा.

हवे राजाउंनी शिक्षाउंनुं वर्णन करे छे.

हे राजन्! तमारे देव, गुरु, द्विज, कुलना ज्येष्ट मनुष्यो तथा लिंगधारीउं एटलाउं शिवाय बीजाउंने नमस्कार करवो नहीं. वली हे राजन्! तमारे खुल्ली रीते, तेम कोइनी साथे बेसीने पण भोजन करवुं नहीं, तेम श्राध्धभोजन न करवुं, तथा बीजाने घेर पण भोजन करवुं नहीं. अगम्य तथा जेनो स्पर्श कर-

नमस्कार करीने तथा उचित जगोए बेसीने देशना देवायाबाद अवसर मेळवीने राजाए प्रभुने पूछ्युं के हे भगवन्! पूर्वे राजनीतिनो मार्ग कोणे, केटला भेदोवालो तथा केवो बतावेलो छे? ते जाणवानी मने घणीज उत्कंठा छे, माटे मरापर कृपा करीने ते आप प्रकाशो! केमके, महान् पुरुषो परार्थ करवामां तत्पर होय छे.

ते सांभळी प्रभुए कह्युं के, हे मगधेश्वर! तमो सांभळो! आ कालमां पेहेला राजा श्रीऋषभदेव प्रभु थएला छे. ते श्रीऋषभदेव प्रभु लोकोनुं हित करवामां तत्पर हता, अने तेटलामाटे कालना दोषथी ज्यारे कल्पवृक्षो फळोने आपतां बंध थयां, अने जरा हेतना लोको तेथी क्लेश आदिक दुःखोथी दुःखी थयां. त्यारे तेमनापर करुणा लावीने प्रभुए पूर्वथी चालता आवता युग्मीधर्मने दूर करी, वर्णाश्रमोना विभागो कर्या, तेओना संस्कारोनी विधि करी, खेती, व्यापार, तथा कारीगीरी आदिक व्यवहारो स्थाप्या, तेम राजाओने माटे नीतिमार्ग, तथा नगरनी रचना आदिकनी विधिओ बतावी, तेम आ लोक अने परलोक संबंधी सघळी विद्याओ तथा सर्व क्रियाओने पण प्रगट करी. त्यारबाद ते विधानमांथी प्रगट थएला नीतिधर्मादिक मार्गोने अनुसरता एवा तेमना पुत्र भरतचक्रीए तेमनुं वचन हृदयमां धरीने लोकोनी स्थिति माटे चार आर्यवेदो बनाव्या, के जेथी सर्व प्रजा पुरुषार्थोने उपार्जन करवामां दक्ष थइ. कालांतरे चारे वेदो नष्ट थया, अने सुविधिनाथ प्रभु आदिकना आंतरामां मिथ्यात्विओए हिंसा आदिकथी दूषित वेदो बनाव्या. ते वेदोने जोइने उत्तम पूर्वाचार्योए अनेक ग्रंथो रच्या, के जे ग्रंथो हाल पण पृथ्वीपर हयात छे. ते ग्रंथोनो आधार लेइने लोको व्यवहारनुं पालन करे छे. वळी हे महाराज! तमारा पेहेला प्रश्नो उत्तर हवे सांभळो!

एवी रीते पेहेला प्रश्ननो उत्तर दीधाबाद प्रभुए बीजा प्रश्नो जे उत्तर आप्यो, ते कहे छे.

तेमां पेहेलां राजा अने मंत्रिना गुणो उपयोगी होवाथी तेउनुं वर्णन तथा तेउने माटेनीज केटलीक शिखामणो कहे छे.

तेमां प्रथम राजाना गुणोनुं वर्णन करे छे.

संपूर्ण अंगोपांगवालो, (उत्तम) लक्षणोथी परिपूर्ण, रुपालां शरीरवालो, अहंकार विनानो, तेजस्वी, यशवालो, दयालु, कलावान, शुद्धराजकुलमां उत्पन्न थएलो, पूर्वजोनुं अनुकरण करनारो, त्रण प्रकारनी शक्तिवालो, प्रजापर प्रेम राखनारो, प्रजापर अमल करवाने योग्य, त्रणे पुरुषार्थोने तुल्य रीते साधनारो, खजानावालो, वचन पालनारो, गुप्त पुरुषो मारफते तपास राखनारो, दीर्घदृष्टी, कार्य पार पाडनारो, उद्योगी, शस्त्रविद्या अने शास्त्रविद्या ए बन्नेमां प्रवीण, दंडनीति अने कृपानीति बन्नेमां तत्पर, दुष्ट अने उत्तम बन्नेनी लांच (रुशवत) नहीं लेनारो, उपायथी राज्यलक्ष्मीने मेलवनारो, दातार, निश्चयथी जय मेलवनारो, न्यायपर प्रेम राखनारो, न्यायने जाणनारो, व्यसनोने दूर करनारो, धीर्य, आधार, गंभीरता, उदारता, तथा चतुराइथी भूषित थएलो, दुःमायावनपर्यंत क्रोधवालो, तथा सत्वगुणवालो, एवी रीतना गुणोवालो राजा तात्विक राजा कहेवाय छे.

एवी रीते राजाना गुणो जाणवा.

हवे राजाउनी शिक्षाउनुं वर्णन करे छे.

हे राजन्! तमारे देव, गुरु, द्विज, कुलना स्थविर मनुष्यो तथा लिंगधारीउं वरखाउं शिवाय बीजाउने नमस्कार करवो नहीं. वली हे राजन्! तमारे गुप्ती रीते, तेम कोइनी साथे बेसीने पण भोजन करवुं नहीं, तेम श्राद्धभोजन न करवुं, तथा बीजाने घेर पण भोजन करवुं नहीं. अगम्य तथा उनो स्पर्श कर-

वो लायक नथी एवी स्त्रीनो संग करवो नहीं, तेम बीजाए पेहेरेलुं वस्त्र के आजूषण पहेरवुं नहीं. तेम परनी शय्यापर अने परना आसनपर सुवुं बेसवुं नहीं. तेम परना पात्रमां सर्वथा प्रकारे जोजननो त्याग करवो.

एक गुरुशिवाय बीजाने पोतानां खास आसनो, तथा वाहनो उपयोग माटे आपवां नहीं. कांजी सरखुं तुच्छ, कोदेलुं, यवनुं, तथा तेलवालुं जोजन करवुं नहीं, तेम पांच जातिना उंबर फलो खावां नहीं.

एवी रीते राजाउ माटेनी शिखामण जाणवी.

हवे राजाउने माटे नीतिशिक्षानुं वर्णन करे छे.

हजारो गमे अपराधो कर्या होय, तो पण राजाए, स्त्री, ब्राह्मण, तथा तपस्वीने बंधन करवुं नहीं, तेम तेउनां अंगने राजाए छेदवुं नहीं, अने तेउने देशपार पण करवां नहीं. देव, ब्राह्मण, गुरु तथा लींगधारीउने हमेशां उठीने मान आपवुं. धर्म, अर्थ अने कामने, परस्पर जेम विरोध न आवे, तेवी रीते सेववा, तथा क्षणक्षण प्रते सर्व प्रजानुं स्मरण करीने तेनुं पोषण करवुं. मंत्रीउ तेम बीजा कारजारीउ जो प्रजाने दुःख देता होय, तो तेउ तरफ राजाए क्षणक्षण प्रते दृष्टि राख्या करवी, अने तेमां बिलकुल प्रमाद करवो नहीं. वली हे राजन्! तमारे कोइने लोजथी, क्रोधथी, के अजिमानथी दंडवा नहीं, गुन्हाने अनुसारे योग्य शिक्षा करवी. हमेशां आलसनो त्याग करीने नीतिपूर्वक जंडारनी वृद्धि करवी, तेम नीतिपूर्वक प्रजानुं पालन करीने राज्यनुं हित चिंतववुं. वली पोतानुं हित इच्छनार राजाउए कदापि पण नीतिमार्गने तजवो नहीं. केमके, न्यायविनानो राजा आ लोक अने परलोकमां पण दुःखी थाय छे. कह्युं छे के, "दुष्टोने दंड आपवो, स्वजनोनी पूजा करवी, न्यायपूर्वक जंडारनी वृद्धि

करवी, निष्पक्षपाति थवुं, अने शत्रुथी राज्यनुं रक्षण करवुं" ए पांच यज्ञो राजाओ माटे कहेला छे. अंगरक्षको, नागरो, मंत्रिओ, कोटवालो, रसोइआ, तथा द्वारपालो, एवा माणसोने करवां, के जे माणसो हमेशां वंशपरंपराथी चालता आवे छे. वळी राजाए शिकार, जुगार, वेश्या, दासीगमन, परस्त्री, मदिरा, वचननी कठोरता, तथा चोरीनो त्याग करवो, फोकट कोइने द्रव्यनो दंड करवो नहीं, घणां गीतो के वाजिंत्रो सांभळवां नहीं, हमेशां वारंवार नाटको जोवां नहीं, तेम हमेशां दिवसे निद्रा करवी नहीं, परोक्ष कोइनी निंदा करवी नहीं, एटली जातनां व्यसनोनो त्याग करवो. तेम न्याय अने अन्यायनी परीक्षा कीर्तिनी पेठे करवी. वळी हे राजन्! तमारे स्त्रीओ, शत्रुओ, नीच माणसो, तथा अपराधीओ प्रते पक्षपात के स्नेह करवो नहीं. देवगुरुनी सेवामां, तथा प्रजानुं पालन करवामां मूर्ख अने लोभी माणसोनो वधारे पण विश्वास करवो नहीं. पोषण करवा लायक एवा माणसोनुं पोषण करवानुं कार्य परहस्ते कराववुं नहीं, संपदा वधते घेलेकी जवुं नहीं, तेम दुःख वधते धैर्यनो त्याग करवो नहीं. वळी हे राजन्! तमारे वधाने विस्तारवाळां एवां शास्त्रोथी, दानोथी (एटले दानशाळाओथी) पाणीना परबोथी, भोजनशाळाओथी, जिनमंदिरोथी तथा जळाशयोथी समस्त भूमिने भरी मुकवी, शत्रुना वंशजोने देशपार करवा, अने मित्रवर्गनुं पोषण करवुं. वळी त्रण प्रकारनी शक्तिओनुं, चार प्रकारनां उपायोनुं, सात प्रकारना राज्य अंगोनुं, तथा त्रण प्रकारना वर्गोनुं हमेशां प्रयत्नपूर्वक रक्षण करवुं. प्रभुता, उत्साह अने मंत्र ए त्रण प्रकारनी शक्तिओ जाणवी. साम, दाम, दंड अने भेद ए चार प्रकारना उपायो जाणवा. स्वामी, दीवान, मित्र, भंडार, राष्ट्र, किल्ला, अने लश्कर ए सात राज्यना अंगो छे. अने कोइ जगोए प्रकृति एटले प्रजाने पण सातमा अंग तरीके लखेल छे.

संधि, विग्रह, वाहन, आसन, आश्रय, अने द्वैधजाव ए ड गुणोने राज्यना स्तंजो कहेला छे. पोतानी अने परनी अपेक्षाविनाज सर्व प्रजानुं पालन करवुं, दुष्टोने, प्रजाने पीडनाराउने, राज्य लेवानी अभिलाषा राखनाराउने, देवगुरुनो नाश करनाराउने, शत्रुउने, तथा चोरोने राजाए प्राण रहित करवा, तेम लांच खानारा कारजारीउने हमेशां दंडवा. वधारे शुं कहेवुं ? हे राजन् ! जेम सर्व प्रजा हमेशां सुखी रहे, तेम करवुं, एवी रीतनी नीतिशिक्षाने दृढताथी चित्तमां धारण करवी.

एवी रीते राजाउ माटेनी नीतिशिक्षा जाणवी.

हवे मंत्रिउना गुणो कहे छे.

कुलीन, कुशल, धीर, दानेश्वरी, सत्य बोलनार, न्यायी, बुद्धिवान, शूरो, शास्त्रोने जाणनारो, सर्व व्यसनोथी मुक्त थएलो, दंडनीतिमां चतुर, पुरुषोना अंतरोने जाणनारो, सत्य असत्यनो तोल करनारो, अपराधी एवा मित्र अने शत्रुप्रते तुल्य दृष्टि राखनारो, धर्मकार्यमां रक्त, आगामिकालनो विचार करनारो, आस्तिकता आदिक चार प्रकारनी बुद्धिउवालो, डए दर्शनोनो जक्त, गुरु देवादिकनी उपासना करनारो, हमेशना चालता आवता आचारमां रक्त थएलो, बीजां कार्यथी विमुख रहेनारो, क्षीरनीरना विवेचननी पेठे न्याय अन्यायने जोनारो, कुलक्रमथी चालता आवता रिवाजोथी राजाने वाकेफ करनारो, एवी रीतना गुणोथी युक्त थएलो मंत्रि राज्यनी वृद्धि करनारो थाय छे.

एवी रीते मंत्रिना गुणो जाणवा.

हवे मंत्रिमाटेनी शिक्षा कहे छे.

क्रोधथी, लोजथी, उर्मुखपणाथी, तथा अहंकारथी हमेशां मंत्रिए कुमार्ग पकडवो नहीं, अने हमेशां (राज्यनुं) हितज चिंतववुं. वली हे राजन् ! मंत्रिए व्यवहारनी बाबतमां कोइनो

पण पक्षपात करवो नहीं. हमेशां प्रजानुं शीरीते हित थाय? तेवा उपायोपरज मनने चोंटाडवुं. विचार करीने राज्यना अंगो, तथा वैरीओ माटे मंत्रिए एवा उपायोने योजवा, के जेथी पोताना स्वामिना कार्यनी जरा पण हानि थाय नहीं.

एवी रीतनी मंत्रिमाटेनी शिक्षा जाणवी.

उपर जणावेला गुणोने धारण करनारा ज्यारे राजाओने मंत्रिओ होय, त्यारे राज्यमां नीतिनी प्रवृत्ति थाय छे, अने शत्रुओ आवी पडता नथी. उपर कहेली शिखामणथी युक्त थएला राजाए मांगलीक वाजित्रो सांजलतांज प्रजातमां जागृत थवुं, तथा पंच नमस्कारनुं स्मरण करवुं. पछी प्रातःकाल संबंधि सघलुं कार्य करीने, स्नान करी राजाए जिनालयमां जवुं; त्यां उंचे प्रकारे जिनजक्ति करीने, जो गुरु महाराजनो योग होय तो परिवार सहित तेमनी पासे जवुं; त्यां तेमने वंदन करीने तेमनी पासे बेसी समतापूर्वक तेमना मुखथी धर्मदेशना सांजलवी. पछी सर्व राज्यचिन्ह सहित, मंत्रिनी साथे राज्यसजामां आवी राजाए सिंहासनपर बेसवुं. त्यां सेनापति, कोटवाल अने पोताना गुप्त माणसो आदिक राज्यकारजारीओनी राजाए मुलाकात लेवी.

हवे अहीं प्रस्तावना योगथी, नीतिशास्त्रोना पंडितोए आगमोमां, ते सेनापति आदिकनां जे लक्षणो अने कार्यो कहेलां छे ते कहे छे.

तेओमां प्रथम सेनापतिनां लक्षणो कहे छे.

चतुर, यशस्वी, महाबलवान, स्वजातथी हमेशां करडो, तेजस्वी, सात्विक बलवालो, पवित्र, वचनादिकनी छीपीओने जाणनारो, म्लेच्छ जाषामां प्रवीण, म्लेच्छादिको प्रते शाम, दाम आदिक उपायोनो उपयोग करनारो, विचारपूर्वक जाषण करनारो, अवसरोचित वचनने जाणनारो, गंजीर अने मधुर शब्दो

संधि, विग्रह, वाहन, आसन, आश्रय, अने द्वैधभाव ए छ गुणोने राज्यना स्तंभो कहेला छे. पोतानी अने परनी अपेक्षाविनाज सर्व प्रजानुं पालन करवुं, दुष्टोने, प्रजाने पीडनाराओने, राज्य लेवानी अभिलाषा राखनाराओने, देवगुरुनो नाश करनाराओने, शत्रुओने, तथा चोरोने राजाए प्राण रहित करवा, तेम लांच खानारा कारभारीओने हमेशां दंडवा. वधारे शुं कहेवुं? हे राजन्! जेम सर्व प्रजा हमेशां सुखी रहे, तेम करवुं, एवी रीतनी नीतिशिक्षाने दृढताथी चित्तमां धारण करवी.

एवी रीते राजाओ माटेनी नीतिशिक्षा जाणवी.

हवे मंत्रिओना गुणो कहे छे.

कुलीन, कुशल, धीर, दानेश्वरी, सत्य बोलनार, न्यायी, बुद्धिवान, शूरो, शास्त्रोने जाणनारो, सर्व व्यसनोथी मुक्त थएलो, दंडनीतिमां चतुर, पुरुषोना अंतरोने जाणनारो, सत्य असत्यनो तोल करनारो, अपराधी एवा मित्र अने शत्रुप्रते तुल्य दृष्टि राखनारो, धर्मकार्यमां रक्त, आगामिकालनो विचार करनारो, आस्तिकता आदिक चार प्रकारनी बुद्धिओवालो, छए दर्शनोनो भक्त, गुरु देवादिकनी उपासना करनारो, हमेशना चालता आवता आचारमां रक्त थएलो, बीजां कार्यथी विमुख रहेनारो, क्षीरनीरना विवेचननी पेठे न्याय अन्यायने जोनारो, कुलक्रमथी चालता आवता रिवाजोथी राजाने वाकेफ करनारो, एवी रीतना गुणोथी युक्त थएलो मंत्रि राज्यनी वृद्धि करनारो थाय छे.

एवी रीते मंत्रिना गुणो जाणवा.

हवे मंत्रिमाटेनी शिक्षा कहे छे.

क्रोधथी, लोभथी, छमूर्खपणाथी, तथा अहंकारथी हमेशां मंत्रिए कुमार्ग पकडवो नहीं, अने हमेशां (राज्यनुं) हितज चिंतववुं. वली हे राजन्! मंत्रिए व्यवहारनी बाबतमां कोइनो

हवे सामान्यथी सर्व राजकारभारीओनां लक्षणो कहे छे.

कुलीन, चतुर, शूरा, शास्त्रोने जाणनारा, स्वामिभक्त, धर्ममां आस्थावाला, प्रजानुं हित इच्छनारा, सर्व व्यसनोथी मुक्त थएला, पवित्र, निर्लोभी, समदृष्टि राखनारा, प्रजानुं रक्षण करनारा, परनी उपेक्षाविनाना, गुरुपर भक्तिभाव राखनारा, प्रियवचनो बोलनारा, महान् आशयोवाला, महा भाग्यशाली, हमेशां न्यायधर्ममां रक्त थएला, प्रमादविनाना, हसमुखा, अने प्रायें करीने कीर्तिने पण चाहनारा एवा राजपुरुषोने योग्य जाणवा.

एवी रीते सामान्यपणाथी सर्व राजकारभारीओनां लक्षणो कह्यां.

हवे सामान्यपणाथी सर्व राजकारभारीओ माटे शिक्षा कहे छे.

पोताना स्वामिए विश्वास राखी जे कार्य सोंप्युं होय, तेमां प्रमाद नहीं करतां स्वामिनी इच्छा परिपूर्ण करवी. प्रजाने दुःख आपवुं नहीं, तेम स्वामिना कार्यनो भंग करवो नहीं, न्यायथी द्रव्य मेळववुं, अने सत्य मार्गने तजवो नहीं. प्रजाना धननी अने नरपतिपणानी वांछा न करवी, एवी रीते सर्व राजकारभारीओए पोतानी फरज ध्यानमां राखवी.

एवी रीते सामान्यपणाथी सर्व राजकारभारीओ माटेनी शिक्षा जाणवी.

हवे दूतनां लक्षणो कहे छे.

मीठां, खाटां, तीखां, अने कडवां एवी रीतनां वचनभेदोमां दूत चतुर होवो जोइए, उत्पातिकी आदिक बुद्धिओथी युक्त होवो जोइए, तुरत कार्य करनारो होवो जोइए, वळी ते दूत विनयी, स्वामिभक्त, फक्त स्वामिना कार्यमांज तत्पर, अने सघ-

ही भाषाओ जाणनारो होवो जोइए. प्रायें करीने दूतकार्यमाटे द्विजो (ब्राह्मणो) लायक गणाय छे.

एवी रीते दूतनां लक्षणो जाणवां.

हवे दूतनी शिक्षा कहे छे.

दूते कदापि पण फोगट उतावल करीने पोताना स्वामिने उत्साह आपवो नहीं, परना प्रमादनी अपेक्षा करवी नहीं, अने सत्यवात निवेदन करवी. वळी हे दूत! तारे सर्व जगोए पोताना स्वामीना प्रतापनी वृद्धि करवी, तेम अन्यना भावने जाणीने, ते भाव जो स्वामिना अर्थने साधनारो होय तो तुरत ते स्वामीने निवेदन करवो.

एवी रीते दूतनी शिक्षा जाणवी.

हवे तेओ सर्वनी विनंति सम्यक् प्रकारे सांभळीने मंत्रिसहित राजाए हिताहितनुं विवेचन करीने जेम बने तेम विशेष प्रकारे राज्यनुं हित करवुं.

इत्याचार्य श्रीहेमचंद्रविरचिते चौलुक्यवंशभूषण कुमारपाळ सुश्रुषिते श्रीअर्हन्नीतिशास्त्रे भूमिका भूपाळादि गुणवर्णनो नाम प्रथमोऽधिकारः समाप्तः ॥ श्रीरस्तु ॥

जगन्नाथं जिनं चैवा-द्भुत लक्ष्म्योर्जितमन्नम् ॥
प्रत्यूहनाशने दक्ष, मजितं समुपास्महे ॥ १ ॥

अर्थ-जगतना स्वामि, तथा अद्भुत लक्ष्मीथी तेजस्वी कांतिवाळा, अने विघ्नोनो नाश करवामां चतुर एवा श्रीअजितनाथ प्रभुनी हुं उपासना करुं छुं.

हवे पूर्वना अधिकारमां जे हिताहितनुं विचारण कह्युं छे, तेना संबंधमां नीतिना प्रवर्तनरूप राजानुं कार्य कहे छे.

त्यां आदिमां राजाए क्यां, केवी रीते अने कोनी साथे विचार करवो? ते कहे छे.

राजाए एकांत स्थानकमां रहीने स्वस्थ थइने समतापूर्वक मंत्रिर्ठनी साथे विचार करवा बेसवुं. कह्युं छे के, राजार्ठना मंत्रोनो अने कार्योनो भेद थइ जाय, माटे विचार करवानी जगोपरथी सघला मंत्रभेदकोने दूर करवा. एवी रीते विचार कर्यावाद नीति पूर्वक राज्यनुं हित करवुं. हवे ते नीति केटला प्रकारनी छे? ते कहे छे.

युद्धनीति, दंडनीति अने व्यवहारनीति एम त्रण प्रकारनी छे. तेर्ठमां पेहेली युद्धनीतिनो अवसरे खप पडे छे, अने पाछलनी बन्ने नीतिर्ठ हमेशने माटे उपयोगी छे.

हवे अहीं उद्देश निर्देशथी युद्धनीतिना वर्णननो प्रस्ताव होवाथी, (तेमां अंतर्गत रहेला) संधी आदिक गुणो उपयोगी होवाथी तेर्ठनुं स्वरूप कहे छे.

संधि, व्यवस्था, वैर, विग्रह, शत्रुनी सन्मुखगमन, वाहन, उपेक्षा अने आसन (ए युद्धनीतिना अंगो छे.)

पोताना लश्करना वे भागो करीने जे स्थापवा ते "द्वैध" कहेवाय छे, अने बीजा बलवान राजानो जे आश्रय लेवो तेने "संश्रय" कहेलो छे.

एवी रीतना छए गुणोने राजाए हमेशां चिंतववा, तथा समयने अनुसरी तेने विधिपूर्वक योग्य जगोए गोठववा.

कंइक पण लखाणपूर्वक परस्पर उपकारना नियमबंधननी जे व्यवस्था करवी तेने "संधि" कहे छे. ते संधि वे प्रकारनी छे. सत्यसंधि अने कपटनी संधि. कह्युं छे के, सत्यसंधि तेने कहीयें के, तेमां कहेली (या लखेली) बाबत प्रमाणे चालवुं, अने कपट संधि तेने कहीयें के, तेथी उलटुं चालवुं.

स्वार्थने माटे अथवा मित्रनेमाटे केटलीक सेना सहित किल्लामां रहेवुं, अने पोताना सैन्यना जे बे भागो करवा तेने "द्वैध" कहे छे. शत्रु तरफथी संकट आवती वेलाए सहाय

मेळववानी इच्छाथी, दुःखने दूर करवा माटे बीजा बळवान राजानी जे सहायता लेवी तेने " संश्रय " कहे छे.

हवे ते गुणोने अवसरोचित योग्य स्थानके जोडवा, ते देखाडे छे. राजाए आगामीकाळना शुभ फळनी प्राप्तिमाटे अल्प हानिने सहन करीने पण तुरत संधि करवी. वळी राजाए विचारवुं के, पोते जो बळवान मंत्रिआदिकथी युक्त होय, अने पोतानुं सामर्थ्य होय तो लडाइ करवी. शत्रुना लश्करने हठाववा माटे जो पोताने पुष्ट जाणे, तोज राजाए शत्रुनी सन्मुख जवुं. जो शत्रु बळवान अने दुर्धर्ष जणाय तो राजाए लश्करना बे भागो पाडीने ममताथी कील्लामां रहेवुं. वळी कदाच ते किल्लामां पण जो पोतानुं रक्षण थइ शके तेम न होय तो, बळवान अने धर्मिष्ट राजानो तुरत आश्रय लेवो. ते बळवान राजाप्रते पण जो शंका थाय तो, तेने पण तजवो, अने निःशंक थइने युद्धज करवुं. कह्युं छे के, " रणसंग्राममां जय थवाथी लक्ष्मी मळे छे, परन्तु मरवाथी देवांगना मळे छे, एम विचारि आ क्षणभंगुर कायाने सार्थक करवी."

हवे साम आदिक चारे उपायोनुं स्वरूप वर्णवे छे.

मिष्ट वचनोथी जे कार्योनी सिद्धि करवी, तेने " साम " कहे छे. दान देइने कार्यनी सिद्धि करवी ते "दाम" कहेवाय छे. शत्रुना अधिकारीओने फोडवा ते " भेद " कहेवाय छे. अने छेक वध करवो ते " दंड " कहेवाय छे. आ चारे उपायोनो अनुक्रम ध्यानमां राखवो. आदरसत्कारवाळां प्रीति भरेलां वचन आदिकथी शांत करवाना उपायने " साम " कहे छे. सुवर्ण, हाथी घोडा तथा रत्न आदिकना दानपूर्वक जे कार्यने साधवुं ते " दाम " कहेवाय छे. द्रव्य आदिकनो लोभ देखाडीने अथवा चतुराइभरेलां वचनोथी शत्रुना अमात्य आदिकोने फोडवा ते " भेद" कहेवाय छे. धनने हरवुं, तथा वध बंधन करवां, तेने " दंड " कहे छे.

हवे साम, दाम, अने भेदथी जो कार्यनी सिद्धि थाय तो युद्ध न करवुं,अने जो तेम न बने तो युद्ध करवुं,एवुं देखाडता थका कहेछे.

जो शत्रुओने साम, दाम, अने भेदथी जीती शकाय, तो राजाए कदापि पण युद्ध करवुं नहीं. युद्ध करवामां जय तो संदेहवाळो होय छे, माटे ते सामादिक उपायो होते छते, तेओने तजीने एकदम युद्ध करवुं नहीं.

हवे ते सामादिक त्रणे उपायोथी पण जो कार्यनी सिद्धि न थाय, तो तेणे शुं करवुं? ते हवे कहे छे.

पेहेलां तो राजाए शत्रुना पक्ष, व्यूह एटले युद्ध रचना, ते रचना संबंधि बुद्धिना भावो, अने आववा जवाना मार्गनी परीक्षा माटे मनोहर बुद्धिवाळा चतुर दूतने मोकलवो. ते दूते पण शत्रुपासे जइ प्रथम मधुरवाक्यथी बोलवुं, तथा पछी (अनुक्रमे) खाटां अने कडवां वचनो बोलवां. ते साथे ते दूते (शत्रु राजाना अने तेना कारभारीओना) आकारोथी, तेओना वचनोथी. तथा तेओनी चेष्टाओथी, तेओना मनना अभिप्रायोने जाणवा; तेम तेओनी बुद्धि, कळा, तथा आववा जवाना मार्गोनी पण बारीकीथी परीक्षा करवी, अने त्यारबाद तुरत पाछा वळीने मपवळी हकीकत ते दूते पोताना स्वामिने यथार्थ कही संभळाववी.

पछी दूत मारफत ज्यारे एम खबर मळे के, शत्रु लडवाने तैयार छे, त्यारे राजाए उत्तम मंत्रिओ साथे मळीने (युद्धमाटे) विचार करवो. त्यारबाद राजाए तेवी गोठवण करवी के, जेथी सेनानो घणो नाश न थाय, अने कोइक एवो नीतिनो मार्ग शोधवो के,जेथी शत्रु संतोष पामे. त्यारबाद कोइ पण इलाजथी ज्यारे शत्रु रणसंग्रामनो आग्रह न तजे, त्यारे परस्पर मुख्यता जोइने राजाए लडाइ माटे तैयार थवुं. बळवान राजानी साथे बळवानना आश्रयविना लडवुं नहीं, अने तेवी रीतना युद्धथी प्रायें करीने हमेशां जय थाय छे. पोताथी निर्बळ राजानी साथे

राजाए पोते सन्मुख जइ युद्ध करवुं नहीं, केमके, तेयाने जीतवाथी कंइ यश मलतो नथी, अने पराजय थवाथी उलटी लघुता थाय छे. (तेवा निर्बल राजाने जीतवामाटे सेनापतिने मोकलवो.)

हवे राजाए युद्धमाटे क्यारे प्रस्थन करवुं? ते कहे छे.

पोताना राज्यनी रक्षामाटे उत्तम प्रधानने, तथा (केटलीक) सेनाने राखीने, तथा पोताना संबंधिओने अत्यंत संतोषीने, वाहन, हथीआर तथा बखतर आदिकनी सामग्री करीने, अने शांतिकार्यसहित देवगुरुनी पूजा करीने, उत्तम मुहूर्त तथा उत्तम शुकन जोइने, कालादिकपर ध्यान राखीने मागसर आदिक सात मासनी अंदर राजाए युद्धमाटे प्रयाण करवुं. (अहीं मागसर आदिक सात मासो कहेवाथी युद्धमाटे चतुर्मासनो निषेध कर्यो. अने मुहूर्त तथा शकुन आदिकनो विचार तो निमित्तशास्त्रथी जाणी लेवो.) एवी रीते मंत्री, सामंत, उत्तम मित्रो निमित्तीआ, उत्तम वैद्यो, तथा भंडारी, आदिकथी युक्त थइने चतुरंगीसेनासहित, पगले पगले वेषधारी गुप्तपुरुषोथी वाकेफ थइने, आगल प्रयाण करता माणसोथी शोधन करावला मार्गे राजाए समतापूर्वक जवुं. आवता जता चाकरपर, तथा गूढ भक्तिवाला मित्रनो पण (ते समये) राजाए विश्वास करवो नहीं.

हवे चारे बाजुथी जो (शत्रु तरफनो) भय होय तो राजाए दंडव्यूहथी गमन करवुं, पाछलनी बाजुथी भय होय तो शकटव्यूहथी गमन करवुं. पार्श्वभागनी बाजुथी भय होय तो तार्क्ष्य अने शूकरव्यूहथी गमन करवुं. मुखना भागथी जो भय होय तो मकरव्यूहथी प्रयाण करवुं. अग्र भागमां जो भय होय तो राजाए सूचिव्यूहथी प्रयाण करवुं, तथा पछी जे बाजुनो भय होय, ते बाजुए लश्करने विस्तारवुं. हमेशां राजाए पद्मव्यूह रचीने निवास करवो. अने सेनापति, तथा लश्करी अमलदारोए

चारे तरफथी तेनी रक्षा करवी. अगाडीना जागमां लश्करी अमलदारे रहेवुं, वच्चे राजाए, तथा पाछलना जागमां सेनापतिए रहेवुं. बन्ने बाजुए हाथीउं, पछी घोडा, तथा पछी पाला एवी रीते दंडाकार व्यूह जाणवो. अगाडीना जागमां सूक्ष्म,तथा पाछलथी विस्तारवालो, तेने शकटव्यूह जाणवो. तेथी उलटो ते मकरव्यूह जाणवो. मोतीनी मालानी पेठे जोडाइने चालवुं, ते सूचीव्यूह जाणवो. वच्चे रहेला राजाने चारे बाजुथी वलयने आकारे वींटी लेवो, ते पद्मव्यूह जाणवो. एवी रीते अविछिन्न प्रयाणथी सीमाना अंतजागसुधी जइने राजाए पडाव नांखवो.

हवे ते लश्करनो पडाव क्यां नाखवो ? ते कहे छे.

ज्यां जलाशयो, तथा घास, तथा धान्य घणुं होय, अने उंची टेकरीउं सुलज होय तेवी जगोए राजाए लश्करनो पडाव नाखवो.

पछी शुं करवुं ? ते कहे छे.

पडाव नाख्यावाद जो हजु शत्रु न आवी पहोंच्यो होय, तो फरीने सेना मलनो अभिप्राय जाणवा माटे तेनी पासे पोतानो दूत मुकवो. तेम कर्यावाद शत्रु जो लडवामाटे तैयार थएलो जणाय, तो रणभूमिने साफ करवी, के जेथी सैन्यनी गति स्खलायमान थाय नहीं. जयने नहीं गणकारनारा एवा उत्तम पुरुषोथी अधिष्ठित थएला निपुण गुल्मोने संकेतसहित युद्धना स्थानमां राजाए राखवा. (नव हाथीउं, नव रथो, सत्तावीस घोडाउं, अने पस्तालीस पालाउं, एटली संख्यासहित रक्षण करनार सैन्यना समुदायने " गुल्म " कहे छे.) अने ते गुल्मे करेला शंख, जेरी तथा पटह आदिकना शब्दानुसारे, सेनानुं युद्धसमये अवस्थापना तथा अपसरण (पाछा हठवापणुं थाय छे.)

हवे युद्धसमये राजाए देव, गुरु तथा शस्त्रोने, पूजीने, शुज शुकनो लेइने, तथा सर्वथा प्रकारे योद्धाउंने संतोषीने, प्रयाणना

याजित्रोपर स्पृहा राखीने, बखतर पेहेरीने, राज्यचिन्होमंडित ज-यहस्तीपर चडवुं, तथा आसपास नजर नाखीने तपासवुं के, पोतानुं लश्कर कया व्यूहमां गोठवाएलुं छे? रणसंग्राममाटे पूर्व दिशा उत्तम छे, माटे सैन्यनुं मुख ते दिशातरफ राखवुं. वळी ते समये शत्रुना लश्करनो केवी रीते नाश थाय? ते विचारिने चक्र, सागर आदिकव्यूहनी रचनापूर्वक पोताना सैन्यने गोठववुं. युद्धसमये जेम बने तेम थोडाओने मारी घणासाथे लडवुं, अने ते समये बनतांसुधी वज्रव्यूह अथवा तो सूचिव्यूहथी लडवु.

हवे क्षेत्रविशेष तथा शस्त्रविशेष युद्धनुं स्वरूप कहे छे.

खाडा खबूचडाविनानी रणभूमिपर तलवार तथा भालां आदिक शस्त्रोथी लडवुं; (तेमां पण) विषमभूमिपर हाथीओथी लडवुं, तथा समभूमिपर घोडा अने रथोथी लडवुं. झाडीवाळी रणभूमिपर विशाल स्थाननो आश्रय लेइने बाणोथी लडवुं. ते विशाल स्थानमां उभती वखते हस्त प्रमाणथी बन्ने पगोने विस्तारवा.

हवे शूरताना अभिमानवाला, तथा बलवान योद्धाओने राजाए सैन्यना अगाडीना भागमां राखवा, अने तेओने वंदिओ मारफते वीररसपूर्वक उत्साह आपवो.

अग्नि आदिक मांत्रिक शस्त्रोने दूर करवामाटे राजाए वारुणादिक शस्त्रोनो उपयोग करवो. वळी राजाए ते योद्धाओना (रणसंग्राममाटे) हर्षितपणानी तथा खीनतापणानी परीक्षा करवी, तेम तेओनी चेष्टानी तथा तेओना विपरीतपणानी पण परीक्षा करवी. अत्यंत रुक्ष, झेर चडावेलां, तथा पत्थर अने माटी आदिकनां कूट हथीआरोथी अने अग्निथी तपावेलां हथीआरोथी पण राजाए लडवुं नहीं. सर्व प्रकारनां शस्त्रो अने वाहनोथी नीतिपूर्वक लडवुं अने शत्रु जो अनीतिथी लडे, तो पछी राजाए समयोचित करवुं. वळी तापस, ब्राह्मण, हथीआरवि-

नासो, बीकण, नाशतो, दुःखी थएलो, नपुंसक, नग्न, हाथ जोडी ऊभो रहेलो, नहीं लडतो, निद्रित थएलो, रोगथी पीडाएलो. शरणे आवेलो, मुखमां घास (तृण) धारण करनारो, अने घरे आवेलो एटला माणसोने राजाए मारवा नहीं. जे शत्रु राजा नहीं लडतां केवल किल्लामां नराइ वेसे, तेने घेरी लेवो, अने तेनी अंदर रहेला माणसोने धान्य तथा जलथी पीडवा. (एटले) बाहारथी तेमां जता धान्य अने जलनो अटकाव करवो.) पछी तेना किल्लाने तथा तेना तलावने तोडीने शत्रुने बलरहित करवो, तथा तेना सोबतीउंने मारवा. वली ते शत्रु राजाना मंत्रि आदिक सघला कारजारीउंने, तथा तेना कुटुंबीउंने (द्रव्यादिकनी लालचथी) पोताना पक्षमां लेवा, अने उत्तम मुहूर्त जोइने राजाए त्यां पोतानी आज्ञा प्रवर्तावबी. पछी देवगुरुनी पूजा करीने, तथा घणुं दान देइने, शत्रु राजाना पूर्वना सेवकोने अजयदान आपवुं. पछी सामान्यरीते सर्व कारजारीउंना मननी परीक्षा करीने ते शत्रु राजानो कोइ संबंधि, के जे पोतानी आज्ञा मानवामां तत्पर होय, तेने त्यां गादीपर बेसाडवो. वली ते नवीन राजाने इनाम आपी संतुष्ट करवो, तथा पछी सत्कारना लखतपूर्वक त्यां पोतानी आज्ञाने स्थीर करवी.

हवे जीत थयाबाद पराक्रमथी मेलवेलुं द्रव्य राजाए योद्धाउंने केवी रीते आपवुं? ते कहे छे.

जीत थयाबाद जे जे योद्धाए, धान्य, बकरां, गायो, तथा भेंसो आदिक जे कंइं (लुंटमां) मेलव्युं होय, ते ते वस्तुउं ते ते योद्धाने आपी देवी. वली जे सुजटोए पोताना पराक्रमथी रणसंग्राम वखते, रथो, घोडा, हाथी, अमूल्य रत्न, सुवर्ण, तथा स्त्रीउं मेलवेली होय, ते सघलुं तेउंए राजाने समर्पण करवुं. एवी रीतें पूर्वे कहेली रीतिप्रमाणे जय मेलवीने, तथा पोताना वलनो

विस्तार करीने, जीतना वाजित्रोना शब्दोथी दिशाउने वेहेरी करीने, हर्ष मंगलपूर्वक राजाए पोताना नगरमां प्रवेश करवो.

एवी रीते अहीं सामान्य प्रकारे युद्धनीतिनुं वर्णन कर्युं, तेनुं विशेष प्रकारनुं वर्णन बुद्धिवानोए महाशास्त्रथी (एटले बृहदर्हन्नीति नामना शास्त्रथी) जाणी लेवुं.

एवी रीते युद्धनीतिनुं प्रकरण समाप्त थयुं.

हवे अनुक्रमथी प्राप्त थएला दंडनीति प्रकरणनो प्रारंभ करे छे.

प्रणम्य परया भक्त्या, संभवं श्रुतसंभवम् ॥
प्रजानामुपकाराय, दंडनीतिः प्रवक्ष्यते ॥ १ ॥

अर्थ– उत्कृष्ट भक्तिथी श्री संभवनाथजी प्रभुने नमस्कार करीने, प्रजाना उपकारमाटे हवे दंडनीतिनुं स्वरूप कहे छे.

जैनशास्त्रोमां दंडनीति सात प्रकारनी कहेली छे. हाकार, माकार, धिकार, परिभाषण, बंधन, केदखानुं, अने अंगछेदन ए सात प्रकारनी दंड नीति छे. तेम वली नीति शास्त्रोना पारंगामीउए द्रव्य दंडने साथे लेइ आठ प्रकारनी पण कहेली छे. (परिभाषण एटले " नहीं जवुं " इत्यादिक वचनो आदेशथी कहेवां) स्थानांगसूत्रमां पण कह्युं छे के,

" सत्तविहादंडनीइ पणत्ता, तं जहा, हकारे ।१। मकारे । २ । धिकारे । ३ । परिभासे । ४ । मंडलीबंधे । ५ । कारागारे । ६ । छविछेदे अ । ७ ।

(अहीं छविछेद एटले उपलक्षणथी वधादिकने पण जाणी लेवुं)

एवी रीतनी दंडनीतिनो, अपराधीउना अपराधना प्रमाणमां राजाए उपयोग करवो.

हवे ते सात प्रकारनी दंडनीतिउमांथी पेहेली त्रण (एटले

हाकार, माकार, अने धिक्कार) नीतिओ पूर्वे श्री ऋषभदेव प्रभुनी वेळेथी युगलीआंओने काळना दोषथी क्रेरा करता जोइने कुलकरोए प्रवर्तावेली हती. अने बीजी दंडनीतिओ भरत महाराजथी चालेली छे. माटे एवी रीतें दंडनीति कालानुसारी छे, एवो निश्चय थाय छे. अने तेथीज उपलक्षणथी द्रव्यदंड, ज्ञातिदंड (एटले ज्ञातिबहार मेलवो) अने ताडनादंड आदिक नीतिओ ग्रहण कराय छे, अने ते सर्व दंडनीतिओने देश काळने अनुसरीने उपयोगमां लेवाथी साध्य वस्तुनी सिद्धि देनारी थाय छे. कह्युं छे के,

यथापराधं देशं च, कालं बलमथापि वा
व्ययं कर्म च वित्तं च, दंडं दंड्येषु पातयेत् ॥ १ ॥

अर्थ–जेवो अपराध, जेवो देश, जेवो काळ, जेवुं बळ, जेवुं खरच, जेवुं कार्य, अने जेवुं द्रव्य, तेने अनुसरीने अपराधिओने दंड करवो.

हवे त्यां ब्राह्मणने "माकारनो" दंड देवो, क्षत्रिय अने वैश्यने "हाकारनो" दंड देवो, तथा शूद्र मात्रोने "धिक्कारनो" दंड देवो, अने बाकीना दंडो चारे वर्णोने माटे छे.

हवे अहीं ते दंडनीतिनो अपवादमार्ग कहे छे.

स्त्री, ब्राह्मण, तथा तपस्वी जोके मोटो अपराध करे, तो पण राजाए तेओनां अंगो छेदवां नहीं, तेओनो वध करवो नहीं, तथा तेओने देशनिकाल करवां नहीं. (आ श्लोकनो वळी एवो पण अर्थ थई शके छे के, तेओनां अंगो छेदवां नहीं, तेम तेओनो वध करवो नहीं, पण तेओने देशनिकाल करवा.)

वैश्य थईने जो मांस वेचे, तथा जूटुं सुवर्ण वेचे, तो राजाए तेना उपांगनुं छेदन करी तेनो दंड करवो.

मनुष्यना मांसने हजार मासासने चोरली वैश्ने दंड करवो.

तथा गाय, हाथी अने उंट आदिक मोटां प्राणीओनो नाश करनार माणसने तेथी अरधो दंड करवो.

क्षुद्रप्राणीनो नाश करनार माणसने बसोनो (एटले ते समये ते राजमां चालता बसो सिक्काओनो) दंड करवो, हरिण अने पक्षिओनो विघात करनार माणसने पचासनो दंड करवो.

बकरा, गाडर, अने गधेडानो घात करनार माणसने पांच मासनी (एटले तेटली मुदत सुधीना केदखानानी) सजा करवी, कुतरा अने सूकरनो विनाश करनार माणसने बे मासनी सजा करवी.

ब्राह्मण जो अन्याय पशु लाय, तो तेने उत्तम दंड करवो. (उत्तम दंड कोने कहेवो ? तेनुं लक्षण आगळ जणावशे) क्षत्रिय जो अन्याय पशु लाय तो तेने मध्यम दंड करवो, वैश्य जो अन्याय पशु लाय तो तेने जघन्य दंड करवो, तथा शूद्र जो अन्याय पशु लाय तो तेने तेथीपण अरधो दंड करवो.

राजानो आक्रोश करनार, तथा तेनुं बुरुं बोलनार, राजदरबारनी (खानगी) वातोने प्रगट करनार, राज्यना खजानाने लुंटनार, तथा राजानी सामे थनार एटला माणसनी जीभ छेदीने तेने देशनिकाल करवा. तेम (वगर परवानगीए) राजानी [illegible] करनार माणसने उत्तम दंड देवो.

[illegible] [illegible] [illegible] कर्षकना डरथी, तथा राजा तरफथी [illegible] दंडना भयथी, जार पुरुषने पण (एटले पोतानी स्त्रीसाथे [illegible] [illegible] राखनार पुरुषने पण) जे " चोर " कहे तेवा पुरुषने पांचसोनो दंड करवो.

[illegible] [illegible]. धन उपार्जन करी, जे कारनारी चोरने अने जार पुरुषने (सजा नहीं करतां) छोडी मेले, ते कारनारीने [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] दंड करवो, तेम उत्तम दंड पण करवो.

[illegible] [illegible] माणसनो पांचसोनो दंड करवो, [illegible] [illegible]

होवा छतां ब्राह्मणनो वेष लेइ आजीविका चलावनारने आठ-सोनो दंड करवो.

पोते हार्या छतां पण अभिमानथी जे एम माने के, हुं जीत्यो छुं, ते माणसने राज्यद्वारमां लावीने बेवडो दंड करवो.

अन्यायथी करेला दंडथी प्राप्त थएला धननुं शुं करवुं ? ते कहे छे.

कोइ कारणसर राजाए जे जे अन्यायथी दंड करेलो होय, तो ते दंडथी प्राप्त करेला धनने त्रीशगणुं करीने शुभ मार्गे ते धन खरची नांखवुं.

हवे सजाना भेदो कहे छे.

पेट, उपस्थ, जीभ, हाथ, कान, द्रव्य, शरीर, पग, नासिका, अने चक्षु एवी रीते दश प्रकारनां दंडनां स्थानको छे.

शरीरना जे अवयवनो जे माणसे अपराध कर्यो होय, ते माणसने तेना शरीरना तेज अवयवनी सजा करवी.

हवे जे अपराधी माणस (दंड तरिकेनुं) द्रव्य आपवाने असमर्थ होय, ते माणसने केदखानामां पूरीने, तथा तेनीपासे पोतानुं कार्य करावीने राजाए तेने द्रव्य दंडथी मुक्त करवो.

हवे उत्तम दंडनुं स्वरूप कहे छे.

अपराधिनी सर्व मालमीलकतने हरी लेवी, अथवा तेनो वध करवो, अथवा तेने देशपार करवो, अथवा तेना अंगो छेदवां, अथवा तेने (डांभथी) अंकित करवो. ए सर्व सजाओनो उत्तम दंडमां समावेश थाय छे.

उंच जातिवालो जे माणस मदिरापान करे, तेने गधेडापर चडाववो, गुरुना आसनपर बेसनार माणसने गधेडे चडावी तेना हाथमां पताका आपवी, चोरी करनारने केदखानानी सजा करवी, अने ब्रह्महत्या करनार माणसने शिरमुंडन करावी गधे-

कता छे. हवे ते लौकिकव्यवहार बे प्रकारनो छे. एक संदेहात्मक अने बीजो तत्वात्मक. तेर्डमां पेहेलो संदेहात्मक सत्संगथी जणाय छे. अने तत्वात्मक चिन्हथी जणाय छे. वळी ते विध्यात्मक अने निषेधात्मक एम बे प्रकारनो छे. जेमके, आ मारुं क्षेत्र खेड् जाय छे, ते विध्यात्मक छे. तथा आ मारी पासेथी रुपीआ लेइने आपतो नथी, ते प्रतिषेधात्मक छे.

जे न्याय करवाने इछतो नथी, अने अन्याय करे छे, एवो व्यवहारने लुप्त करनारो माणस नरके जाय छे, तेमां कंइ पण संशय नथी. हवे ते न्याय नीचेप्रमाणे अढार नेदोवालो छे. करज करवुं, अने करज देवुं ॥ १ ॥ घणाउेए एकगा थइ कार्य करवुं, ॥ २ ॥ देवायोग्यनो विधि ॥ ३ ॥ दायजाग ॥ ४ ॥ सीमाडानो विवाद ॥ ५ ॥ वेतनादान ॥ ६ ॥ क्रयविक्रयनो संताप ॥ ७ ॥ शेठ चाकरवच्चेनो विवाद ॥ ८ ॥ मेलवेली वस्तुनी कोइ उत्तम माणसपासे थापण राखवी ॥ ए ॥ शेठनी गेरहाजरीमां तेनी वस्तुने वेचवी ॥ १० ॥ वचननुं काठिन्यपणुं ॥ ११ ॥ मर्यादानो व्यतिक्रम करवो ॥ १२ ॥ परस्त्रीनुं ग्रहण करवुं. ॥ १३ ॥ जुगार १४ ॥ चोरी ॥ १५ ॥ साहसपणुं ॥ १६ ॥ दंडसंबंधि कठिनता ॥ १७ ॥ अने स्त्रीपुरुषोवच्चेनो व्यवहार ॥ १८ ॥ ए अढार प्रकारनो न्याय होय छे. वळी मनुष्योनी क्रियार्जना नेदथी तेना एकसो आठ नेदो पण थाय छे. जेमके, घणा वादिर्जने घणा प्रतिवादिर्जसाथे विरोध होय, घणा वादिर्जने एक प्रतिवादिसाथे विरोध होय, एक वादिने घणा प्रतिवादिर्जसाथे विरोध होय, एक वादिने एकज प्रतिवादि साथे विरोध होय. एवी रीते उपर कहेला अढार प्रकारोने चार गुणवाथी तेना बावन नेदो थाय छे.

हवे वादनो निर्णय केवी रीते करवो? तेना आठ भेदो कहे छे.

जेमके, आ माणसे मारा आटला रुपीआ अमुक व्याजथी चार मासनी वंधीए लीधा हता, हवे ते मुदत पूरी थयाबाद में ते लेनार माणसपासेथी माग्या, पण ते आपतो नथी, अने उलटो लडवाने तैयार थयो छे, माटे मारी एटली अरजी सांजलीने, अने तेनो निर्णय करीने मारुं द्रव्य ते करजदारपासेथी अपाववुं. आ बाबतने " प्रतिज्ञा " ॥ १ ॥ कहे छे.

हवे एवी रीतना वादीए कहेला साधनने बाधा करनारुं प्रतिवादीनुं जे वचन ते तेनो " उत्तर " ॥ २ ॥ कहेवाय छे.

एवी रीते वादि प्रतिवादि बन्नेनुं वचन सांजलीने, आनुं कहेवुं सत्य होशे? के आनुं कहेवुं सत्य हशे? एवी रीते न्यायाधीशनुं मन जे दोलाय छे, तेने " संशय " कहे छे. (एक धर्मवाली वस्तुमां, विरुद्ध एवा नानाप्रकारना धर्मोनुं जे ज्ञान थवुं, तेने " संशय " कहे छे.)

वादि प्रतिवादिए कहेला साधन अने दूषणने समर्थ करनारुं जे कारण तेने " हेतु ॥ ४ ॥ कहे छे.

बन्ने हेतुउंमां कयो हेतु कोनो साधक छे? एवी रीतना विचारने " परामर्श " ॥ ५ ॥ कहे छे.

साक्षि आदिकोथी जेना वचननी यथार्थपणानी खातरी थाय, तेने " प्रमाण " ॥ ६ ॥ कहे छे.

वारंवार मंत्रिउं अने सजासदोनीसाथे मलीने सघला लेखादिकोने आद्यथी ते अंतसुधि वांचीने, तथा सांजलीने, बन्नेना जय, पराजयसंबंधि सर्वेनी सम्मतिपूर्वक उत्तर आपवो तेने " निर्णय " ॥ ७ ॥ कहे छे.

४

हवे ते निर्णयने अनुसारे न्यायाधीश बन्नेने जे हुकम फरमावे ते " फेसलो " ॥ ८ ॥ कहेवाय छे.

एवी रीते आठ प्रकारे वादनो निर्णय करवो.

हवे ते वादसमये केवी रीते व्यवहार चलाववो ? कहे छे.

राजाए सभानी अंदर संवेगभावने धारण करीने, निस्पृही थइने, तथा सभासदोनी सम्मति लेइने राज्यकार्य करवुं. वली जो राजाने अक्षय सुखनी इच्छा होय तो तेणे ते समये सभाभावमां रहीने कोइना वचनने पण मानवुं नहीं, फक्त न्यायपर दृष्टि राखवी.

एवी रीते राजा ज्यारे राज्यकार्यमां गुंथाया होय, त्यारे जो कोइ अरजदार आवे, तो ते वखते कारभारीए ते अरजदारपासेथी अरजीनो पत्र लेइने मंत्रिने आपवो. पछी मंत्रिए ते अरजीमाटे राजाने निवेदन करीने, तेनी पहेलांना केसो खलास थयाबाद ते अरजीपत्रपर आज्ञा लखवी.

हवे मुकरदमानी योग्यता तथा अयोग्यतानुं वर्णन करे छे.

मुकरदमानी अरजी सार्थक, सघला अर्थे करीने युक्त, साध्य धर्मवाली, प्रगट रीते समजाय तेवी, संक्षेपमां लखेली, उत्तम वाक्यरचनावाली, वादी अने प्रतिवादीना नामवाली, साध्य प्रमाणनी संख्यावाली, अने देश तथा राजाना नामें करीने युक्त, एवी रीतनी राजापासे आवेली अरजी योग्य गणाय छे. (उपर कहेली अरजीनी रीति जंगम मुकरदमाना विषयनी छे.) स्थावर मुकरदमानी अरजीमां देशनुं नाम, स्थाननुं नाम, पोतानी जातिनुं नाम, पोताना रहेठाणनुं नाम, प्रमाण, पोताना बाप दादानुं नाम, तथा पोताना मोटा भाइउं आदिकनुं नाम पण होवुं जोइए. तेम वली स्थावर मिल्कतना मुकरदमानी अरजीमां रा-

जानी मदोरछाप होवी जोइए, अने तेवी रीतनी जो मोहोरछाप (स्टांप) न होय तो न्यायाधीशे ते अरजी मांजरवी नहीं. हवे तेमां दाखलातरीके देश एटले "मध्यदेश, अथवा द्रविड देश, के बंगादिक देश" स्थान एटले "वाराणसी" आदिक, जाति एटले "क्षत्रियादिक" स्थेगाण एटले नगरीनो पूर्व, पश्चिम, उत्तर के दक्षिणभाग, प्रमाण एटले "दश रज्जु लांबुं पहोळुं क्षेत्र" बापदादानुं नाम एटले "देवदत्त, ब्रह्मदत्त" इत्यादि, क्षेत्र एटले यवनुं क्षेत्र अथवा शालिनुं (चाननुं क्षेत्र). एवी रीतिथी लखेली अरजी न्यायाधीशे मांजरवी, पण तेथी विपरीत रीते लखेली अरजी सांजरवी नहीं.

न्यायाधीशे नीचे लखेली रीतिवाळा मुकरदमानी अरजीने तजवी. असाध्य, अप्रसिद्ध, विरुद्ध, प्रयोजनविनानी एटले निरर्थक, अने कोइने बाधा न पहोंचे तेवा मुकरदमानी, अरजी-ओने पद्याजाम करसी जाणीने तजवी.

जेमके आ माणस मारी तरफ जोइने मुंझयो, ए असाध्य छे. माटे तेवा मुकरदमानी अरजी ग्रहण करवी नहीं. मारा घरमां रहेलुं आकाशपुष्प लेइने आ माणस चाल्यो गयो, हुं ते आ-काशपुष्प तेनीपासेथी पाछुं मागुंछुं पण ते आपतो नथी, ए "अप्रसिद्ध" वात छे, माटे तेवा मुकरदमानी अरजी पण स्वीकारवी नहीं.

आ माणसे मने श्राप आप्यो, ए "विरुद्ध" छे माटे ते-वा मुकरदमानी अरजी पण सांजरवी नहीं.

मारा पिताए पूर्वे आ माणसनो अधिकार बताव्यो छे, अने हवे ते अधिकार ते माणस मने आपतो नथी, ए "निरर्थक" छे, माटे तेवी अरजी पण न्यायाधीशे ग्रहण करवी नहीं.

मारा घरमां बळता दीवाना प्रकाशथी आ माणस पोताना घरनुं कार्य करे छे, ए "निराबाध" एटले कोइने बाधा कर-

नार्ह मथी, माटे तेवा मुकरदमानी अरजीपर पण न्यायाधीशे ध्यान आपवुं नहीं.

• हवे अनेक प्रकारना मुकरदमाओथी जरेली एकज अरजी न्यायाधीशे स्वीकारवी नहीं, पण प्रत्येक मुकरदमानी जुदी जुदी अरजी स्वीकारवी, ते माटे कहे छे.

जुदी जुदी क्रियाओवाली अने अनेक विषयोथी गर्जित थएली एकज अरजी स्विकारवी नहीं, (पण तेमां अपवाद एटलो के, बहार गामना रहेवासी एवा कोइ खेतीकार आदिक अरजदारनी तेवी अरजी पण स्वीकारवी. केमके, जो तेम करवामां न आवे, तो तेवा अरजदारने घणी अयकामणी थवाथी तेना कार्यनो अतिपात थवा संजव छे.) वली न्यायाधीशोए दरेक मुकरदमानी तुरत साक्षिओ लेइने जेम बने तेम जलदिथी फेंसलो आपवो.

वादीए अरजी कर्याबाद प्रतिवादी जो दूरना गाममां होय तो, राजाए पोतानी मोहोरछापसहित प्रतिवादीने बोलाववा माटेनो समन तुरत दूतद्वाराए पहोंचाडवो, अने जेम बने तेम तुरत हाजर थवानी फरज पाडवी.

(तेमां पण अपवाद एटलो के, अशक्त, स्थविर, (बुढा) बालक, कुलीन स्त्री, राज्यकार्यमां गुंथाएला माणसो, धर्मक्रियामां जोमाएला, जेओने जूत या पिशाच वलगेलो छे तेवा, अने वातपित्तादिकना रोगवाला, एवा माणसोने देशकालने अनुसारे वाहन आदिकना साधनथी तेओने जेम दुःख न थाय, तेम तेओनी सगवडप्रमाणे, पण जेम बने तेम तुरत बोलाववा.)

एवी रीते दूतमारफते प्रतिवादीने बोलाव्याबाद, ते प्रतिवादिना, पिता, जाइ, पुत्र, पौत्र, के चाकरने ते मुकरदमाना संबंधमां कंइ बोलवानो हक छे के नहीं ? ते कहे छे.

मुकरदमो चालती वखते प्रतिवादीना उपर कहेला कोइपण

संबंधिने घघमां बोलवानो हक नथी, अने तें छतां जो तेउंमानो कोइ बोले, तो न्यायाधीशे तुरत तेनो दंड करवो.

(तेमां पण अपवाद एटलो के, ते प्रतिवादी जो हाजर थइ शके तेम न होय, अने पोतानो पूर्ण अधिकार तेणे जो उपर कहेला कोइपण संबंधिने आपेलो होय, तो ते संबंधि मुकरदमाना संबंधमां जुवानी आपी शके छे, एवुं न्यायनुं बंधारण छे.)

हवे न्यायाधीशे प्रतिवादीपासेथी उत्तर मेलववामाटे वादीए करेली अरजीनो लेख प्रतिवादिने देखाडवो, अने तेमां रहेलो अभिप्राय तेने समजाववो. तेम ते अरजीपत्रमां रहेला वादीने लगता कुल, जाति, उमर, वर्ष, मास, पक्ष, अने दिवस विगेरे सर्व बाबतोनी न्यायाधीशे प्रतिवादीने समज पाडवी. पछी ते प्रतिवादी ते अरजीने सारी रीते वांचीने, जो तेनी तपास करवामाटे मुदत मागे, तो तेने न्यायाधीशे योग्य मुदत आपवी.

तेमां पण जो मुकरदमो करजसंबंधि होय तो वधारेमां वधारे त्रण दिवससुधिनी मुदत आपवी, अने मुकरदमामां जो घणा साक्षी आदिकनी जरूर होय तो छेवट एक पखवाडीआनी मुदत आपवी, पण तेथी वधारे मुदत आपवी नहीं.

(अपवाद एटलो के, मुकरदमो जो गायना वधसंबंधि, मारामारीनो, चोरीनो, वचनपारुष्यनो, साहसनो, फेर आपवा संबंधि, शस्त्राघात संबंधि अने स्त्रीना संबंधनो होय तो तेनी बिलकुल मुदत आपवी नहीं, अर्थात् तेनो उत्तर तुरत लेवो. केमके, जो तेम करवामां न आवे तो जुठ्ठा साक्षी आदिकथी न्यायने बदले अन्याय थवानो संभव छे.)

ज्यांसुधी प्रतिवादितरफथी उत्तर न मले त्यांसुधीज वादीने पोतानी अरजीमां फेरफार करवानो हक छे, पण प्रतिवादीतरफथी उत्तर मल्याबाद वादीथी तेमां फेरफार करी शकायज

नारुं मथी, माटे तेवा मुकरदमानी अरजीपर पण न्यायाधीशे ध्यान आपवुं नहीं.

· हवे अनेक प्रकारना मुकरदमाउंथी जरेली एकज अरजी न्यायाधीशे स्वीकारवी नहीं, पण प्रत्येक मुकरदमानी जुदी जुदी अरजी स्वीकारवी, ते माटे कहे ले.

जुदी जुदी क्रियाउंवाली अने अनेक विषयोथी गर्जित थएली एकज अरजी स्विकारवी नहीं, (पण तेमां अपवाद एटलो के, वहार गामना रहेवासी एवा कोइ खेतीकार आदिक अरजदारनी तेवी अरजी पण स्वीकारवी. केमके, जो तेम करवामां न आवे, तो तेवा अरजदारने घणी अथमामणी थवाथी तेना कार्यनो अतिपात थवा संजव ले.) वली न्यायाधीशोए दरेक मुकरदमानी तुरत साक्षिउं लेइने जेम बने तेम जलदिथी फेंसलो आपवो.

वादीए अरजी कर्याबाद प्रतिवादी जो दूरना गाममां होय तो, राजाए पोतानी मोहोरछापसहित प्रतिवादीने बोलाववा माटेनो समन तुरत दूतद्वाराए पहोंचाडवो, अने जेम बने तेम तुरत हाजर थवानी फरज पाडवी.

(तेमां पण अपवाद एटलो के, अशक्त, स्थविर, (बुढा) वालक, कुलीन स्त्री, राज्यकार्यमां गुंथाएला माणसो, धर्मक्रियामां जोमाएला, जेउंने जूत या पिशाच वलगेलो ले तेवा, अने वातपित्तादिकना रोगवाला, एवा माणसोने देशकालने अनुसारे वाहन आदिकना साधनथी तेउंने जेम दुःख न थाय, तेम तेउंनी सगवडप्रमाणे, पण जेम बने तेम तुरत बोलाववा.)

एवी रीते दूतमारफते प्रतिवादीने बोलाव्याबाद, ते प्रतिवादिना, पिता, जाइ, पुत्र, पौत्र, के चाकरने ते मुकरदमाना संबंधमां कंइ बोलवानो हक ले के नहीं ? ते कहे ले.

मुकरदमो चालती वखते प्रतिवादीना उपर कहेला कोइपण

मागती रकमथी जुदीज रीते उत्तर आपवो ते) "अल्पत्व" (एटले घणुंज थोडुं) "अतिज्वरि" (एटले हदथी वधारे) "पक्षैकदेशव्याप्त" (एटले वादीए लेणी कहाडेली वस्तुनो अमुक भाग.)

जेम के, वादी कहे के, आ माणसे मारीपासेथी एकसो सोनामोहोरो लीधी छे. त्यारे प्रतिवादी कहे के, खरेखर मारे एकसोनी रकमतो तेने देवानी छे; पण ते एकसो सोनामोहोरो छे के, एकसो रुपामोहोरो छे, तेनी मने मालुम नथी. एवी रीतना प्रतिवादिना उत्तरने "संदिग्धउत्तर" (एटले संदेहवालो उत्तर) जाणवो.

ते मारी पासे एकसो सोनामोहोरो मागे छे, पण हुं तेने एकसो रुपामोहोरो आपीश. एवी रीतना प्रतिवादीना उत्तरने "प्रकृताद्भिन्न" (एटले मागती रकमथी जुदीज रीतनो उत्तर जाणवो.)

ते मारीपासे एकसो सोनामोहोरो मागे छे, पण तेने बदले हुं पांचज सोनामोहोरो आपीश. एवी रीतना प्रतिवादिना उत्तरने "अल्पत्व" (एटले घणीज थोडी रकमवालो उत्तर) जाणवो.

ते मारीपासे एकसो सोनामोहोरो मागे छे, पण हुं तेने बदले तेने एक हजार सोनामोहोरो आपीश. एवी रीतना प्रतिवादिना उत्तरने "अतिज्वरि" (एटले हदथी वधारे रकमवालो उत्तर) जाणवो.

वादी कहे के, में आ माणसने आभूषणो अने वस्त्रो दश आप्यां छे, त्यारे प्रतिवादी कहेशे के, में वस्त्रो तो लीधां छे, पण आभूषणो लीधां नथी; एवी रीतना प्रतिवादिना उत्तरने "पक्षैकदेशव्याप्त" (एटले वादीए लेणी कहाडेली वस्तुना अमुक भागवालो उत्तर जाणवो.

नहीं; माटे वादीनी अरजीपर ध्यान राखी न्यायथी चुकादो न्यायाधीशे आपवो.

प्रतिवादी पण ज्यारे उत्तर आपी रहे, अने त्यारबाद तेमां जो फेरफार करवानुं कहे, तो ते न्यायाधीशे स्वीकारवुं नहीं.

साक्षीमानो जो कोइ माणस रागथी, द्वेषथी, अथवा लो-भथी जूठी साक्षी आपे, तो ते साक्षीनो राजाए दंड करवो.

हवे प्रतिवादीए आपेलो उत्तर बे प्रकारनो होय छे, एक " श्राव्य " एटले न्यायाधीशे सांभळवालायक, अने बीजो " अश्राव्य " एटले न्यायाधीशे नहीं सांभळवालायक.

वादीनी अरजी जोइने तुरतज प्रतिवादीने उत्तर आपे, ते उत्तरने सांभळवालायक जाणवो.

हवे ते सांभळवालायक उत्तर चार प्रकारनो होय छे; सत्य, प्रतिज्ञ, व्यापक, अने असंदिग्ध.

जेम के, वादी कहे के, हुं आनीपासे सो सोनामोहोरो मागुं छुं, एम कहेतांज प्रतिवादी कहे के, खरेखर मारीपासे ते सो सोनामोहोरो मागे छे. ए उत्तरने " सत्य उत्तर " जाणवो.

वादिनी अरजी जोइने तेनाथी विरुद्ध बाबतनो प्रतिवादी जे प्रतिपादन करे, तेने " प्रतिज्ञ उत्तर " जाणवो.

देश, गाम आदिकना नामे करीने युक्त एवा उत्तरने " व्यापक " जाणवो.

वादीनी अरजी जोइने प्रतिवादी एम कहे के, खरेखर तेटली सोनामोहोरो ते मारीपासे मागे छे, पण में तेना (बदलामां) तेनुं आटलुं कार्य करी आप्युं छे, ते उत्तरने " असंदिग्ध उत्तर " जाणवो.

एवी रीते सांभळवालायक उत्तरना चार भेदो जाणवा.

हवे नहींसांभळवा लायक उत्तरनां पांच भेदो कहे छे. " संदिग्ध " (एटले संदेहवाळो) " प्रकृताद्भिन्न " (एटले

फरीने अधिकारीए ते सघळो लेख प्रतिवादीने वंचाववो. अने प्रतिवादिए पण ते लेख वांचीने तेनो प्रत्युत्तर लखवो. तेमां जो तेना मुद्दा सत्य होय तो ते सिद्ध थाय छे; नहींतर असिद्ध थाय छे. पछी अधिकारीए ते चारे पत्रोने न्यायाधीशपासे मेलवा. त्यारबाद न्यायाधीशे सभासदोनी साथे तेनुं विवेचन करवुं, अने साक्षी आदिकोनी जुबानी लेवी.

हवे ते समये सभासदो केवा जोइयें ? ते कहे छे.

शत्रु अने मित्र बन्नेपर तुल्य दृष्टि राखनारा, शांत स्वभाववाळा, जरापण लालच विनाना, सत्य बोलनारा, शास्त्रोना अभ्यासथी शुक्र थएला, परलोकनो जय राखनारा, क्रोधविनाना, आलस रहित, धर्मने जाणनारा, चतुर, एवा पांच अथवा सात सभासदो राजाए राखवा.

हवे ते सभासदो लोभादिकना हेतुथी छलटुं कार्य करवा मांगे, तो तेओनो राजाए दंड करवो. कह्युं छे के, राजाना कारभारीओ लोभथी, द्वेषथी, तथा ईर्षाथी जो अकार्य करे, तो तेओनो राजाए दंड करवो.

पछी ते वादि अने प्रतिवादि बन्नेने पोतपोताना साक्षीओना नामोसहित राजापासे लाववा.

हवे ते साक्षिओ केवा होवा जोइए ? ते कहे छे.

लांच नहीं लेनारा, शुद्ध कुळमां उत्पन्न थएला देश कालना विचारने जाणनारा, जूठुं नहीं बोलनारा तथा प्रतिज्ञा पालनारा एवा ते गामना अगर अन्य गामना साक्षिओ होवा जोइए.

साक्षिओने तेओना पोतपोताना धर्मनी प्रतिज्ञा आपीने, तेओनी साक्षी नोंधवी. दरेक साक्षिओनी साक्षी लेती वेलाए बीजा साक्षिओने दूर राखवा. कह्युं छे के, मुकरदमामां बोलावेला सा-

एवी रीते पांच प्रकारे प्रतिवादीए कहेला अथवा लखेला उत्तरने न्यायाधीशे सांभळवो नहीं.

हवे एवी रीते प्रतिवादीनो उत्तर लीधाबाद न्यायाधीशे फरीने ते उत्तर वादीने वंचाववो. अने तेना संबंधमां पाछो वादीपासेथी प्रत्युत्तर मागवो.

पछी ते उत्तरने जोइने फरीने वादी, करजदारना उत्तरने नष्ट करनारो जो व्याजबी उत्तर आपे, तो ते उत्तर वादीने लाभकारक थाय छे.

वादीए प्रतिज्ञा करतीवखते पूर्वे जे लख्युं होय, तेवीज रीतना विस्तारपूर्वक प्रतिवादिए कहेला उत्तर वखते पण फरीने लखवुं; अने जो तेम करवामां न आवे तो, पूर्वापरना विरूद्धपणाथी प्रतिज्ञानो भंग तथा पक्षनी हीनता थाय छे.

हवे ते पक्षनी हीनता पांच प्रकारनी छे, ते कहे छे.

"निरुत्तर" (एटले उत्तर नहीं आपवो ते) ॥ १ ॥ "क्रियाद्दिष्ट" (एटले उलटी रीते लखनार) ॥ २ ॥ "नोपस्थाता" (एटले चालती वखतथी पलायमान थवुं ते)॥३॥ "अन्यदुत्तर" (एटले उलटी रीते उत्तर आपवो ते) ॥ ४ ॥ "आहूत प्रपलायन" (एटले बोलाव्याथी नाशी जवुं.)॥५॥

हवे ते पांचे प्रकारनी हीनतानो विस्तारथी अर्थ कहे छे. पूछतां छतां कंइपण जे उत्तर न आपे, ते "निरुत्तर" कहेवाय छे. लखवानी कळानी चतुराइथी उलटी रीते लखनारो "क्रियाद्दिष्ट" कहेवाय छे. उत्तर पूछवाथी चालती वखतथी जे पलायमान थाय ते "नोपस्थाता" कहेवाय छे. पूछवाथी जे आडा अवळा जवाबो आपे, ते "अन्यदुत्तर" कहेवाय छे. बोलाव्याथी जे नाशी जाय ते "आहूतप्रपलायन" कहेवाय छे.

फरीने अधिकारीए ते सघलो लेख प्रतिवादीने वंचाववो. अने प्रतिवादिए पण ते लेख वांचीने तेनो प्रत्युत्तर लखवो. तेमां जो तेना मुद्दा सत्य होय तो ते सिद्ध थाय छे; नहींतर असिद्ध थाय छे. पछी अधिकारीए ते चारे पत्रोने न्यायाधीशपासे मेलवा. त्यारबाद न्यायाधीशे सन्नासदोनी साथे तेनुं विवेचन करवुं, अने साक्षी आदिकोनी जुबानी लेवी.

हवे ते समये सन्नासदो केवा जोइयें ? ते कहे छे.

शत्रु अने मित्र बन्नेपर तुल्य दृष्टि राखनारा, शांत स्वन्नाववाला, जरापण लालच विनाना, सत्य बोलनारा, शास्त्रोना अन्न्यासथी युक्त थएला, परलोकनो जय राखनारा, क्रोधविनाना, आलस रहित, धर्मने जाणनारा, चतुर, एवा पांच अथवा सात सन्नासदो राजाए राखवा.

हवे ते सन्नासदो लोन्नादिकना हेतुथी उलटुं कार्य करवा मागे, तो तेउनो राजाए दंड करवो. कह्युं छे के, राजाना कारन्नारीउ लोन्नथी, द्वेषथी, तथा ईर्षाथी जो अकार्य करे, तो तेउनो राजाए दंड करवो.

पछी ते वादि अने प्रतिवादि बन्नेने पोतपोताना साक्षीउना नामोसहित राजापासे लाववा.

हवे ते साक्षिउ केवा होवा जोइए ? ते कहे छे.

लांच नहीं लेनारा, शुद्ध कुलमां उत्पन्न थएला देश कालना विचारने जाणनारा, जूठुं नहीं बोलनारा तथा प्रतिज्ञा पालनारा एवा ते गामना अगर अन्य गामना साक्षिउ होवा जोइए.

साक्षिउने तेउना पोतपोताना धर्मनी प्रतिज्ञा आपीने, तेउनी साक्षी नोंधवी. दरेक साक्षिउनी साक्षी लेती वेलाए बीजा साक्षिउने दूर राखवा. कह्युं छे के, मुकरदमामां बोलावेला सा-

क्षिर्उने जूदे जूदे स्थानके राखवा, अने एक बीजानी जुबानीर्उ न सांजली शके तेवी रीते तेर्उनी जुबानीर्उ लेवी.

वली साक्षी लेती वेलाए ब्राह्मणने तेनी यज्ञोपवीतना (एटले जनोइना) सोगन आपवा, क्षत्रियने तेनी तलवारना सोगन आपवा, वैश्यने गाय, देव, अने ब्राह्मणना सोगन आपवा, अने शूद्रोने पापोना सोगन आपवा.

पापो कयां कयां? ते हवे कहे छे.

जे साक्षी जुठुं बोले, तेर्उने स्त्रीहत्या, बालहत्या, तथा गर्जहत्या, विगेरेनुं पाप थाय छे.

वली असत्य बोलवाथी, दान, पूजा आदिकथी उत्पन्न थएलुं पुण्य नष्ट थाय छे, एम विचारि मुकरदमामां साक्षिर्उए सत्य वात कहेवी.

हवे केवा साक्षिर्उ मान्य गणाय छे? ते कहे छे.

यथार्थ बोलनारा, लोजविनाना, क्षमारूपी धर्ममां तत्पर, मोहरहित, जयविनाना, दान देनारा, एवा साक्षिर्उने माननीक कहेला छे.

हवे केवा साक्षीर्उ अमाननीक होय छे? ते कहे छे.

लोजी, गद्गद्वाणी बोलनारो, डुष्ट, बोलतां बोलतां जे अचकाइ जाय तेवो, विरुद्ध जाषण करनारो, क्रोध करनारो, साते व्यसनो सेवनारो, अथवा तेमाना एक पण व्यसनने सेवनारो, एटला साक्षिर्उने अमाननीक कहेला छे.

राजाए पेहेलां वादीना साक्षिर्उनी जुबानी लेवी. अने त्यार-

ोगद प्रगट रीते प्रतिवादीना साक्षिर्उनी जुबानी लेवी.

वाय गदीना साक्षिर्उए साक्षी आप्याबाद, मुकरदमाने खुलो क-

" क्रिय. प्रतिवादिना साक्षिर्उ जो जूठी साक्षी पूरे, तो ते वखते

जे चलाय" शुं करवुं? ते हवे कहे छे.

जे आडा अ-नो कोइ चाकर, मित्र, संबंधि, कुटुंबी, करजदार, बोलाव्याथी जे विगेरे जो पक्षपात राखीने जूठी साक्षी आपे,

तो न्यायाधीशे, तेउं दरेकने दंडवा. (वादीना साक्षिउंना संबंधमां पण उपलीज हकीकत जाणवी.)

हवे बन्नेना साक्षिउं लीधाबाद शुं करवुं ? ते कहे छे.

न्यायाधीशे बन्नेना साक्षिउंना लेखो वांचीने, तेउं बन्नेमांथी कोनुं वाक्य प्रमाण (एटले सत्य) छे ? ते माटे सजासदोनो अन्निप्राय मागवो.

जो वादी पोताना साक्षी आदिकोथी पोतानो पक्ष साबित न करे, तो तेने दंडवो. कह्युं छे के,

न शक्नोति नियोगं स्व-मर्थी साक्ष्यादिहेतुन्निः ॥
समर्थयितुमेषः स्या-द्राज्यदंडश्च मत्युतः ॥ १ ॥

अर्थ– जो वादी साक्षी आदिकना पुरावाउथी पोतानो पक्ष सावीत करी न शके, तो (राजाए) उलटो तेनो दंड करवो.

जूठो मुकरदमो दाखल करी पोताना पक्षमाटे वादी जो हक ले, ता न्यायाधीशे तेनो बेवडो दंड करवो.

जो साक्षिउं जूठी साक्षी न्नरे तो शुं करवुं ? ते कहे छे.

वादीना साक्षिउं जो राजापासे असत्य बोले, तो तेउं दरेकने तेउंनी शक्तिमुजब रुपामोहोरोनो दंड करवो.

प्रतिवादीना साक्षिउं जो असत्य साक्षी आपे, तो करजदार एवा प्रतिवादीनुं जे करज होय, ते करज ते साक्षिउंपासेथीज वसुल लेवुं. अने ते देवाने जो तेउं समर्थ न होय, तो तेउंने बीजी शिक्षा करवी.

कोइक साक्षी मुकरदमाना स्वरूपने जाणतां छतां पण कदाच मुंगो रहे तो शुं करवुं ? ते कहे छे.

जे साक्षी खरा अने खोटा न्यायोने जाणतां छतां पण, बोले नहीं, तेने जूठो साक्षी जाणीने राजाए तेनो एकसो रुपीआनो दंड करवो.

बन्नेना साक्षिर्ड ज्यारे असत्य बोले त्यारे राजाए शुं करवुं ? ते कहे छे.

ज्यारे बन्नेना साक्षिर्ड जूग पडे, त्यारे राजाए बीजा गुणवान साक्षिर्डने पोते बोलावीने निर्णय करवो.

मुकरदमामां जो ब्राह्मण, क्षत्रिय अथवा वैश्य जूनुं बोले, तो तेर्डनो दंड करीने तेर्डने नगरबहार कढाडी मेलवा, अने शूद्रने साक्षिमाटे अयोग्यज कहेलो छे.

बीजा साक्षिर्ड न मली शके, तो राजाए शुं करवुं ? ते कहे छे.

वादी अने प्रतिवादी बन्नेनी अनुमती लेइने, एकज धर्मनिष्ठ साक्षी करवो, अने ते साक्षी, शुद्ध, गुणवान्, सत्य बोलनारो, तथा समतावंत होवो जोइए.

हवे अहीं कोइ शंका करे के, मीमाडा आदिकना मुकरदमार्डमां तो राजा पोते करेला साक्षिर्डथी निर्णय करी शके, पण बीजा लेवडदेवड आदिकना मुकरदमार्डमां, जो साक्षी न मली शके, तेम कंइ लेखपत्र पण न मली शके तो राजाए केवी रीते फेसलो आपवो ? ते हवे कहे छे.

(तेवा [illegible] ं) वादी अने प्रतिवादी बन्नेना जो सा- [illegible] राजाए तेर्डने नीचेप्रमाणे सोगनो आ- [illegible] सोगन आपवा. क्षत्रियने अग्निना [illegible] तेना गुरुना सोगन आपवा.

[illegible] ोकोना अधिकारीर्डए " दिव्यप्र- [illegible] जे चढ" [illegible] सोगन खाधा छतां पण जे जूठुं [illegible] जे आडा हेर्डनुं खरेखर मृ[illegible] [illegible] छे.

बोलाव्याथी बाद राजाए वादी अने प्रतिवादी बन्नेना पक्षोनी,

सत्यतानो निर्णय करीने, तथा सज्जामदोनी तेमां सम्मति ले-इने चुकादो आपवो.

एवी रीते व्यवहारमार्गना विधिनो क्रम टुंकामां कह्यो; के जेना स्मरणथी मनुष्य (आ जगतमां)कोइथी पण ठगातो नथी.

॥ इति व्यवहारकृतिप्रकरणम् ॥

हवे ऋण (एटले करजनुं) स्वरूप कहे छे.

सुवर्णवर्णोऽभ्रनरेन्द्रसूनुः, क्रौंचांकितः श्रीसुमतिर्जिनेंद्रः
ऋणप्रदानग्रहणाधिकारं, प्रवक्तुकामं सुमतिं प्रदेयात् १

अर्थ–सुवर्णसरखी कांतिवाळा, तथा अभ्रनामना राजाना पुत्र, अने क्रौंच नामना पक्षिना लांछनवाळा एवा श्रीसुमतिनाथ प्रभु, करज देवाना अने करज ग्रहण करवाना अधिकारने केह-वानी इच्छावाळा एवा मने उत्तम बुद्धि आपो?

हवे करज कोने कहेवुं? तेनुं लक्षण कहे छे.

कोइक माणसे याचना करवाथी, जे द्रव्यवान माणस व्याजना दरथी द्रव्यनी वृद्धिमाटे अमुक नियमथी तेने उछिनुं द्रव्य आपे छे तेने पंडितो ऋण एटले "करज" कहे छे.

हवे तेवुं करज कोण अने कये वखते करेछे? ते कहेछे.

निर्धन माणसने ज्यारे पोतानुं, कुटुंबनुं अथवा मित्रनुं अव-श्य कार्य आवी पडे छे, त्यारे ते बिचारो करज करीने द्रव्यवान माणसपासेथी धन लावे छे. हवे तेवुं द्रव्य लेइने ते निर्धन क-रजदारे दरमासे तेनुं व्याज भरी देवुं जोइए, अने नियमित मु-दते ते सघळुं मूल द्रव्य तेना मालिकने भरी आपवुं.

एवी रीते मुदत गयाबाद पण जो करजदार माणस लेणदारे माग्यां छतां पण द्रव्य पाछुं न आपी जाय, तो लेणदारे ते वात राजाने जाहेर करवी.

स्त्रीजर

वन्नेना साक्षिर्त ज्यारे असत्य वोले त्यारे राजाए शुं करवुं ? ते कहे छे.

ज्यारे वन्नेना साक्षिर्त जूग पडे, त्यारे राजाए वीजा साक्षिर्तने पोते वोलावीने निर्णय करवो.

मुकरदमामां जो ब्राह्मण, क्षत्रिय अथवा वैश्य जू तेर्तनो दंड करीने तेर्तने नगरवहार कहाडी मेलवा साक्षिमाटे अयोग्यज कहेलो छे.

वीजा साक्षिर्त न मली शके, तो रा शुं करवुं ? ते कहे छे.

वादी अने प्रतिवादी वन्नेनी अनुमती लेइने साक्षी करवो, अने ते साक्षी, शुरू, गुणवान्, तथा समतावंत होवो जोइए.

हवे अहीं कोइ शंका करे के, सीमाडा मार्तमां तो राजा पोते करेला साक्षिर्तथी नि वीजा लेवमदेवड आदिकना मुकरदमार्तमां, शके, तेम कंइ लेखपत्र पण न मली शके फेसलो आपवो ? ते हवे कहे छे.

(तेवा मुकरदमार्तमां) वादी अने प्र क्षिर्त न मली शके, तो राजाए तेर्तने पवा. ब्राह्मणने तेना देवना सोगन आ सोगन आपवा. अने वैश्यने तेना गुरुन "उपर लखेला प्रमाणने लोकोना जे घडे" कहेलुं छे. अने तेवा सोगन जे आठा दिर्तनुं लरेलर मृत्यु थाय छे. वोलाव्याथी वाद राजाए वादी अने प्रति

णदार माणस जो एक कोडीपण न आपे, तो ते व्याजनी रकम सुधां मूलरकमनुं जे व्याज लेवुं, (एटले व्याजनुं पण जे व्याज लेवुं) तेने पंडेली " चक्रवृद्धिनी " रीति कहेली छे.

हवे बीजी कालिका नामनी रीतिनुं स्वरूप कहे छे.

मासपक्षदिनेष्वेत-द्जतानामहं ध्रुवम् ॥
वृद्धिं दास्यामि नियतां, कालिका सा स्मृता बुधैः॥२॥

अर्थ- द्रव्य लेनार माणस, द्रव्य आपनारने एम कहे के, आटला रुपीआना व्याजतरिके दरमासे, दरपक्षे, अथवा दरदिवसे हुं चोकस आटली रकम आपीश. एवा प्रकारनी रीतिने पंडितोए " कालिका " नामनी बीजी रीती कहेली छे.

हवे त्रीजी कारिका नामनी रीतिनुं स्वरूप कहे छे.

मासाकृतप्रतिज्ञायां, नोचोद्दस्यामि किंचन ॥
दास्यामि द्विगुणान् रौप्या-न्निति वृद्धिस्तु कारिका३

अर्थ- आ (एक) मासनी करेली प्रतिज्ञानी अंदर जो हुं कांइपण न आपुं, तो तेथी बमणा रुपीआ मारे आपवा; एवा प्रकारनी व्याजनी रीतीने त्रीजी "कारिका" नामनी रीति कहेली छे.

हवे चोथी कायिका नामनी रीतिनुं स्वरूप कहे छे.

कृतमासप्रतिज्ञोऽपि, मिषं दातुमशक्नुयात् ॥
देहेन सेवां धनिनो, वृद्धिः सा कायिका मता ४

अर्थ- एक मासनी प्रतिज्ञा कर्या छतां पण जो व्याज न देइ शके, अने ते व्याजना बदलामां ते लेणदार माणसनी पोतानां शरीरथी चाकरी करे, तो तेने चोथी " कायिका " नामनी व्याजनी रीती कहेली छे.

हवे करज करीने (एटले नाणुं व्याजे लेइने) जे माणस देशांतरमां नाशी जाय, तेने माटे शुं करवुं ? ते कहे छे.

द्रव्यवान माणसे लेणदारने केवी रीते द्रव्य आपवुं ? कहे छे.

आपनार माणसे खतमां पोतानुं नाम लखवुं, (तथा तेमां जे द्रव्य आपवानुं होय तेनी संख्या प्रगट अक्षरथी लखवी.) वळी तेमां लेणदार माणसनी सही नखाववी. तेम ते लेणदार माणसना पितानी दादानी, तथा तेना पुत्रादिकनी पण सही करावची. वळी ते खतमां व्याजना दरनो आंकडो, तथा मुदतनी तारिख पण प्रगट अक्षरथी लखवी. तेसाथे तेमां अन्य (एटले त्रियात माणसनी) पण साक्षी लखाववी.

द्रव्य आपनार माणसे प्रतिज्ञाप्रमाणे दरमासे व्याज ग्रहण करवुं. हवे ते व्याज लेवानी रीत शक्तिने अनुसारे चार प्रकारनी कही छे. ते कहे छे.

व्याज लेवानी पेहेली रीती " चक्रवृद्धिनी " बीजीनुं नाम " कालिका " छे. त्रीजीनुं नाम " कारिता " छे. अने चोथीनुं नाम " कायिका " छे. कह्युं छे के,

चक्रवृद्धिः स्मृता चाद्या, कालिका कारिका तथा ॥
कायिका चेति विज्ञेया, सर्वसंपत्प्रवर्धिनी ॥ १ ॥

अर्थ- व्याज लेवानी पेहेली रीतीने " चक्रवृद्धि " कहे छे, बीजीने " कालिका " कहे छे. त्रीजीने " कारिका " कहे छे. अने चोथीने " कायिका " कहे छे. ते चारे रीतिओ सर्व प्रकारनी संपदाओने वधारनारी छे.

हवे पेहेली चक्रवृद्धि नामनी रीतिनुं स्वरूप कहे छे.

आमतिज्ञातमेकापि, न दत्ता चेद्वराटिका ॥
तदेकीकृत्य तां वृद्धिं, तद्वृद्धिः, प्रथमा मता॥१॥

अर्थ- व्याज आपवानी मुदतना अंत लागसुधिमां पण ...

एदार माएम जो एक कोडीपए न आपे, तो ते व्याजनी रकम सुधां मूलरकमनुं जे व्याज लेवुं, (एटले व्याजनुं पण जे व्याज लेवुं) तेने पंडेली " चक्रवृद्धिनी " रीति कहेली छे.

हवे बीजी कालिका नामनी रीतिनुं स्वरूप कहे छे.

मासपक्षदिनेष्वेत-त्रजतानामहं ध्रुवम् ॥
वृद्धिं दास्यामि नियतां, कालिका सा स्मृता बुधैः॥२॥

अर्थ– द्रव्य लेनार माएस, द्रव्य आपनारने एम कहे के, आटला रुपीआना व्याजतरिके दरमासे, दरपक्षे, अथवा दरदिवसे हुं चोकस आटली रकम आपीश. एवा प्रकारनी रीतिने पंडितोए " कालिका " नामनी बीजी रीती कहेली छे.

हवे त्रीजी कारिका नामनी रीतिनुं स्वरूप कहे छे.

मासाकृतप्रतिज्ञायां, नोचेद्दास्यामि किंचन ॥
दास्यामि द्विगुणान् रौप्या-निति वृद्धिस्तु कारिका३

अर्थ– आ (एक) मासनी करेली प्रतिज्ञानी अंदर जो हुं कंइपए न आपुं, तो तेथी बमणा रुपीआ मारे आपवा; एवा प्रकारनी व्याजनी रीतीने त्रीजी "कारिका" नामनी रीति कहेली छे.

हवे चोथी कायिका नामनी रीतिनुं स्वरूप कहे छे.

कृतमासप्रतिज्ञोऽपि, मिषं दातुमशक्नुयात् ॥
देहेन सेवां धनिनो, वृद्धिः सा कायिका मता ४

अर्थ– एक मासनी प्रतिज्ञा कर्या छतां पण जो व्याज न देइ शके, अने ते व्याजना बदलामां ते लेएदार माएसनी पोतानां शरीरथी चाकरी करे, तो तेने चोथी " कायिका " नामनी व्याजनी रीती कहेली छे.

हवे करज करीने (एटले नाणुं व्याजे लेइने) जे माएस देशांतरमां नाशी जाय, तेने माटे शुं करवुं ? ते कहे छे.

गृहीतार्णं ऋणी गछे-देशाद्देशांतरं यदि ॥
तदा गतेऽब्दे मासवृद्धि-र्द्विगुणा स्यादिति स्थितिः १

अर्थ– करज करीने जो करजदार माणस पोताना देशमांथी बीजे देश चाल्यो जाय, तो एक वर्ष गयाबाद, दरमासे तेनापर बमणुं व्याज चडे, एवी रीति छे.

पोताना देशमां रहेलो एवो पण करजदार माणस, लेणदारे माग्या छतां पण जो धन आपे, तो पछी लेणदारे शुं करवुं ? ते हवे कहे छे.

गत्वाभिप्रायसर्वस्वं, राजानं प्रविबोधयेत् ॥
तद्विविच्य नृपः सभ्ये-रुभावप्याह्वयेत्ततः ॥ १ ॥

अर्थ– ते वखते लेणदारे राजापासे जइ, तेने सर्व वृत्तांत जाहेर करवो. राजाए पण ते संबंधि सभासदो साथे विचारिने ते बन्नेने (एटले लेणदार अने करजदार बन्नेने) (पोतानीपासे) बोलाववा.

पछी ते लेणदारनुं सर्व द्रव्य तेने थएला खर्चसहित करजदारपासेथी राजाए अपाववुं.

हवे ते समये करजदारपासे जो रोकड नाणुं न होय, तो राजाए ते करजदारना तेटली किंमतनां दागीना, धान्य, अथवा वस्त्रो लेणदारने सोंपाववां. अने ते दिवसथी अनुक्रमे करजदारपर तेनुं बमणुं, त्रमणुं अने चोगणुं व्याज चडे. वली करजदारनी ते सघली मिलकत लेणदारे (राजाए ठरावी आपेली मुदत सुधि यत्नपूर्वक सांचवी राखवी.)

वली करजदारपासेथी दागीना, धान्य अथवा वस्त्रो जो न मली शके, अने तेने बदले गाय, भेंस आदिक पशुओ मले तो ते दिवसथी करजदारपर व्याज चडे नहीं. अने पछी पोतानी शक्ति थये मूल रकम आपी ते पशुओने करजदार छोडावी शके,

हवे करजदारपासेथी द्रव्यने बदले उपरप्रमाणे आभूषण आदिक लेणदारपासे जे आव्यां होय, ते वस्तुओने कदाच चोरो चोरी जाय तो शुं करवुं? ते कहे छे.

ते समये राजा चोरोने शोधी कहाडी, तेमनीपासेथी ते द्रव्य अपावे, अने जो चोरो न मळी शके, तो खातरी कर्या-बाद राजाए तेटली वस्तुओनी किंमत जेटलुं द्रव्य पोताना भंडा-रमांथी आपवुं. (केमके, चोरोथी प्रजानुं रक्षण करवुं, ए राजानी फरज छे.)

हवे कोइए प्रीतिने लीधे पोताना मित्र अथवा सगाने उछि-नुं द्रव्य आप्युं होय, तो तेनुं व्याज होय नहीं. कह्युं छे के,

> प्रीत्या दत्तं तु यद्द्रव्यं, वर्धते नैव तत्कदा ॥
> याचिते वर्धते दत्तं, प्रतिमासमिपक्रमात् ॥ १ ॥

अर्थ-प्रीतिथी जे द्रव्य आप्युं होय, तेनुं कदापि पण व्याज होय नहीं. पण मागणी करवाथी जे द्रव्य अपायुं होय, तेनुं दरमासे व्याज चडे छे.

"पितानुं करज पुत्रे आपवुं जोइए" एवुं नियत (निश्चित) होवाथी नपुंसकपणा आदिकना दोषोवालाओने पण करज दे-वानो प्रसंग आवे छे, माटे तेओना निवारणमाटे हवे कहे छे.

> सत्सु पुत्रेषु तेनैव, ऋणं देयं सुतेन च ॥
> येन पितृवसु प्राप्तं, क्लीबांधबधिरादिषु ॥ १ ॥

अर्थ- पण पुत्रो होते छते, तेज पुत्रे करज देवुं के, जेणे (पोताना) नपुंसक, अंध, अने बेहेरा आदिक भाइओमांथी पितानुं धन मेळव्युं होय.

विभाग नहीं थएला वरसे जुदा नहीं थएला एवा भाइ, स्त्रीभरतार, तथा पितापुत्रे, जे करज करवुं ते तेओ सर्वेनी पर-

स्पर अनुमति लेइने करवुं (अर्थात् तेओ सघलाए एकठा थइने करज करवुं.)

हवे तेओ सघला जो विभक्त एटले जुदा होय तो, तेओने द्रव्यवान माणसे (कोइने) साक्षी राखीने द्रव्य आपवुं, ते कहेछे.

भ्रातॄणामविभक्तानां, दंपत्योः पितृपुत्रयोः ॥
ऋणलाभस्त्वेकमत्या, विभक्ते प्रातिभाव्यतः ॥१॥

अर्थ– जुदा नहीं थएला एवा भाइओनेमाटे, स्त्रीभरतारने-माटे, अने पितापुत्रमाटे, करजनो लाभ तेओ सर्वनी अनुमति-प्रमाणे छे. अने जो तेओ जुदा होय तो, साक्षी राख्यापूर्वक छे.

(उपलक्षणथी करजदारपासेथी लेणु लेवाना संबंधमां पण एवीज हकीकत जाणवी.)

हवे लेवा संबंधमां जे साक्षिओ राखवा, ते साक्षिओना त्रण भेदो छे. ते कहे छे. " दृष्टि ॥ १ ॥ " " प्रत्यय " ॥ २ ॥ अने " दान " ॥ ३ ॥

" दृष्टि " एटले (धन धीरनार माणसने) साक्षी एम कहे के, जे वखते तुं आ करजदारनी पासे मागणी करीश, तेज वखते हुं ते आसामीने तने बतावी आपीश. ॥ १ ॥

" प्रत्यय " एटले (धनधीरनार माणसने) साक्षी एम कहे के, आ माणस आ अमुक माणसनो पुत्र छे, तेम ते कुलवान छे. माटे मारी खातरीथी तेनी मागणीप्रमाणे तुं तेने द्रव्य आप. ते माणस तने कदापिपण ठगशे नहीं. ॥ २ ॥

" दान " एटले (धन धीरनार माणसने) साक्षी एम कहे के, तुं आ माणसने द्रव्य आप ? ते तने पाछुं तुरत आपी देशे. अने जो ते नहीं आपे, तो नीकिथी मुदते ते नाणां हुं तने आपीश. ॥३॥

एवी रीते साक्षीना त्रण भेदो जाणवा.

हवे साक्षिनी फरज शुं छे ? ते कहे छे.

गृहीतद्रव्यो निःस्वश्चे-त्प्रतिभूर्धनवान् यदा ॥
मूलं दद्यात् सर्वं तत्, कुर्यात्तं निर्ऋणं तदा ॥ १ ॥

अर्थ– द्रव्य लेनार माणस जो निर्धन थयो होय, अने साक्षी (एटले जामीन) जो धनवान् होय, तो मूळरकम साक्षीए आपीने ते विचाराने करजरहित करवो.

जो एकज कार्यमां घणां साक्षिओ होय, तो ते साक्षीओए पोतपोताना हिसाबप्रमाणे द्रव्य एकठुं करीने लेणदारने आपवुं. ते कहे छे.

एककृत्ये प्रतिभुवः, बहवः स्युः परस्परम् ॥
स्वस्वशक्त्यनुसारेण, धनिने दद्युरेकशः ॥ १ ॥

अर्थ– एकज (करजदारना) काममां जो घणां साक्षिओ होय, तो तेओए परस्पर एकठा थइ पोतपोतानी शक्तिने अनुसार दरेके, ते धन लेणदारने आपवुं.

हवे करजदार जो देशांतरे चाल्यो गयो होय, अने तेथी तेनो " दर्शनसाक्षी " ते करजदारने नीमेली मुदतदरम्यान तेना लेणदारने देखाडी न शके, तो लेणदारे ते साक्षीपासेथी ते नाणां वसुल करवां, ते गुन्हाज छे. पण न्यायनी रीतिथी ते लेणदारे ते साक्षीने त्रण पखवाडीआनी बीजी वधारे मुदत आपवी जोइए. अने ते मुदत दरम्यान जो ते साक्षी ते करजदारने तेना लेणदारने देखाडी आपे, तो ते साक्षी पोताना साक्षीपणाथी मुक्त थाय छे. अने ते मुदतदरम्यान पण जो न देखाडी शके, तो साक्षीए ते नाणां आपवांज जोइयें. ते कहे छे.

प्रतिभूरधमर्णार्थं, गृह्णात्पक्षत्रयं प्रभोः ॥
दर्शयित्वा स्वयं काले, मुक्तः स्योऽन्यथार्पयेद्धनम्॥१॥

अर्थ– साक्षीए करजदारनी शोधमाटे लेणदारपासेथी त्रण पखवाडिआनी मागणी करवी. अने ते मुदतदरम्यान तेने देखाडीने ते साक्षी पोताना वचनथी खरेखर मुक्त थाय छे.

हवे रोकड नाणुं लेवामाटे मुकेला थालनुं विवेचन करे छे.

विश्रंभाय प्रभोर्वस्तु, दत्वा गृह्णाति रौप्यकान् ॥
स आधिर्द्विविधः प्रोक्तो, नियतेतरभेदतः ॥ १ ॥

अर्थ– धन आपनारना विश्वासमाटे थाल तरिके कंइंक वस्तु मुकीने (माणस) रुपीआ ले छे; ते थालना "नियत" अने "अनियत" एवा वे भेदो कहेला छे.

गोप्यभोग्यतया सोऽपि, द्विविधः संप्रकीर्तितः
वर्धिष्णवतरभेदाभ्यां, पुनः स द्विविधः स्मृतः ॥ २ ॥

अर्थ– वली ते थाल "गोप्य" एटले सांचववालायक, अने "भोग्य" एटले वापरवालायक एम वे प्रकारनो कहेलो छे; वली ते वधीशके तेवो, अने न वधी शके तेवो, एम वे प्रकारनो कहेलो छे.

"थाल" एटले द्रव्य आपनार माणसने विश्वासमाटे जे वस्तु सोंपवामां आवे छे, ते "थाल" कहेवाय छे. तेना "नियत" अने "अनियत" एवा वे भेदो छे. तेम "गोप्य" अने "भोग्य" एवा पण तेना वे भेदो छे.

हवे "नियत" एटले, जेमके, (करजदार माणस लेणदारने कहे के) वैशाखसुदि सातमने दिवसे तमारा रुपीआ आपीने हुं आमारो थाल छोडावीश. अने जो हुं तेम न करुं तो आ थालमां राखेली वस्तु तमारीज छे. (अर्थात् तेपर तमारोज हक छे.) तेने "नियत थाल" कहे छे.

अने कंइपण मुदतविना पोतानी (करजदारनी) इच्छामुजब

(एटले अचोक्स मुदते) करजदार थाल गोडावे, ते " अनियत थाल" कहेवाय.

हवे " गोप्य " एटले सोनुं, रुपुं, तथा रत्न आदिक ते वस्तुओ लेणदारथी जोगवी शकाय नहीं, पण (पेटी आदिकमां) राखी मेलाय. अने वली कालांते तेनो नाश पण थाय.

" जोग्य " एटले खेतर, बगीचा आदिक तेनो जोगवटो लेइ शकाय छे. अने तेनी त्रीस वर्षोनी मुदत होयाथी तेनो कंइ नाश थतो नथी.

आधिस्तु नैव जोक्तव्यो, जुक्ते तु वृद्धिहानिता ॥
गोप्यस्य नियते काले,ऽतीते स्वामी धनी जवेत्॥१॥

अर्थ– " गोप्य " थाल लेणदारे जोगववोज नहीं, (अर्थात् तेनो तेणे उपयोग करवो नहीं) अने जो तेनो ते उपयोग करे, तो व्याज लेवुं नहीं; अने मुदत पूरी थयाबाद ते गोप्य थालनो लेणदार मालीक थइ शके.

नष्टे तु मूल्यं देयं स्या-द्दैवनृपापदं विना ॥
जोग्यस्यावधिपूर्तौ च, धनी स्वामी न जायते॥१॥

अर्थ– अकस्मात अने राज्यतरफना संकटने बाद करीने थालतरीके राखेली वस्तु जो नष्ट थाय, तो नाणा धीरनार आसामीए ते वस्तुनुं मूल्य करजदारने वली आपवुं.

तेम मुदत गयाबाद जोग्य वस्तुनो लेणदार मालीक थइ शके नहीं. करजदारे थालतरीके राखेली वस्तु जो लेणदार वापरे, अने ते जो करजदारना जोवामां आवे, तो लेणदारने व्याज मले नहीं. ते थाल मुकेली वस्तु जो नाश पामे तो लेणदारे तेनुं मूल्य करजदारने देवुंज जोइए. (तेमां अपवाद एटलो के, तेना संबंधमां राज्यतरफथी अथवा अकस्मातथी कंइ आपदा न आवे, तो)

सुवर्ण, रुपुं विगेरे " गोप्य थाल " निमेली मुदत व्यतीत

थयाबाद लेणदारनी मालेकीनुं थाय. पण " जोग्य " एवी खेतर आदिक स्थावर मिल्कत, नीमेली मुदत पूरी थयाबाद पण लेणदारनी मालीकीनी थइ शके नहीं. पण जंगम मीलकत मुदत पूरी थयाबाद लेणदारनी मालीकीनी थाय.

हवे जो कोइक करजदारे पोतानुं खेतर घाणमां राखीने धनवानपासेथी रुपीआ लीधा होय, अने दैवयोगे ते खेतर (एटले तेमां रहेलुं धान्यादिक जो नदीनी रेल आदिकथी नष्ट थाय, तो करजदारे ते रुपीआने बदले बीजो माल आपवो जोइए, अने एम जो न करे, तो करजदारे लेणदारने आगला रुपीआ आपी देवा जोइए. ते कहे छे.

गत्वा नृपेन वा क्षेत्रं, हृतं चेद्रणिना पुनः ॥
आधिरन्यः प्रदेयो वा, दीनतो धनिने धनम् ॥ १ ॥

अर्थ- जो नदी खेतरनो नाश करे, अथवा तेने राजा हरी लेय, तो करजदारे बीजो माल (लेणदारने) आपवो अने तेटलो बीजो माल आपवानुं जो न बने तो लेणदारने तेनुं मागतुं [illegible] आपी देवुं (केमके, तेमां कंई लेणदारनो अपराध नथी, ते तो बेचारा (करजदारना) कर्मोनुं फल छे.)

हवे कोइक करजदार धनवान, प्रपंच करीने माल नहींतनी वस्तु [illegible] तेम रीतिपूर्वक रुपीआनुं दान पण करतो छे, ते छतां जो रुपीआ न आपे, तो पछी ते करजदारे शुं करवुं ? ते कहे छे.

[illegible] मूर्णो नृपाधिकारिणाम् ॥
[illegible] स दंड्यः शतमर्पितः ॥ २ ॥

अर्थ- (ते धनवंत) करजदारने ते वृत्तांत राजाना अधिकारी- ओने जणावीने [illegible] ([illegible]) [illegible]

खत पाछुं लेवुं; अने (राजाए) पण तेवा दुष्ट लेणदारने एकसो रुपीआनो दंड करवो.

हवे व्याज केटलुं लेवुं ते कहे छे.

एकसो रुपीआ व्याजु जो लीधा होय, तो दरमासे तेनुं (वधारेमां वधारे) बे रुपीआ जेटलुं व्याज जाणवुं.

करजदार माणस जो मृत्यु पामे, तो तेना पुत्रे पोताना बापनी सही तथा मुद्रा खतमां जोइने, ते करजना पैसा लेणदारने आपवा जोइए.

हवे तेनो अपवाद कहे छे.

सुराकैतवद्यूतार्थे, परस्त्रीहेतुकं तथा ॥
ऋणं पितृकृतं पुत्रो, देयान्नैव कदाचन ॥ १ ॥

अर्थ– मद्यपानमाटे, ठगाइमाटे जुगारमाटे, तथा परस्त्रीमाटे जो पिताए करज करेलुं होय, तो ते करज पुत्रे कदापि पण देवुं नहीं.

आर्तातिवृद्धबालाख्या-धीनोन्मत्तकमद्यपैः ॥
याच्यते च ऋणं नैव, धनी दद्यात् कदापि तान् ॥१॥

अर्थ–रोगी, अतिवृद्ध, बालक, परवश थएलो, गांडो थएलो तथा मद्यपान करनारो, एटला माणसो जो व्याजु द्रव्य लेवा आवे, तो तेओने द्रव्यवान माणसे कदापि पण व्याजु द्रव्य आपवुं नहीं.

कुटुंबना पोषणमाटे पिताए करेलुं करज, तेना मृत्युबाद तेना पुत्रोएज देवुं जोइयें, तेनेमाटे कहे छे.

कुटुंबार्थं कृतं पित्रा, ज्येष्ठभ्रात्रा ऋणं यदि ॥
तयोर्मृत्यौ समत्वेन, दद्युस्ते सर्वबांधवाः ॥ १ ॥

अर्थ–कुटुंबना पालणपोषणमाटे पिताए अथवा मोटा भाइए जे करज करेलुं होय, ते तेओना मृत्युबाद सर्व भाइओए (जुदा होय अथवा साथे होय तोपण) सरखे हिंस्से अदा करवुं.

स्वामीनी गेरहाजरीमां चाकरे करेलुं करज स्वामीए देवुं जो·इए तेमाटे कहे छे.

प्रभवसत्त्वे कुटुंबार्थे, ऋणं दासेन यत्कृतम् ॥
तत्स्वामी वितरेत्सर्वं, सामिषं च ससाक्षिकम् ॥ १ ॥

अर्थ– स्वामीनी एटले शेठनी गेरहाजरीमां (ते शेठना) कुटुंबना पोषणमाटे चाकरे जे करज कर्युं होय, ते सघळुं करज, व्याजसहित साक्षीपूर्वक ते स्वामीए आपवुं जोइए.

नाणां धीरनार श्रासामीए पोताना घरमां रहीने गुप्त रीते क·रजदारपासेथी लखत कराववुं नहीं, अने जो तेम करे तो ते ल·खत जुठुं ठरे छे. (अर्थात् प्रगट रीते नियत साक्षिओनी साक्षी-पूर्वक लखत कराववुं जोइए)

धीरनार माणसे करजदारपासेथी (रुशवतादिक) नहीं ग्रह·ण करवालायक वस्तुओ ग्रहण करवी नहीं, केमके, तेथी लो·कोमां निंदा थाय छे, अने छेवटे निर्धनपणुं प्राप्त थाय छे.

हवे स्थानमार्गनो विषय कहे छे.

द्वारमार्गवियादेषु, जलश्रेणिप्रवृत्तिषु ॥
भुक्तिरेव हि गुर्वी स्यान्न दिव्यं न च साक्षिता ॥ १ ॥

अर्थ– द्वारना मार्गना, अने पाणीना नवाणोना संबंधमां भोग वटानेज बळवान जाणवो. (अर्थात् तेना संबंधमां जेनो भोग·वटो बळवान होय तेज तेनो मालिक छे.) तेमां सोगन या साक्षीनी जरुर नथी.

हवे कोइक माणसे पोतानुं एक घर कोइकनीपासे घाटणी·के मुकी नाणां उपाड्यां होय, अने फरीने तेज घर पाछुं धी·रनारने पाछुं मुकीने बीजां नाणां उपाडे; अने तेम कर्याबाद कदाचित् कोइ कारणथी जो टंटो पडे, तो शुं करवुं? तेमाटे कहे छे.

प्रथम कहेली रीतिप्रमाणे मूळदस्तावेजमां लखाण साक्षी आदि·

कयी पूर्वापरनो निश्चय करीने, (एटले प्रथम ते खेतरना थाग्र-पर कोणे नाणां धीर्यां ? अने पाछलथी तेपर कोणे नाणां धीर्यां छे ते बाबतनो निश्चय करीने) प्रथम नाणां धीरनारने तेनुं द्रव्य अपाववुं.

हवे जमीनना संबंधनुं स्वरूप कहे छे.

परेण भुज्यमाने ज्यां, पश्यन्यो न निषेधते ॥
विंशत्यब्देषु पूर्णेषु, स्वामी प्राप्नोति नैव ताम् ॥ १ ॥

अर्थ– जमीननो मालीक, पोतानी जमीन बीजो माणस भोगवे छे, एम जोतां छतां पण जो तेने अटकावे नहीं, तो वीस वर्षो गयाबाद पोतानी ते जमीन मेलवी शके नहीं. (अर्थात् वीस वर्षो गयाबाद तेनो हक चाल्यो जाय छे.)

हस्त्यश्वादिधनस्यापि, मर्यादा दशवार्षिकी ॥
ततःपरं न शक्तः स्या-द्वाप्तुं तद्धनं प्रभुः ॥ १ ॥

अर्थ– हाथी, घोडा आदिक द्रव्यनी मर्यादा पण दश वर्षोनी छे, त्यारबाद एटले ते मुदत वीत्याबाद ते वस्तुओनो स्वामी पोतानी ते वस्तुओने मेलवी शके नहीं.

हवे घावततरीके मुकेली वस्तुओने नाणां धीरनार आसामी जो वगाडे, तो साक्षी आदिकथी ते बाबतनो निर्णय करीने राजाए ते लेणदारपासेथी ते वस्तुनी किंमत करजदारने अपाववी अने विशेषमां ते लेणदारनो दंड पण करवो.

वडवार्इए उपार्जन करेली मीलकतपर पिता अने पुत्र, बन्नेनो सरखो हक छे.

एवी रीते आ ग्रंथमां संक्षेपथी "ऋणादाननुं" स्वरूप कह्युं; तेनुं विस्तारथी वर्णन "वृहदर्हन्नीति" नामना शास्त्रथी जाणी लेवुं.

॥ इति ऋणादानप्रकरणं समाप्तम् ॥

एवी रीते पूर्वना प्रकरणमां " ऋणादाननुं " स्वरूप कह्युं. हवे एवी रीते नाणां व्याजु लेइने केटलाक माणसो एकठा थइने (एटले कंपनीरूप थइने) व्यापार आदिक करे छे. तेउनुं स्वरूप कहे छे.

पद्मप्रभं जिनं नत्वा, पद्माभं पद्मलांछनम् ॥
संभूय च समुत्थान-क्रमं वक्ष्ये समासतः ॥ १ ॥

अर्थ– कमलसरखी कांतिवाला, तथा कमलना लंछनवाला एवा श्री पद्मप्रभु नामना जिनेश्वरने नमस्कार करीने, संक्षेपथी मंडलीरूप थएला माणसोनो क्रम कहीशुं.

सर्वैर्मिलित्वा लाभार्थे, वणिजो नृत्यका[illegible]
क्रियते वृत्तिरन्योन्य-संमत्या स[illegible]रुच्यते

अर्थ– नृत्यकारो (आदिक) [illegible]
लाभनेमाटे जे व्यापार करे छे, तेने [illegible]
म्मतीवाली आजीविका " कहे छे [illegible]

तेवी मंडलीमां जे माणस [illegible]
धान्य विगेरे आपे छे, ते " [illegible]

अथवा घणा व्यापारीउ [illegible]
पास, धान्य, घी, तेल, गोल [illegible]
अने तेमां थतो न[illegible]
प्रमाणे वेची ले [illegible]
होय, अने [illegible]
ते द्रव्य देनारने [illegible]
आपे छे. अने [illegible]
[illegible] करतां [illegible]
[illegible] नि [illegible]
[illegible] पण [illegible]

उपर कहेली रीतीमुजब नटादिको एकठा मळीने पोतानी आजीका चलावे छे. अने तेओ धंधाना करारमुजब जे नफो अथवा नुकसान थाय छे, ते तेओ सरखे हिस्से वेंची ले छे.

राजाज्ञातो विरुद्धं च, कृत्यं मुद्रांकनादिकम् ॥
परद्रव्यापहरण-मेतेष्वेकः करोति चेत् ॥ १ ॥
जाते विवादे दंड्याः स्युः, सर्वेऽनुमतिदानतः ॥
यथाद्रव्यं यथैश्वर्यं, भूपेन न्यायवर्तिना ॥ २ ॥

अर्थ-हवे एवी मंडळीमांनो एक मनुष्य, राजानी आज्ञाथी विरुद्ध एवुं, सिक्का पाडवा आदिकनुं,अथवा परद्रव्य हरण आदिकनुं जो कार्य करे, तो तेनो मुकरदमो चलाव्याबाद, न्यायी राजाए ते मंडळीमांना सर्व माणसोने तेओनी शक्तिमुजब दंडवा; केमके,तेवां कार्यमां मंडळीमांना सर्व माणसोनी अनुमति होय छे.

हवे तेवी मंडळीमांनो कोइ माणस जो पुत्रविना मरण पामे, तो तेनुं सर्व द्रव्य तेनी ज्ञातिना माणसोए एकठा मळीने राखी मूकवुं. ते समये राजाए ते माणसना वारसनी शोधमाटे एक वर्षमुधीनी नोटीस आपवी. अने ते मुदत दरम्यान जो तेनो वारस मळी आवे, तो तेनी खातरी करीने ते द्रव्य तेने सोंपवुं; पण तेमांथी चोथो हिस्सो ते द्रव्यनुं रक्षण करनाराओने राजाए आपवो. अने कदाच ते मुदत दरम्यान जो तेनो वारस न मळी शके, तो ते द्रव्य राजाए ते माणसनी ज्ञातिने भोजन करावयामां, तथा प्रतिष्ठादिक कार्यमां वापरवुं.

गाय जेम पोताना वाछरडानुं पोषण करे छे, तेवी रीतथी राजाए पोतानी प्रजानुं पालण करवुं; पण लोभवृत्ति राखीने अन्यायथी द्रव्य उपार्जन करवुं नहीं.

एवी रीते संक्षेपथी संभूयोत्थाननुं वर्णन कर्युं.

॥ इति संभूयोत्थान प्रकरणं समाप्तम् ॥

एवी रीते पूर्वना प्रकरणमां "ऋणादाननुं" स्वरूप कह्युं. हवे एवी रीते नाणां व्याजु लेइने केटलाक माणसो एकठा थइने (एटले कंपनीरूप थइने) व्यापार आदिक करे छे. तेउनुं स्वरूप कहे छे.

पद्मप्रभं जिनं नत्वा, पद्माभं पद्मलांछनम ॥
संभूय च समुत्थान-क्रमं वक्ष्ये समासतः ॥ १ ॥

अर्थ- कमलसरखी कांतिवाळा, तथा कमळना लंछनवाळा एवा श्री पद्मप्रभु नामना जिनेश्वरने नमस्कार करीने, संक्षेपथी मंडळीरूप थएला माणसोनो क्रम कहीशुं.

सर्वैर्मिलित्वा लाभार्थं, वणिग्भो नृत्यकारिभिः ॥
क्रियते वृत्तिरन्योन्य-संमत्या सद्भिरुच्यते ॥ २ ॥

अर्थ- नृत्यकारो (आदिक) पण माणसो एकठा थइने धनने माटे जे व्यापार करे छे, तेने पंडितो "एक बीजानी सम्मतीथी आजीविका" कहे छे.

तेवी मंडळीमां जे माणस अग्रेसर थइने सर्व भोजन, वस्त्र, धान्य विगेरे आपे छे, ते "मुखी" कहेवाय छे.

अथवा घणा व्यापारीओ एकठा थइने सुवर्ण, रुपुं, मणीओ, कपास, धान्य, घी, तेल, गोळ आदिक वस्तुओनो व्यापार करे छे, अने तेमां थतो नफो अथवा नुकसानी थएला पोताना हिस्सा प्रमाणे वेंची ले छे. हवे तेओमां कंपनीनी मूडी देनार जो एक होय, अने बाकीना थएला जो निर्धन होय तो तेओ थएला ते द्रव्य देनारने पोतपोताना नाणामांथी तेनी मूडीनुं व्याज आपे छे. अने वधेली मुडने पोतपोताना हिस्सा वेंची ले छे.

एम काममां थतां तकरारमां जो कंइ टंटो थाय, तो राजादिके तेओनां टंटानो निकाल करवो जोइए अने तेवाप्रकारनां तेवी मंडळीना टंटाने पण व्यवहारमां गणेलो छे.

उपर कहेली रीतीमुजब मठादिको एकठा थइने पोतानी आजीका चलावे छे. अने तेओ वचेना करारमुजब जे नफो अथवा नुकशान थाय छे, ते तेओ सरखे हिस्से वेंची ले छे.

राजाज्ञातो विरुद्धं च, कृत्यं मुद्रांकनादिकम् ॥
परद्रव्यापहरण-मेतेष्वेकः करोति चेत्॥ १ ॥
जाते विवादे दंड्याः स्युः, सर्वेऽनुमतिदानतः ॥
यथाऽद्रव्यं यथैश्वर्यं, भूपेन न्यायवर्तिना ॥ २ ॥

अर्थ-हवे एवी मंडलीमांनो एक मनुष्य, राजानी आज्ञाथी विरुद्ध एवुं, सिक्का पाडवा आदिकनुं,अथवा परद्रव्य हरण आदिकनुं जो कार्य करे, तो तेनो मुकरदमो चलाव्याबाद, न्यायी राजाए ते मंडलीमांना सर्व माणसोने तेओनी शक्तिमुजब दंडवा। केमके,तेवां कार्यमां मंडलीमांना सर्व माणसोनी अनुमति होय छे.

हवे तेवी मंडलीमांनो कोइ माणस जो पुत्रविना मरण पामे, तो तेनुं सर्व द्रव्य तेनी ज्ञातिना माणसोए एकठा थइने राखी मेलवुं. ते समये राजाए ते माणसना वारसनी शोधमाटे एक वर्षसुधीनी नोटीस आपवी. अने ते मुदत दरम्यान जो तेनो वारस मळी आवे, तो तेनी खातरी करीने ते द्रव्य तेने सोंपवुं। पण तेमांथी थोडो हिस्सो ते द्रव्यनुं रक्षण करनाराओने राजाए आपवो. अने कदाच ते मुदत दरम्यान जो तेनो वारस न मळी शके, तो ते द्रव्य राजाए ते माणसनी ज्ञातिने भोजन करावबामां, तथा प्रतिष्ठादिक कार्यमां वापरवुं.

गाय जेम पोताना वाछरडानुं पोषण करे छे, तेवी रीतथी राजाए पोतानी प्रजानुं पालण करवुं। पण लोभवृत्ति राखीने अन्यायथी द्रव्य उपार्जन करवुं नहीं.

एवी रीते भेळेपणी संभूयोत्थाननुं वर्णन कर्युं.

॥ इति संभूयोत्थान प्रकरणं समाप्तम् ॥

हवे "देयप्रकरणनो" प्रारंभ करे छे.

श्रीसुपार्श्वजिनं नत्वा, सप्तमं तीर्थनायकम् ॥
देयादेयविधिं सम्यक्, विवृणोमि समासतः ॥ १ ॥

अर्थ- सातमा तीर्थंकर श्रीसुपार्श्व प्रभुने नमस्कार करीने, संक्षेपथी देयादेयनी विधिनुं सारी रीते हुं विवरण करुं छुं.

[illegible] प्रकरणमां "[illegible]" वर्णन कर्युं, हवे तेमां [illegible] करे छे. तेथी "देयादेयनी" [illegible] करवामाटे हवे देयविधिनुं व्याख्यान करे छे.

[illegible] देय-विधिः स द्विविधः स्मृतः ॥
[illegible] नाम, [illegible] च ॥ २ ॥

अर्थ- [illegible] देयविधि बे प्रकारनो कहेलो छे. [illegible] अने बीजो "[illegible]" एम बे प्रकारनो छे.

[illegible] स्वकम्, आदद्यात् पुनरिच्छति ॥
[illegible] प्रायो मतः ॥ ३ ॥

अर्थ- [illegible] "[illegible]" [illegible] "देयविधि" कहेलो छे.

[illegible] तत्र गण्यते ॥
[illegible] भाषितः ॥ ४ ॥

अर्थ- [illegible] "[illegible]" [illegible]

[illegible] ॥
[illegible] ॥ ५ ॥

अर्थ– वली व्यवहार मार्गमां विचक्षण पुरुषोए दान चार प्रकारनुं कहेलुं छे; दत्त ॥ १ ॥–अदत्त ॥ २ ॥–देय ॥ ३ ॥ –अने अदेय ॥ ४ ॥

" दत्त " एटले पाछुं न लेइ शकाय तेवुं. " अदत्त " एटले पाछुं लेइ शकाय तेवुं.

" अदेय " एटले पारकुं अथवा साधारण द्रव्य. अने " देय " एटले पोतानुं अथवा असाधारण द्रव्य.

तेओमांथी " दत्त " दान छ प्रकारनुं छे. वस्तु वेचाथी लइ तेनुं मूल्य आपवुं ते ॥ १ ॥ कोइनापर अनुकं पालावी देवुं ते. ॥ २ ॥ बद्दीसतरिके देवुं ते. ॥ ३ ॥ कीर्तिमाटे देवुं ते. ॥ ४ ॥ धर्मने अर्थे देवुं ते. ॥ ५ ॥ अने प्रत्युपकारमाटे देवुं ते. ॥ ६ ॥ एम " दत्तदान " छ प्रकारनुं छे.

हवे " अदत्तदानना " भेदो कहे छे. " अदत्तदान " शोल प्रकारनुं छे. भयथी दान देवुं ते. ॥ १ ॥ क्रोधथी दान देवुं ते ॥ २ ॥ शोकथी दान देवुं ते ॥ ३ ॥ उत्सेकथी दान देवुं ते. ॥ ४ ॥ परिहासथी एटले मश्करीमांज दान देवुं ते ॥ ५ ॥ बलात्कारे दान देवुं ते. ॥ ६ ॥ दुःखगर्भित वैराग्यथी दान देवुं ते. ॥ ७ ॥ मदथी दान देवुं ते. ॥ ८ ॥ गांडा थइ दान देवुं ते. ॥ ९ ॥ रोगना सबबथी रोगीए दान देवुं ते. ॥ १० ॥ बाल्यपणाथी दान देवुं ते. ॥ ११ ॥ परतंत्रपणाथी दान देवुं ते. ॥ १२ ॥ मोहथी दान देवुं ते ॥ १३ ॥ प्रतिलाजनी इच्छाथी दान देवुं ते. ॥ १४ ॥ कुपात्र ने सुपात्रनी बुद्धिथी दान देवुं ते ॥ १५ ॥ अने कुधर्ममां धर्मबुद्धि लावीने दान देवुं ते ॥ १६ ॥ एवी रीते अदत्तदानना शोल भेदो छे.

उपर कहेला शोले प्रकारोथी जे दान देवुं, ते सत्यथी कहीयें तो अदानज छे.

उपर रोगीए दीधेला दानने जे अदत्त कहुं छे, तेमां अपवाद एटलो के, धर्मने अर्थे तेवा रोगीए जो दान दीधुं होय तो ते " दत्तदानज " कहेवाय छे. अने एवी रीते धर्मनेमाटे रोगीए दीधेलुं दान तेना मृत्युबाद पण तेना पुत्रे अवश्य देवुंज जोइए. तेमाटे बृहदर्हन्नीतिमां पण कहुं छे के,

" रोगाउरेण दिण्णं जं दाणं सुक्कधम्मकज्जस्स
तस्सय मरणेविसुउ जुग्गोचियंतं धणं दातुं "

हवे " अदेय दानना " भेदो कहे छे. " अदेयदान " नव प्रकारनुं छे. साधारण द्रव्य ॥ १ ॥ कोइए आपण राखेलुं द्रव्य ॥ २ ॥ पुत्र ॥ ३ ॥ स्त्री ॥ ४ ॥ मागीने लावेलुं द्रव्य ॥ ५ ॥ थापनरीके राखेली वस्तु ॥ ६ ॥ देवद्रव्य ॥ ७ ॥ अन्वाहित द्रव्य ॥ ८ ॥ अने सर्वस्व द्रव्य ॥ ९ ॥ ए नव प्रकारनी वस्तुओ "अदेयदान " कहेवाय छे. (अर्थात् ते वस्तुओनुं दान मोटी आपदा आवी पडे तो पण करी शकाय नहीं.)

(कोइक माणस विवाह आदिकना प्रयोजनमाटे कोइकनां वस्त्राभरणो मागीने लाव्यो होय, अने पाछां ते वस्त्राभरणो कोइक बीजा माणसने सोंपीने तेने कहे के, आ वस्त्राभरणो तुं मारीवती तेना स्वामीने आपजे; ते वस्त्राभरणो तेना मालिक सिवाय बीजाने आपवां नहीं. ते " अन्वाहित द्रव्य " कहेवाय)

(घणी पुत्र तथा पौत्र आदिकनो जो परिवार होय तो पोताना सर्व द्रव्यनुं दान नहीं करी देवुं. पण ते पुत्रादिकना पालणपोषणमाटे जेटलुं द्रव्य जोइये, तेटलुं राखीने बाकीना द्रव्यनुं दान करवुं) केमके तेमनुं पालणपोषण करवुं ते जरुरनुं छे. कहुं छे के, वृद्ध एवां माता, पिता, पुत्र, बालक, तथा पतिव्रता स्त्री, ए सघळांनुं हमेशां प्रयत्नपूर्वक पोषण करवुंज.

हवे "देयनुं" स्वरुप कहे छे.

देयं तदेव विज्ञेयं, यस्यापहरणं न हि ॥
यत्रात्मीयविरोधो न, दत्तवत्सप्तधेदयक् ॥ १ ॥

अर्थ– "देयदान" तेनेज जाणवुं के, जे पाछुं लेवाय नहीं, तथा जे दीधाथी पोताना कुटुंबीओमां विरोध न थाय; एवी रीतनुं देयदान पण "दत्तदाननी" पेठे सात प्रकारनुं छे.

धर्मनेमाटे जे वस्तु जे माणसने देवानी कबुल करी होय, ते माणस जो धर्मथी च्युत न थयो होय, तो ते वस्तु तेने देवीज.

हवे उपर वर्णवेलामांथी जे "अदत्तदान" ग्रहण करे छे, अने जे "अदेयदान" आपे छे, तेने माटेनो दंड कहे छे.

अदत्तग्राहको लोभा-त्तथाऽदेयस्य दायकः ॥
एतावुभौ दंडनीयौ, यथादोषं महीभुजा ॥ २ ॥

अर्थ–जे माणस लोभथी "अदत्तदाननुं" ग्रहण करे छे,तथा "अदेयदान" आपे छे, ते बन्नेने तेओना गुन्हाप्रमाणे राजाए दंडवा.

एवी रीते अहीं देयविधिनुं संक्षेपथी वर्णन कर्युं तेनुं विस्तारपूर्वक वर्णन, ते जाणवाना अभिलाषीओए "बृहदर्हन्नीति" नामना शास्त्रथी जाणी लेवुं.

॥ इति देयविधि प्रकरणं समाप्तम् ॥

हवे दायभागना प्रकरणनो प्रारंभ करे छे.

लक्ष्मणातनयं नत्वा, द्युसदेंद्रादिसेवितम् ॥
गेयामेयगुणाविष्टं, दायभागः प्ररूप्यते ॥ १ ॥

अर्थ– देवो अने इंद्रादिकोथी सेवाएला तथा वर्णववालायक एवा अनेक गुणोथी युक्त थएला एवा श्रीचंद्रप्रभुने नमस्कार करीने (हुं) "दायभागनुं" स्वरुप कहुंछुं.

उपर रोगीए दीधेला दानने जे अदत्त कह्युं छे, तेमां अपवाद एटलो के, धर्मने अर्थे तेवा रोगीए जो दान दीधुं होय तो ते " दत्तदानज " कहेवाय छे. अने एवी रीते धर्मनेमाटे रोगीए दीधेलुं दान तेना मृत्युबाद पण तेना पुत्रे अवश्य देवुंज जोइए. तेमाटे वृद्दर्हन्नीतिमां पण कह्युं छे के,

" रोगाउरेण दिणं जं दाणं मुक्खधम्मकज्जस्स
तस्सय मरणेविसुउ जुग्गोच्चियंतं धणं दातुं "

हवे " अदेय दानना " भेदो कहे छे. " अदेयदान " नव प्रकारनुं छे. साधारण द्रव्य ॥ १ ॥ कोइए थापण राखेलुं द्रव्य ॥ २ ॥ पुत्र ॥ ३ ॥ स्त्री ॥ ४ ॥ मागीने लावेलुं द्रव्य ॥ ५ ॥ आलतरीके राखेली वस्तु ॥ ६ ॥ देवद्रव्य ॥ ७ ॥ अन्याहित द्रव्य ॥ ८ ॥ अने सर्वस्व द्रव्य ॥ ९ ॥ ए नव प्रकारनी वस्तुउ "अदेयदान " कहेवाय छे. (अर्थात् ते वस्तुउनुं दान मोटी आपदा आवी पडे तो पण करी शकाय नहीं.)

(कोइक माणस विवाह आदिकना प्रयोजनमाटे कोइकनां वस्त्राजूषणो मागीने लाव्यो होय, अने पाछां ते वस्त्राजूषणो कोइक बीजा माणसने सोंपीने तेने कहे के, आ वस्त्राजूषणो तुं मारीवती तेना स्वामीने आपजे; ते वस्त्राजूषणो तेना मालिक शिवाय बीजाने आपवां नहीं. ते "अन्याहित द्रव्य " कहेवाय)

(वळी पुत्र तथा पौत्र आदिकनो जो परिवार होय तो पोताना सर्व द्रव्यनुं दान नहीं करी देवुं. पण ते पुत्रादिकना जरणपोषणमाटे जेटलुं द्रव्य जोइये, तेटलुं राखीने बाकीना द्रव्यनुं दान आपवुं) केमके तेउनुं जरणपोषण करवुं ते जरूरनुं छे. कह्युं छे के, वृद्ध एवां माता, पिता, पुत्र, बालक, तथा पतिव्रता स्त्री, ते सघळाउनुं हमेशां प्रयत्नपूर्वक पोषण करवुंज.

हवे "देयनुं" स्वरुप कहे छे.

देयं तदेव विज्ञेयं, यस्यापहरणं न हि ॥
यत्रात्मीयविरोधो न, दत्तवत्सप्तभेदयक् ॥ १ ॥

अर्थ- "देयदान" तेनेज जाणवुं के, जे पाछुं लेवाय नही, तथा जे दीधाथी पोताना कुटुंबीओमां विरोध न थाय; एवी रीतनुं देयदान पण "दत्तदाननी" पेठे सात प्रकारनुं छे

धर्मनेमाटे जे वस्तु जे माणसने देवानी कबुल करी होय, ते माणस जो धर्मथी च्युत न थयो होय, तो ते वस्तु तेने देवीज.

हवे उपर वर्णवेलामांथी जे "अदत्तदान" ग्रहण करे छे, अने जे "अदेयदान" आपे छे, तेने माटेनो दंड कहे छे

अदत्तग्राहको लोभा-त्तथाऽदेयस्य दायकः ॥
एतावुभौ दंडनीयौ, यथादोषं महीभुजा ॥ १ ॥

अर्थ-जे माणस लोभथी "अदत्तदाननुं" ग्रहण करे छे,तथा "अदेयदान" आपे छे, ते बन्नेने तेओना गुन्हाप्रमाणे राजाए दंडवा

एवी रीते अहीं देयविधिनुं संक्षेपथी वर्णन कर्युं तेनुं विस्तारपूर्वक वर्णन, ते जाणवाना अभिलाषीए "बृहदर्हन्नीति" नामना शास्त्रथी जाणी लेवुं.

॥ इति देयविधि प्रकरणं समाप्तम् ॥

हवे दायभागना प्रकरणनो प्रारंभ करे छे.

इंद्रगणार्चितं नत्वा, सुरदैत्यादिसेवितम् ॥
नाभेयमेयगुणाविष्टं, दायभागः प्ररूप्यते ॥ १ ॥

अर्थ- देवो अने दैत्यादिकोथी सेवाएला तथा इंद्रसमूहथी पूजाएला एवा अनेक गुणोथी युक्त एवा श्रीऋषभप्रभुने नमस्कार करीने (हुं) "दायभागनुं" स्वरुप कहुं छुं

आगलना प्रकरणमां " देयविधिनुं " स्वरुप कहेलुं ने. तेमा " अदेय" एवुं " साधारण " द्रव्य खरचवानी बावतमां जाइ- र्जवचे कलह थवाथी तेमाटे " दायजागनुं " स्वरुप कहेवुं जो- इए. अने तेथी हवे ते " दायजागनुं " स्वरुप कहे ने.

स्वस्वत्वापादनं दायः, स तु द्विविधमश्नुते ॥
आद्यः सप्रतिबंधश्च, द्वितीयोऽप्रतिबंधकः ॥ १ ॥

अर्थ– पोतपोतानापणाने प्रतिपादन करनारो " दायजाग " कहेवाय ने; अने ते दायजाग बे प्रकारनो बे. तेर्जमां पेहेलो " सप्रतिबंध " नामनो बे. अने बीजो " अप्रतिबंध " नामनो बे.

" दायजाग " एटले मा बाप अने दादा आदिकनी वस्तु- र्जमांथी पोतपोतानो जाग, के जे जागमांथी खरच करतां थकां कोइ अटकावी शके नहीं. ते " दायजाग " बे प्रकारनो ने. एक " सप्रतिबंध " अने बीजो " अप्रतिबंध " तेर्जमां काका, तथा जत्रीजा आदिकनो जो प्रतिबंध होय (अर्थात् तेर्जनाथी जो मजमु होय) तो ते दायजाग " सप्रतिबंध " कहेवाय बे. अने पोताना पुत्र तथा पौत्रादिकोथी जो मजमु होय तो ते " अप्रतिबंध " कहेवाय बे. केमके, पुत्रपणाना संबंधमां द्रव्यनी मालेकी बाबत कइ प्रतिबंध होतो नथी.

हवे ते द्रव्य बे प्रकारनुं होय बे. एक स्थावर अने बीजुं जंगम कह्युं ने के,

दायो जवति द्रव्याणां,तद् द्रव्यं द्विविधं स्मृतम् ॥
स्थावरं जंगमं चैव, स्थितिमत् स्थावरं मतम् ॥ १ ॥
गृहारामादिवस्तूनि, स्थावराणि जवंति च ॥
जंगमं स्वर्णरोप्यादि, यत्प्रयोगेण गच्छति ॥ २ ॥

अर्थ– " दायजाग " द्रव्योनो होय ने; अने ते द्रव्य बे प्रकारनुं कहेलुं बे. एक " स्थावर " अने बीजुं " जंगम " जे

द्रव्य (एटले मीहकत) स्थिर रहे ते " स्थावर " कहेवाय छे. जेमके, घर, बगीचा इत्यादिक स्थिर रहेनारी वस्तुओ स्थावर कहेवाय छे. अने सुवर्ण, रुपुं इत्यादिक जे वस्तुओ प्रयोगथी चाली जाय छे, ते जंगम कहेवाय छे,

न विभज्यं न विक्रेयं, स्थावरं च कदापि हि ॥
प्रतिष्ठाजनकं लोके, आपदाकालमंतरम् ॥ १ ॥

अर्थ– लोकोमां आबरु राखनारी एवी स्थावर मीहकतना, विपत्ति कालविना कदापी पण भाग पाडवा नहीं, के वेचवी नहीं.

सर्वेषां द्रव्यजातानां, पिता स्वामी निगद्यते ॥
स्थावरस्य तु सर्वस्य, न पिता न पितामहः ॥ १ ॥

अर्थ– सर्व प्रकारनां द्रव्योनो, पिता स्वामी कहेवाय छे. अने सर्व प्रकारनी स्थावर मिहकतनो स्वामी पिताके पितामह कहेवाता नथी.

जीवत्पितामहे तातो, दातुं नो स्थावरं क्षमः ॥
तथा पुत्रस्य सद्भावे, पितामहमृतावपि ॥ १ ॥

अर्थ– जो बापनो बाप जीवतो होय, तो पिताने स्थावर मीहकत आपी देवानो हक नथी; तेम ते दादाना मृत्युबादपण जो पुत्र होय, तो ते स्थावर मिहकत, पिता (बीजाने) आपी शके नहीं. (अहीं उपलक्षणथी स्थावर मीहकत मूकय लेइ वेचवाना संबंधमां पण उपलीज हकीकत जाणवी,)

पिता स्वीयार्जितं द्रव्यं, स्थावरं जंगमं तथा ॥
दातुं शक्तो न विक्रेतुं, गर्भस्थेऽपि स्तनंधये ॥ १ ॥

अर्थ– पुत्र गर्भमां होय, अथवा धावणो होय तोपण, पोते उपार्जन करेली स्थावर या जंगम मीहकतने पिता (कोइने) आपी शके अथवा वेची शके नहीं

अर्थ–जुदा होय अथवा साथे होय, तो पण सर्व पुत्रोए तुल्य हिस्साथी मातपितानुं करज आपीनेज तेनी (मातपितानी) मिल्कतमां जागीदार थवुं.

हवे पिताए करेला विषम जागना प्रमाणपणामां अने अप्रमाणपणामां शुं हेतु छे ? ते कहे छे.

धर्मतश्चेत्पिता कुर्या–त्पुत्रान् विषमजागिनः ॥
प्रमाणं वैपरीत्ये नु, तत्कृतस्याप्रमाणता ॥ १ ॥

अर्थ–धर्मथी पिता जो पुत्रोने विषमजागी करे (अर्थात् कोइ पुत्रने थोडी मील्कत आपे, अने कोइ पुत्रने वधारे मिल्कत आपे, तो ते प्रमाणजूत कहेवाय छे, पण तेथी जो वी[illegible] वेचण करे, तो ते अप्रमाणजूत कहेवाय.

हवे केवो पिता विपरीतपणाथी [illegible]
तेणे करेलो जाग अ[illegible]

व्यग्र[illegible]
द्यूतादिव्यस[illegible]
उन्मत्तश्च तथा कु[illegible]:,
नाधिकारी जवेद्भाग-करणे धर्मवर्जितः ॥ २ ॥

अर्थ–व्यग्रचित्तवालो, अत्यंत वुढो थएलो, व्यजिचारमां [illegible]लो, जुगार आदिकना व्यसनमां जोडाएलो, महान [illegible] थएलो, उन्मत्त थएलो, क्रोधित थएलो, पक्ष- ते खरेखर विरुद्ध थएलो, अने धर्मे करीने रहित थएलो एवो केवल निरर्थक जाग पाडी आपवा माटे अधिकारी नथी.

यस्य पुत्रलाए जे जाइ हजु (वाल होवाथी) जणेला संजूयेकत्र होय, तेउनी ते संबंधि गोठवण कोणे

असंस्कृतान्यपत्यानि, संस्कृत्य भ्रातरः स्वयम् ॥
अवशिष्टं धनं सर्वे, विभजेयुः परस्परम् ॥ १ ॥

अर्थ–जो भाइओ हजु भणेला या परणेला, या धंधे लागेला न होय, (तेओने माटे एक अवायदी रकम भाग पाडती वेलाए राखवी जोइए) के जे रकममांथी तेओनी ते संबंधि गोठवण भाइओए करवी. अने तेम करतां जे द्रव्य वधे, ते द्रव्य तेओए परस्पर वेंची लेवुं.

हवे नाना अने मोटा भाइओनी वच्चे, मोटा भाइनो केटलो अधिकार होय छे ? ते कहे छे.

अनुजानां लघुत्वे तु, सर्वथाप्यग्रजो धनम् ॥
सर्वं गृह्णाति तत्पैत्र्यं, तदा तान्पालयेत्सदा ॥ १ ॥

अर्थ–नाना भाइओनी लघु अवस्थामां, तेओना भागनुं सर्व पितासंबंधि द्रव्य मोटा भाइए पोताना स्वाधीनमां राखवुं. अने ते समये तेओनुं पोषण करवुं.

विभक्तानविभक्तान्वै, भ्रातृन् ज्येष्ठः पितेव सः ॥
पालयेत्तेऽपि तं ज्येष्ठं, सेवंते पितरं यथा ॥ १ ॥

अर्थ–जुदा थएला होय, अथवा भेला रहेला होय, एवा भाइओने मोटा भाइए पितानी पेठेज पालवा, अने ते भाइओए पण पितानी पेठेज मोटा भाइनी सेवा करवी.

पूर्वजेन तु पुत्रेण, अपुत्रः पुत्रवान् भवेत् ॥
ततो न देयः सोऽन्यस्मै, कुटुंबाधिपतिर्यतः ॥ १ ॥

अर्थ–प्रथम उत्पन्न थएला पुत्रथी अपुत्र माणस पुत्रवान थाय छे. माटे ते पहेलो पुत्र बीजाने आपवो नहीं, केमके, ते कुटुंबनो अधिपति थाय छे.

दुहिता पूर्वमुत्पन्ना, सुतः पश्चाद्भवेद्यदि ॥
पुत्रस्य ज्येष्ठता तत्र, कन्याया न कदाचन ॥१॥

अर्थ– पेहेलां पुत्रीनो जन्म थाय, अने पछी जो पुत्रनो जन्म थाय, तोपण ज्येष्ठपणुं पुत्रनेज प्राप्त थाय, पुत्रीने कदापिपण ज्येष्ठपणुं प्राप्त न थाय.

हवे जे माणसने एकज दीकरीज होय, अने बीजां कंई संतान न होय, तो ते माणसना द्रव्यनो कोण मालीक थाय ? ते देखाडता थका कहे छे.

यस्यैकायां तु कन्यायां, जातायां नान्यसंततिः ॥
प्राप्तं तस्य चाधिपत्यं, सुतायास्तत्सुतस्य च ॥१॥

अर्थ– जे माणसने फक्त एकज दीकरी होय, अने ते शिवाय बीजी संतति न होय, ते माणसना मृत्युबाद तेना धननी मालेकी तेनी पुत्रीने अने ते पुत्रीना पुत्रने प्राप्त थाय. कह्युं छे के,

आत्मनेव जायते पुत्रः, पुत्रेण दुहिता समा ॥
तस्यामात्मनि तिष्ठन्त्यां, कथमन्यो धनं हरेत् ॥ १ ॥

अर्थ– पुत्र पोताथीज उत्पन्न थाय छे, अने पुत्री पण ते पुत्रनी तुल्यज छे, माटे एवी रीते आत्मरूप एवी पुत्री होते छते, बीजो माणस द्रव्य शानुं लेइ शके?

ज्यारे पिता अपुत्र मृत्यु पामे, त्यारे तेना द्रव्यनी मालीकी सामान्यपणाथी पुत्रीने अने पुत्रीना दीकराने कही; हवे तेमां पण माताना द्रव्यनी मालीकी कोनी ? अने पिताना द्रव्यनी मालीकी कोनी ? तेने माटे कहे छे.

गृह्णाति जननीद्रव्य-मूढा च यदि कन्यका ॥
पितृद्रव्यमशेषं हि, दौहित्रः सुतरां हरेत् ॥ १ ॥

अर्थ– परणेली कन्या जो पोतानी मातानुं द्रव्य ग्रहण करे, तो तेणीनो पुत्र एटले दोतरो पितानुं द्रव्य सुखेथी ग्रहण करे.

पौत्रदौहित्रयोर्मध्ये, भेदोऽस्ति न हि कश्चन ॥
तयोर्देहे हि संबंधः, पित्रोर्देहस्य सर्वथा ॥ १ ॥

अर्थ– पौत्र (एटले दीकरानो दीकरो) अने दौहित्र (एटले दीकरीनो दीकरो) ए बन्नेमां कंई पण भेद नथी, केमके, तेओ बन्नेना शरीरमां मातपिताना शरीरनो सर्वथा प्रकारे संबंध छे.

हवे परणेली पुत्री जो कंई पण संतानविना मृत्युपामे, तो तेणीना द्रव्यनो कोण मालिक थाय ? ते कहेछे.

विवाहिता च या कन्या, चेन्मृताऽपत्यवर्जिता ॥
तदा तद्द्युम्नजातस्या-धिपतिस्तत्पतिर्भवेत् ॥ १ ॥

अर्थ–परणावेली एवी कन्या जो संतानविना मृत्यु पामे, तो तेणीना सर्व धननो मालिक तेणीनो स्वामी थाय.

पिताए भागो पाड्या बाद जन्मेला पुत्रने कोनो हिस्सो मळे ? ते कहे छे.

विभागोत्तरजातस्तु, पुत्रः पित्र्यंशभाग् भवेत् ॥
नापरेभ्यस्तु भ्रातृभ्यो, विभक्तेभ्योंऽशमाप्नुयात् ॥१॥

अर्थ–(बीजा पुत्रोनो) विभाग पाड्याबाद जन्मेला पुत्रने पितानी मिल्कतमांथी भाग मळे पण जुदा थएला एवा बीजा भाईओनी मील्कतमांथी भाग मळे नहीं. (आ उपरथी सुचव्युं छे के, विभाग पाड्या पेहेलां जन्मेला सर्व भाईओने सरखो भाग मळी शके छे.)

पिताना मृत्यु पछी पुत्रो जुदा थयाबाद जन्मेला पुत्रनो भाग शी रीते पडे ? ते कहे छे.

पितुरूर्ध्वं विज्नक्तेषु, पुत्रेषु यदि सोदरः ॥
जायते तद्विज्नागः स्या-दायव्ययविशोधितात्॥१॥

अर्थ– पिताना मृत्यु पत्नी, पुत्रो जुदा थयाबाद जो सहोदर जाइनो जन्म थाय, तो तेनो विज्नाग पोताना जागमांथी आवक जावकना विशोधनथी थाय. (जाग पाडती वेलाए मातानो गर्ज्ञ जो स्पष्ट रीते न जणातो होय, तो जुदा थएला जाइर्ज्ए पाठलथी जन्मेला पुत्रने आवक जावकनो हिसाब करीने पोताना जागमांथी पोताना सरखोज जाग देवो. अने मातानो गर्ज्ञ जो स्पष्ट रीते जणाय तो तेणीना प्रसवकालसुधीनी राह जोईने त्यारबाद जाग पाडवो.)

हवे ब्राह्मण आदिक त्रणे वर्गनी सवर्ण सवर्ण स्त्रीथी उत्पन्न थएला पुत्रोने शीरीते जाग आपवो? ते देखाडता थका कहे ठे.

ब्राह्मणस्य चतुर्वर्णाः, स्त्रियः संति तदा वसु ॥
विज्नज्य दशधा तज्जान्, चतुस्त्रिघ्यंशज्नागिनः ॥१॥

अर्थ– जो एक ब्राह्मणने चारे वर्णोनी स्त्रीर्ज होय, अने तेर्जथी उत्पन्न थएला पुत्रो जो होय, तो ते ब्राह्मणे पोतानी मील्कतना दश हिस्सा पाडवा; अने तेमांथी अनुक्रमे ब्राह्मणीथी उत्पन्न थएला पुत्रने चार जागो आपवा, क्षत्रीआणीथी उत्पन्न थएला पुत्रने त्रण जागो आपवा अने वाणीआणीथी उत्पन्न थएला पुत्रने बे जागो आपवा.

[illegible]पितावशि[illegible] तु, जागं धर्मे नियोजयेत् ॥
[illegible] न जागार्हो, ज्नोजनांशुकमंतरा ॥ १ ॥

[illegible] बाकी रहेलो एक जाग पिताए धर्ममार्गमां वापरवो; [illegible]त[illegible]थी जो पुत्र उत्पन्न थयो होय, तो तेने ज्नोजन [illegible] जाग मळे नहीं.

क्षत्राज्जातः सवर्णाया-मर्धभागी पिशात्मजात् ॥
जातस्तुर्यांशभागी स्या-च्छूद्रोत्पन्नोऽन्नवस्त्रभाक् ॥१॥

अर्थ– एक क्षत्रीय पितानो क्षत्रीयाणीथी उत्पन्न थएलो पुत्र अर्धे भागनो मालिक थाय, वाणीआणीथी उत्पन्न थएलो पुत्र चोथा भागनो मालिक थाय, अने शूद्रस्त्रीथी उत्पन्न थएला पुत्रने फक्त भोजन अने वस्त्रो मले.

वैश्याज्जातः सवर्णायां, पुत्रः सर्वपतिर्भवेत् ॥
शूद्राज्जातो न दायादो, योग्यो भोजनवाससाम् ॥१॥

अर्थ– एक वणिक पितानो वाणीआणीथीज उत्पन्न थएलो पुत्र सर्व मिल्कतनो मालिक थइ शके, अने शूद्र स्त्रीथी उत्पन्न थएला पुत्रने भाग न मले, तेने फक्त भोजन अने वस्त्रो मले.

वर्णत्रये यदा दासी-वर्गशूद्रात्मजो भवेत् ॥
जीवत्तातेन यत्तस्मै, दत्तं तत्तस्य निश्चितम् ॥ १ ॥

अर्थ– त्रणे वर्गमां, दासीरूप एवी कोइ शूद्रस्त्रीथी जो पुत्रनो जन्म थाय, तो पिताए जीवतां थकां जे वस्तु तेने दीधेली होय, ते वस्तुनो ते निश्चयें करीने मालिक थाय.

मृते पितरि तत्पुत्रैः, कार्यं तेषां हि पालनम् ॥
निर्वंधश्च तथा कार्य-स्तातं येन स्मरंति हि ॥ १ ॥

अर्थ– पिताना मृत्युबाद तेना पुत्रोए ते दासीपुत्रोनुं पालन करवुं; अने तेओने माटे एवी गोठवण करी आपवी, के जेथी तेओ पिताजीने संभार्या करे.

शूद्रस्य स्त्री भवेच्छूद्री, नान्या तज्जातसूनवः ॥
यावंतस्तेऽखिला नूनं, भवेयुः समभागिनः ॥ १ ॥

अर्थ– शूद्रनी स्त्रीतो शूद्रीज होय, बीजी जातिनी होय नहीं. माटे तेणीनाथी उत्पन्न थएला जेटला पुत्रो होय, ते सघला खरेखर तुल्य नागोवाला थाय.

हवे शूद्रे नहीं परणेली एवी दासीथी उत्पन्न थएला पुत्रने शीरीते नाग मले ? ते कहे डे.

दास्यां जातोऽपि शूद्रेण नागन्नाक् पितुरिछया ॥
मृते तातेऽर्धन्नागी स्या-दूढाजो न्रातृन्नागतः ॥ १ ॥

अर्थ– शूद्रथी दासीने पेटे जन्मेला पुत्रने (पितानी हयातिमां) पितानी इछामुजब नाग मले; अने पिता जो मृत्युपामे तो तेना मृत्युबाद ते अर्धनागी थाय, अने परणेली एवी (दासीथी) उत्पन्न थएला पुत्रने नाइर्उनी तुल्य नाग मले. (वली पिताने जो बीजा पुत्रो न होय, तेम दीकरीनो दीकरो पण न होय, तो ते दासीपुत्र पितानी सर्व मील्कतनो मालिक थाय.

हवे कोइक माणस स्त्रीवालो अने पुत्रवालो, अथवा पुत्रविनानो, जो अति उग्र रोगथी पीडीत थयो होय, अने तेथी पोतानी जीववानी आशा गेडीने, पोताना धननी रक्षामाटे जे बीजा कोइ माणसने अधिकारी (ट्रस्टी) नीमे, ते अधिकारी (ट्रस्टी) केवो होय तो योग्य कहेवाय ? ते कहे डे.

जीवनाशाविनिर्मुक्तः, पुत्रयुक्तोऽथवा परः ॥
सपत्नीकः स्वरक्षार्थे, मधिकारपदे नरम् ॥ १ ॥

दत्वा लेखं सनामांकं, राजाज्ञासाक्षिसंयुतम् ॥
कुलिनं धनिनं मान्यं, स्थापयेत्स्त्रीमनोऽनुगम् ॥२॥

अर्थ– जीववानी आशाथी रहित थएलो एवो स्त्रीवालो माणस, पुत्रवान् होय, अथवा पुत्रविनानो होय, तोपण तेणे पोताना झव्यनी रक्षामाटे, अधिकारी माणसने (ट्रस्टीने) नी-

मयो. ते अधिकारी माणस कुलिन, द्रव्यवान, माननीक, अने पोतानी स्त्रीना मनने अनुकुल पडतो होवो जोइए. वली तेवा अधिकारीने मरतीवेलाए, तेने पोताना नामनी गळथार्नु खत करी आपवुं, अने तेमां राजानी आज्ञा, तथा साक्षी नखाववी. (अहीं अधिकारीमाटे " माणस " एवो शब्द कह्यो छे, ते शब्द जातिवाचक छे, माटे उपलक्षणथी तेवा एक अथवा तेथी वधारे माणसोने पण अधिकारी (ट्रस्टी) करी शकाय.

हवे स्वामिना मृत्युबाद तेवो अधिकारी माणस, अधिकार मेलवीने, ते धनने नष्ट करे, अथवा खाइ जाय, अथवा ते विधवा स्त्रीनी मननी इच्छाप्रमाणे न वर्ते, तो शुं करवुं ? ते कहे छे.

प्राप्याधिकारं पुरुषः, परासौ गृहनायके ॥
स्वामिना स्थापितं द्रव्यं, भक्षयेद्वा विनाशयेत् ॥१॥
भवेद्वेत्प्रतिकूलश्च, मृतवध्वाः कथंचन ॥
तदा सा विधवा सद्यः, कृतारं तं मदाकुलम् ॥ २ ॥
भूपाज्ञापूर्वकं कृत्वा, स्वाधिकारपदच्युतम् ॥
नरैरन्यैः स्वविश्वस्तैः, कुलरीतिं प्रचालयेत् ॥ ३ ॥

अर्थ- परना स्वामिना मृत्युबाद अधिकारीतरीके (ट्रस्टी तरीके) स्थापेलो माणस जो स्वामिए राखेला द्रव्यने खाइ जाय, अथवा नष्ट करे, अने मृत्युपामेला स्वामिनी विधवा स्त्रीथी प्रतिकुल वर्ते, तो ते विधवाए, ते कृतार अने मदोन्मत्त माणसने तुरत राजानी आज्ञा लेइने तेना अधिकारथी दूर करवो. अने पोताना विश्वासु एवा बीजां माणसोथी काम लेवुं.

तद्द्रव्यमतियत्नेन, रक्षणीयं तया सदा ॥
कुटुंबस्य च निर्वाह-स्तन्निमेषेण प्रवेद्यथा ॥ १ ॥

अर्थ– वली ते द्रव्यनुं तेणीए अति प्रयत्नपूर्वक रक्षण करवुं; अने तेनुं एवी रीते रक्षण करवुं, के जेथी तेमांथी उत्पन्न थएला व्याजथी कुटुंबनो निर्वाह चाले.

सत्यौरसे तथा दत्ते, सुविनीतेऽथवा सति ॥
कार्ये सावश्यके प्राप्ते, कुर्याद्दानं च विक्रयम्॥१॥

अर्थ– विनयवंत एवो औरस अथवा दत्तक पुत्र होते छते, (ते विधवाए) जरुरनुं कार्य पडते छते (पोतानी मिल्कतमांथी) दान तथा वेचाण करवुं.

हवे भर्तारना मृत्युबाद तेना धननो स्वामी कोण थाय ? ते कहे छे.

भ्रष्टे नष्टे च विक्षिप्ते, पत्यौ प्रव्रजिते मृते ॥
तस्य निःशेषवित्तस्या-धिपा स्याद्वरवर्णिनी ॥१॥

अर्थ– भरतार जो भ्रष्ट थयो होय, नष्ट थयो होय, विक्षिप्त थयो होय, दीक्षित थयो होय, अथवा मृत्यु पाम्यो होय, तो तेनी सर्व मिल्कतनी मालिकी तेनी स्त्रीने मले.

कुटुंबपालने शक्ता, ज्येष्ठा या च कुलांगना ॥
पुत्रस्य सत्वेऽसत्वे च, भर्तृवत्साधिकारिणी ॥ १ ॥

अर्थ– जे मोटी कुलीन स्त्री कुटुंबनुं पालन करवामां शक्तिवंत होय, ते पुत्र होते छते, अने पुत्र न होते छते पण भर्तारनी पेठे अधिकारी थइ शके छे.

हवे तेवी विधवा स्त्रीने जो औरस पुत्र न होय, तो तेणीए कयो पुत्र दत्तक करवो ? ते कहे छे.

भ्रातृव्यं तदभावे तु, स्वकुटुंबात्मजं तथा ॥
अर्थसंस्कृतं संस्कृतं च, तदभावे सुतासुतम् ॥ १ ॥

अर्थ– (भरतारना) भत्रिजाने, ते न होय तो भाणेजा अथवा नहीं भाणेजा एवा पोताना कुटुंबिना छोकराने, ते न होय तो पुत्रीना पुत्रने दत्तक करवो.

बंधुजं तदभावे तु, तस्मिन्नसति गोत्रजम् ॥
तस्यासत्वे लघुं सप्त-वर्षसंस्थं च देवरम् ॥ १ ॥

अर्थ– ते जो न होय तो भाइना पुत्रने, ते जो न होय तो गोत्रीने, ते जो न होय तो सात वर्षना नाना देयरने तेणीए दत्तक करवो.

विधवा स्वौरसाभावे, गृहीत्वा दत्तरीतितः॥
अधिकारपदे भर्तुः, स्थापयेत्पंच साक्षितः ॥ १ ॥

अर्थ– पोताने औरस (सगो) पुत्र ज्यारे न होय, त्यारे विधवाए,कोइने दत्तक करीने पंचनी साक्षिपूर्वक पोताना भरतारना अधिकार पदपर स्थापवो.

यद्यसौ दत्तकः पित्रोः, प्रीत्या सेवासु तत्परः ॥
विनयाऽऽज्ञाकिनिष्ठश्च, भवेदौरसवत्तदा ॥ १ ॥

अर्थ– एवो ते दत्तक पुत्र प्रीतिपूर्वक ते मातपितानी सेवामां तत्पर थाय, अने विनयथी आज्ञाकारक थाय, तो ते सगापुत्रनी बरोबरज थाय छे.

एवो ते दत्तक पुत्र लेवामां शुं रीति छे ? कहे छे.

अप्रजा मनुजः स्त्री वा, गृहीयाद्यदि दत्तकम् ॥
तदा तज्ज्ञातिपित्रादे-र्लेख्यं बंध्वादिसाक्षियुक् ॥ १ ॥

अर्थ– संतानविनानो पुरुष अथवा स्त्री जो दत्तक पुत्र ले तो तेणे बंधु आदिकनी साक्षीपूर्वक, ते दत्तकना मातपितापासेथी दस्तावेज करावी लेवुं.

राजमुद्रांकितं सम्यक्, कारयित्वा कुटुंबजान् ॥
ततो ज्ञातिजनांश्चैवा-हूय भक्तिसमन्वितम् ॥ १ ॥
सधवागीततुर्यादि- मंगलाचारपूर्वकम् ॥
गत्वा जिनालये कृत्वा, जिनाग्रे स्वस्तिकं पुनः॥२॥
प्राभृतं च यथाशक्ति, विधाय सुगुरुं तथा ॥
नत्वा दत्वा च सद्दानं, व्याघुट्य निजमंदिरम् ॥३॥
आगत्य सर्वलोकेभ्य-स्तांबुलश्रीफलादिकम् ॥
दत्वा सत्कार्य स्वस्रादीन्, वस्त्रालंकरणादिभिः॥४॥
आहूतगृह्यगुरुणा, कारयेज्जातकर्म सः ॥
ततो जातोऽस्य पुत्रोऽय-मिति लोकैर्निगद्यते ॥ ५ ॥

अर्थ-पछी ते खतपर सारी रीते राजानी मोहोरछाप कराववी. तथा पछी भक्तिपूर्वक कुटुंबीओने तथा नातीलाओने बोलावीने, सुवागण स्त्रीओ पासे गीतो गवराववां, तथा मांगलीक वाजां वगमाववां थकां जिनालयमां जवुं. त्यां प्रभुनी पासे स्वस्तिक करीने तथा यथाशक्ति भेट मुकीने, अने सुगुरुने वांदीने, तथा सुपात्रे दान देइने पाछुं पोताने घेर आववुं. घेर आव्याबाद सर्व लोकोने तांबुल तथा श्रीफलादिक देवां. तथा पोतानी बेहेनो आदिकनो वस्त्रालंकारोथी सत्कार करवो. पछी पोताना घरना गुरुने बोलावीने जातकर्मनो विधि कराववो. अने पछी " आ आनो पुत्र थयो " एम लोको कहे छे.

हवे जो दत्तक लीधाबाद औरस पुत्रनो जन्म थाय, तो ते दत्तकने शुं भाग मले ? ते कहे छे.

सवर्णाङ्गौरसोत्पन्नौ, तुर्यांशार्हौ भवत्यपि ॥
भोजनांशुकदानार्हा, असवर्णास्त्वनंधयाः ॥ १ ॥

अर्थ-पोतानी जातनीज एवी स्त्रीथी (दत्तक लीधावाद) जो औरस पुत्रनो जन्म थाय तो, दत्तकने चोथो भाग मळे, अने बीजी जातनी स्त्रीथी उत्पन्न थएलां बाळकोने फक्त जोजन अने कपडां मळे. (वळी ते वखते ते दत्तक पुत्रने चोथो भाग आपी जुदो करवो. अने घरनो सर्व कारभार औरसपुत्रने सोंपवो.

हवे पुत्रो केटला प्रकारना अने शुं लक्षणोवाळा होय? ते कहे छे.

औरसो दत्रिमश्चेति, मुख्यौ क्रीतः सहोदरः ॥
दौहित्रश्चेति कथिताः, पंच पुत्रा जिनागमे ॥ १ ॥

अर्थ-औरस, दत्तक, वेचाथी लीधेलो, सहोदर, अने दौहित्र ए पांच प्रकारना पुत्रो जिनागममां कहेला छे.

(पोतानी धर्मपत्नीथी जे पुत्रनो जन्म थयो होय, ते "औरसपुत्र" कहेवाय. पोताना कुटुंबना एवा कोइ पुत्रने तेना मातपिताए प्रीतिथी जे आप्यो होय ते "दत्तकपुत्र" कहेवाय. मूल्य आपी वेचाथी लीधाला पुत्रने "क्रीतपुत्र" कहेवाय. पोतानो नानोभाइ ते "सहोदरपुत्र" कहेवाय. अने दीकरीनो दीकरो ते "दौहित्रपुत्र" कहेवाय.)

पौनर्भवश्च कानीनः, प्रच्छन्नः क्षेत्रजस्तथा ॥
कृत्रिमश्चोपविद्धश्च, दत्तश्चैव सहोढजः ॥ १ ॥
अष्टावमी पुत्रकल्पा, जैने दायहरा न हि ॥
तीर्थांतरीयशास्त्रे च, कल्पिताः स्वार्थसिद्धये ॥२॥

अर्थ-भर्तारना मरणवाद ते विधवा स्त्रीने कोइ वारना पुरुषथी उत्पन्न थएलो पुत्र "पौनर्भव" कहेवाय; (परण्यावीनानी) कन्याने उत्पन्न थएलो पुत्र "कानीन" कहेवाय. भरतार जीवतांछतां पण परपुरुषथी गुप्तरीते उत्पन्न थएलो पुत्र "प्रच्छन्न"

कहेवाय. पोतानी स्त्रीने देयरथी अथवा जेठथी उत्पन्न थएलो पुत्र "क्षेत्रज" कहेवाय. गरास आदिकनी आजीविकानो लोज देखाडीने पोताना स्वाधिनमां लीधेलो पुत्र "कृत्रिम" कहेवाय. कोइ कारणथी मातपिताए तजी दीधेला पुत्रने जो कोइए लेइ लीधो होय तो ते "उपविद्ध" कहेवाय. मातपिताए कहाडी मेल्याथी तेउने तजीने पोतानी मेले जे आव्यो होय ते "दत्त" कहेवाय. सगर्जा कन्यानो विवाह थयाबाद तेणीथी उत्पन्न थएलो पुत्र "सहोढज" कहेवाय. ए आठे प्रकारना पुत्रोने अन्यदर्शनीउंए स्वार्थ माटे दायजागना मालिक तथा पिंडदान देनारा कह्या छे. पण तेउंमां जारपणादिकनां दूषणो होवाथी जैनशास्त्रोमां तेउंने दायजागना मालिक कह्या नथी.

स्वामिना मृत्युबाद तेना धननी मालिकी अनुक्रमे कोने मले? ते कहे छे.

पत्नी पुत्रश्च भ्रातृव्याः, सपिंडश्च दुहितृजः॥
बंधुनो गोत्रजश्च स्व-स्वामी स्यादुत्तरोत्तरम्॥१॥

अर्थ-स्त्री, पुत्र, (जरतारना जाइना दीकरा) "सपिंड" एटले सात पेढेनी सुद्धिनो वंशज, दीकरीनो दीकरो, "बंधुज" एटले चौद पेढेनी सुधिनो वंशज, तथा गोत्री एम अनुक्रमें धनना मालिक थाय.

तदभावे च ज्ञातीया-स्तदभावे महीभुजा॥
तद्धनं सफलं कार्यं, धर्ममार्गे प्रदाय च॥ २॥

अर्थ-उपर कहेला आसामीउं जो न होय, तो तेनी मिल्कतना ज्ञातिवाउं मालिक थाय, अने ते ज्ञातिवाउं पण जो न होय, तो राजाए तेनुं द्रव्य धर्ममार्गमां वापरी सफल करवुं.

हवे जो कोइ विधवा स्त्री जेठ, तथा देयर आदिकथी प्रति-

पुत्र थइने जो कुशीलवाली थाय, तो ते समये शुं करवुं? ते कहे छे.

प्रतिकूला कुशीला च, निर्वास्या विधवापि सा॥
ज्येष्ठदेवरतत्पुत्रैः कृत्वान्नादिनिबंधनम् ॥ १ ॥

अर्थ-प्रतिकूल रीते चालनारी, तथा खराब आचरणोवाली एवी विधवाने पण, जेठ, देवर अथवा तेना पुत्रोए, तेणी माटे अन्नादिकनो बंदोबस्त करीने, तेणीने (घरमांथी) कहाडी मेलवी (मैमां अपवाद एटलो के, तेम करतां कदाच केटलेक काले ते जो पाछी सुधरी जाय, तो पाछो तेणीनो अधिकार तेणीने सोंपवो.)

हवे संतानविनानी एवी कोइक विधवा स्त्री, भूतादिकना दोषथी ज्यारे पोतानुं रक्षण करवाने समर्थ न होय, अर्थात् परवश होय, त्यारे तेणीनी रक्षा कोणे करवी? ते कहे छे.

भूतावेशादिविक्षिप्ता--त्युग्रव्याधिसमन्विता ॥
वातादिदूषितांगा च, मूकांधाऽस्पष्टजल्पिणी॥१॥
मदांधा स्मृतिहीना च, धनं स्वीयं कुटुंबकम् ॥
धातुं न हि समर्था या, सा पोष्या ज्येष्ठदेवरैः २

अर्थ-भूतावेषादिकथी जो ते (अपुत्र विधवा स्त्री) विक्षिप्त मनवाली थइ होय, अत्यंत भयंकर रोगवाली, वायु आदिकना दोषवाली होय, मुंगी होय, आंधली होय, स्पष्ट न बोलीशके तेवी होय, मदांध होय, स्मरणशक्तिविनानी होय, तथा जे पोताना धननुं अने कुटुंबनुं रक्षण करवामां असमर्थ होय, तेवी स्त्रीने जेठ अने देवरोए पोषवी.

भ्रातृजैश्च सपिंडैश्च, बंधुभिर्गोत्रजैस्तथा
ज्ञातिजैरक्षणीयं त--द्धनं चातिप्रयत्नतः ॥ १ ॥

अर्थ-वली तेणीना धननुं अनुक्रमे, भत्रिजाओए, सात पेढेसुधीना वंशजोए, चौद पेढेडी सुधिना वंशजोए, तथा नातिला-

उंए अति प्रयत्नपूर्वक रक्षण करवुं. (अने तेउंमांथी जो कोइ न होय तो अन्य माणसोए पण तेणीना धननुं रक्षण करवुं.)

हवे संतानविनानी विधवाना द्रव्यनुं ग्रहण करवामां तेणीना पितृपक्षमांथी कोइनो अधिकार छे के नहीं? ते कहे छे.

यच्च दत्तं स्वकन्यायै, यज्जामातृकुलागतम्॥
तद्धनं न हि गृह्णीयात्, कोऽपि पितृकुलोद्भवः॥१॥

अर्थ–जे द्रव्य (मातपितादिकोए) पोतानी कन्याने आपेलुं होय, अने जे द्रव्य जमाइना कुलमांथी तेणीने आव्युं होय, ते धन तेणीना पितृपक्षे ग्रहण करवुं नहीं.

(वळी तेणीना धननुं रक्षण करनार जो कोइ न होय, तो पितृपक्षे ते धननुं एवी रीते रक्षण करवुं के, तेणीना मृत्युबाद ते धन धर्ममार्गमां खरचाय.) (अपवाद एटलो के, असुरादिक पाप विवाहथी परणेली कन्यानुं द्रव्य, जो तेणीने पुत्र न होय, तो तेणीना मातपिता अथवा भाइउं लेइ शके. केमके, तेउंए कन्यादान आपेलुं नथी.)

हवे मातानी हयातिमां पुत्रने केटलो अधिकार होय? ते कहे छे.

आत्मजो दत्रिमादिश्च, विद्याभ्यासैकतत्परः॥
मातृभक्तियुतः शांतः, सत्यवक्ता जितेंद्रियः॥१॥
समर्थो व्यसनापेतः, कुर्याद्रीतिं कुलागताम्॥
कर्तुं शक्तो विशेषं नो, मातुराज्ञां विमुच्य वै॥२॥

अर्थ-औरस पुत्र, तथा दत्तक आदिक पुत्रे विद्याभ्यासमां तत्पर रही, मातानी भक्ति करवी, शांत थवुं, सत्यवादी, जितें-द्रिय, समर्थ, तथा व्यसनोथी रहीत थइ, कुळपरंपरानी रीतिप्रमाणे वरतवुं. तथा मातानी आज्ञानो त्याग करीने पण विशेष करवानो तेने अधिकार नथी.

हवे मातानी हयातिमां पुत्र, पितानी अथवा पितामहनी मिलकतमांथी दान अथवा वेचाण शुं करी शके? ते कहे छे.

पितुर्मातुर्द्वयोः सत्वे, पुत्रैः कर्तुं न शक्यते॥
पित्रादिवस्तुजातानां, सर्वथा दानविक्रये ॥ १ ॥

अर्थ–पितानी अने मातानी, बन्नेनी हयातीमां पुत्रोथी पितादिकनी मिल्कतनुं दान अथवा वेचाण करी शकाय नहीं.

हवे औरस अथवा दत्तक पुत्र जो प्रतिकुल थाय, त्यारे मातपिताए शुं करवुं? ते कहे छे.

पितृभ्यां प्रतिकूलः स्या–त्पुत्रो दुःकर्मयोगतः ॥
ज्ञातिधर्माचारभ्रष्टो, ऽथवा व्यसनतत्परः ॥ १ ॥
संबोधितोऽपि सद्वाक्यै, र्न त्यजेद्दुर्मतिं यदि॥
तदा तद्वृत्तमाख्याय, ज्ञातिराज्याधिकारिणः॥२॥
तदीयाज्ञां गृहीत्वा च, सर्वैः कार्यो गृहाद्बहिः ॥
तस्यान्नियोगः कुत्रापि, श्रोतुं योग्यो न कर्हिचित् ३

अर्थ–दुर्दैवना योगथी पुत्र जो मातपितानी आज्ञा न माने, ज्ञाति अने धर्मना आचारथी भ्रष्ट थाय, अथवा व्यसनमां तत्पर थाय, मिष्ट वचनोथी समजाव्या छतां पण जो पोतानी दुर्बुद्धि तजे नहीं, तो तेना आचरणसंबंधि, ज्ञातिने तथा राजकारभारीओने वाकेफ करीने तेना स्वाधिनमां रहेली वस्तु लेइ लेइने, सर्व लोकोए तेने घरनी बहार कहाडी मुकवो. अने क्यांए कोइ पण तेनी अरजी सांभळे नहीं (अने मातपिताए तेने बदले कोइ बीजा बाळकने पुत्र तरिके स्थापवो.)

हवे भाइओ हजु जुदा थया न होय, तेटलामां तेओमांथी एक भाइ जो दीक्षा ले, तो तेनो भाग-लेवा माटे तेनी स्त्रीने अधिकार छे के नहीं? ते कहे छे.

लेए अति प्रयत्नपूर्वक रक्षण करवुं. (अने तेउंमांथी जो कोइ न होय तो अन्य माणसोए पण तेणीना धननुं रक्षण करवुं.)

हवे संतानविनानी विधवाना द्रव्यनुं ग्रहण करवामां तेणीना पितृपक्षमांथी कोइनो अधिकार छे के नहीं? ते कहे छे.

यच्च दत्तं स्वकन्यायै, यज्जामातृकुलागतम्॥
तद्धनं न हि गृह्णीयात्, कोऽपि पितृकुलोद्भवः॥१॥

अर्थ–जे द्रव्य (मातपितादिकोए) पोतानी कन्याने आपेलुं होय, अने जे द्रव्य जमाइना कुलमांथी तेणीने आव्युं होय, ते धन तेणीना पितृपक्षे ग्रहण करवुं नहीं.

(वली तेणीना धननुं रक्षण करनार जो कोइ न होय, तो पितृपक्षे ते धननुं एवी रीते रक्षण करवुं के, तेणीना मृत्युबाद ते धन धर्ममार्गमां खरचाय.) (अपवाद एटलो के, असुरादिक पाप विवाहथी परणेली कन्यानुं द्रव्य, जो तेणीने पुत्र न होय, तो तेणीना मातपिता अथवा भाइउं लेइ शके, केमके, तेउंए कन्यादान आपेलुं नथी.)

हवे मातानी हयातिमां पुत्रने केटलो अधिकार होय? ते कहे छे.

आत्मजो दत्रिमादिश्च, विद्याभ्यासैकतत्परः॥
मातृभक्तियुतः शांतः, सत्यवक्ता जितेंद्रियः॥१॥
समर्थो व्यसनापेतः, कुर्याद्रीतिं कुलागताम्॥
कर्तुं शक्तो विशेषं नो, मातुराज्ञां विमुच्य वै॥२॥

अर्थ–औरस पुत्र, तथा दत्तक आदिक पुत्रे विद्याभ्यासमां तत्पर रही, मातानी भक्ति करवी, शांत थवुं, सत्यवादी, जितेंद्रिय, समर्थ, तथा व्यसनोथी रहीत थइ, कुलपरंपरानी रीतिप्रमाणे चालवुं. तथा मातानी आज्ञानो त्याग करी कंइ पण विशेष करवानो तेने अधिकार नथी.

अर्थ–एवा दूषणोवाला भाइउंना पुत्र अथवा स्त्रीउं जो शुद्ध होय, तो तेउंने तेनो भाग मले, अने ते भाइउंनां पण ते दूषणो ज्यारे नष्ट थाय, त्यारे तेउंने पण तेउंनो भाग मली शके.

हवे परणायेलो एवो पण दत्तक पुत्र जो मातपितानी सामे थाय तो शुं करवुं ? ते कहे छे.

विवाहितोऽपि चेद्दत्तः, पितृभ्यां प्रतिकूलभाक् ॥
भूपाज्ञापूर्वकं सद्यो, निःसार्यो जनसाक्षितः ॥१॥

अर्थ–परणायेलो एवो पण दत्तक पुत्र जो मातपितानी सामे थाय, तो तुरत तेने, राजानी आज्ञा लेइ, लोकोनी साक्षिए काढी मेलवो.

हवे कोइ माणस, पोतानी स्त्री, पुत्र के भाइनी सम्मतिविना दादानुं द्रव्य कोइने आपी शके के नहीं ? ते कहे छे.

पैतामहं वस्तुजातं, दातुं शक्तो न कोऽपि हि ॥
अनापृच्छ्य निजां पत्नीं,पुत्रान् भ्रातृगणं च वै ।१।

अर्थ–पोतानी स्त्री, पुत्रो, के भाइउंने पूछयाविना कोइपण माणस दादानी मिल्कत आपी शके नहीं. (केमके, दादाए उपार्जन करेली मिल्कतमां पिता अने पुत्रनो हक साधारण छे.)

हवे घणी स्त्रीउंमांथी एक स्त्रीने पुत्र थयो होय, तो ते पुत्र, बीजी, संतानविनानी स्त्रीउंना द्रव्यनो मालिक थइ शके के नहीं ? ते कहे छे.

जातेनैकेन पुत्रेण, पुत्रवत्योऽखिलाः स्त्रियः ॥
अन्यतरस्या अपुत्रायाः,मृतौ स तद्धनं हरेत्॥१॥

अर्थ–एक पुत्रना जन्मथी (एक आगामीनी) सघली स्त्रीउं

भाइओनी वेंचण हजु थइ न होय, तेटलामांज तेओमांथी जो एक भाइ दीक्षा ले, तो विभाग पाम्ती वेळाए तेनो भाग तेनी स्त्रीने मळे, अने तेनी स्त्री जो न होय तो तेना पुत्रने पण मळे.

हवे भायाभागनी वेंचण थयाबाद, तेओमांनो जो कोइ भाइ मरी जाय, अथवा दीक्षा ले, तो तेनुं धन कोण ग्रहण करे ? ते कहे छे.

पुत्रस्त्रीवर्जितः कोऽपि, मृतः प्रव्रजितोऽथवा ॥
सर्वं तद्भ्रातरस्तस्य, गृह्णीयुस्तद्धनं समम् ॥ १ ॥

अर्थ-पुत्र अथवा स्त्री विनानो एवो कोइ पण माणस जो मृत्यु पामे, अथवा दीक्षा ले, तो सर्व भाइओ तेनुं ते द्रव्य तुल्य भागे वेंचीले. भाइओमां जो कोइ उन्मत्तता आदिक दूषणोवाळो होय, तो तेने भाग मळी शके के नहीं ? ते माटे कहे छे.

उन्मत्तो व्याधितः पंगुः, पंढोऽन्धः पतितो जडः
हीनांगः पितृविद्वेषी, मुमूर्षुर्बधिरस्तथा ॥ १ ॥
मूकश्च मातृविद्वेषी, महाक्रोधो निरिंद्रियः ॥
दोषत्वेन न भागार्हाः, पोषणीयाः स्वभ्रातृभिः ।२।

अर्थ-उन्मादवाळो, रोगी, पांगळो, नपुंसक, आंधळो, पडतेलो, मूर्ख, अंगहीन थएलो, पितानो द्वेष करनारो, आपघात करवानी अथवा मृत्युनी तैयारीपर आवेलो, बेहेरो, मुंगो, मातानो द्वेष करनारो, महाक्रोधी अने इंद्रियविनानो, एटला दूषणोवाळा भाइओ भागने लायक नथी, पण बीजा भाइओए तेओनुं पोषण करवुं.

एषां तु पुत्रपत्न्याद्या-स्तुल्य भागमवाप्नुयुः ॥
दोषस्याप्रगमे त्वेषां, भागार्हत्वं प्रजायते ॥ १ ॥

अर्थ-एवा दूषणोवाळा भाइओना पुत्र अथवा स्त्रीओ जो शुद्ध होय, तो तेओने तेनो भाग मळे, अने ते भाइओनां पण ते दूषणो ज्यारे नष्ट थाय, त्यारे तेओने पण तेओनो भाग मळी शके.

हवे परणावेलो एवो पण दत्तक पुत्र जो मातपितानी सामे थाय तो शुं करवुं ? ते कहे छे.

विवाहितोऽपि चेद्दत्तः, पितृभ्यां प्रतिकूलभाक् ॥
भूपाज्ञापूर्वकं सद्यो, निःसार्यो जनसाक्षितः ॥१॥

अर्थ-परणावेलो एवो पण दत्तक पुत्र जो मातपितानी सामे थाय, तो तुरत तेने, राजानी आज्ञा लेइ, लोकोनी साक्षिए कहाडी मेलवो.

हवे कोइ माणस, पोतानी स्त्री, पुत्र के भाइनी सम्मतिविना दादानुं द्रव्य कोइने आपी शके के नहीं ? ते कहे छे.

पैतामहं वस्तुजातं, दातुं शक्तो न कोऽपि हि ॥
अनापृच्छ्य निजां पत्नीं, पुत्रान् भ्रातृगणं च यैः ॥१॥

अर्थ-पोतानी स्त्री, पुत्रो, के भाइओने पूछ्याविना कोइपण माणस दादानी मिल्कत आपी शके नहीं. (केमके, दादाए उपार्जन करेली मिल्कतमां पिता अने पुत्रनो हक साधारण छे.)

हवे घणी स्त्रीओमांथी एक स्त्रीने पुत्र थयो होय, तो ते पुत्र, बीजा, संतानविनानी स्त्रीओना द्रव्यनो मालिक थइ शके के नहीं ? ते कहे छे.

जातेनैकेन पुत्रेण, पुत्रवत्योऽखिलाः स्त्रियः ॥
अन्यतरस्या अपुत्राया, मृतौ स तद्धनं हरेत् ॥१॥

अर्थ-एक पुत्रना जन्मथी (एक आगामीनी) सघळी स्त्रीओ पुत्रवाळी कहेवाय. अने तेथी पुत्रविनानी एवी बीजी स्त्रीना

मृत्युबाद, (जो तेणीने पुत्री पण न होय तो) तेणीना द्रव्यनो ते पुत्र मालिक थाय.

हवे दादानी मिल्कतमां पौत्रोने केवी रीते भाग मले ते कहे छे.

पैतामहे च पौत्राणां, भागाः स्युः पितृसंख्यया
पितुर्द्रव्यस्य तेषां तु, संख्यया भागकल्पना ॥ १ ॥

अर्थ-दादानी मिल्कतमांथी पौत्रोने पिता जेटलोज भाग मले, अने पिताना द्रव्यमांथी तेओने तुल्य भाग मले.

हवे घणां भाइओमांथी जो एकज भाइने पुत्र होय, अने बीजा भाइओने पुत्रो न होय, तो तेओनी मिल्कतनो पण शुं तेज मालिक थाय ? ते कहे छे.

पुत्रस्त्वेकस्य संजातः, सोदरेषु च भूरिषु ॥
तदा तेनैव पुत्रेण, ते सर्वे पुत्रिणः स्मृताः ॥ १ ॥

अर्थ-घणा भाइओ वच्चे जो एक भाइने पुत्र थयो होय, तो ते एकज पुत्रथी, सर्वे भाइओ पुत्रवाला कहेवाय.

एवी रीते अहीं पुत्रपणाना संबंधना प्रतिपादनथी, सर्व धननो स्वामी ते एक पुत्रज थाय, एम कह्युं.

हवे वेचण नहीं थएला एवा कुलपरंपराथी आवता द्रव्यमां, सासुनी हयातिमां पुत्रनी स्त्रीनो केवो अधिकार होय? ते कहे छे.

अविभक्तं क्रमायातं, श्वसुरस्वं न हि प्रभुः॥
पूज्ये निजे व्ययीकर्तुं, सुतसंमतिमंतरा ॥ १ ॥

अर्थ-वेचण नहीं थएला एवा कुलक्रमथी चाल्या आवता ससराना धनने, पुत्रनी संमतिविना पोताना कार्यमां खरचवानो वहुने हक नथी.

विभक्ते तु व्ययं कुर्यात्, धर्मादिषु यथारुचि ॥
तत्पत्न्यपि मृतौ तस्य, कर्तुं शक्ता न तद्व्ययम्॥१॥

अर्थ-वेचण थयाबाद पुत्रनी ते वहुपण पोतानी इच्छामुजब ते द्रव्यने धर्मादिक कार्योमां वापरी शके, अने भर्तारना मृत्यु-बाद तेमांथी ते खरची शके नहीं.

निर्वाहमात्रं गृह्णीयात्, तद्द्रव्यस्य च मीपतः॥
मासोऽधिकारं सर्वत्र, द्रव्ये व्यवहृतौ सुतः ॥ १ ॥

अर्थ-ते समये तेणीए ते द्रव्यना व्याजमांथी फक्त पोताना निर्वाह जेटलुं ग्रहण करवुं, अने बाकी सघला द्रव्यनो पुत्र मालिक थाय.

तथापीशो व्ययं कर्तुं, न स्वंबानुमतिं विना ॥
सुते परासौ तत्पत्नी, भर्तुर्धनहरी स्मृता ॥ १ ॥

अर्थ-पुत्र मालिक थया छतां पण मातानी अनुमतिविना ते द्रव्यमांथी खरची शके नहीं, अने ते पुत्रना मृत्युबाद, तेनी स्त्री पोताना भरतारनुं द्रव्य मेलवी शके.

यदि सा शुभशीला स्त्री, श्वश्रूनिर्देशकारिणी ॥
कुटुंबपालने सक्ता, स्वधर्मनिरता सदा ॥ १ ॥
सानुकूला च सर्वेषां, भर्तुर्मंचकसेविका॥
श्वश्रूं याचेत पुत्रं हि, विनयानतमस्तका ॥ २ ॥
न हि सापि व्ययं कर्तुं, समर्था तद्धनस्य वै॥
निजेच्छया निजां श्वश्रूं,अनापृच्छ्य च कुत्रचित्॥३॥

अर्थ-वली ते विधवा जोके उत्तम शीलवाली, सासुनी आज्ञा प्रमाणे चालनारी, कुटुंबनुं पोषण करवामां तत्पर थएली, हमेशां पोताना धर्ममां लागेली, सर्व लोकोने अनुकूल, भर्तारनी शय्या

सेवनारी, विनयथी मस्तक नमावीने सासु तथा पुत्रपासे याचना करनारी होय, तो पण ते पतिना धननो सासुने पूछ्याविना पोतानी इच्छा मुजब व्यय करी शके नहीं. (वेचाण करी दीधेला द्रव्यनो व्यय करवाने तो सर्वनो अधिकार छेज.)

हवे पूर्वे कहेला गुणोवाली जो विधवा न होय, तो ससराना द्रव्यमां सासुनी हयाति छतां तेणीनो केटलो अधिकार छे? ते कहे छे.

> श्वशुरस्यार्पिते द्रव्ये, श्वश्रूसत्त्वेऽथवा वधूः ॥
> नाधिकारमवाप्नोति, भुक्त्याच्छादनमंतरा ॥ १ ॥

अर्थ–सासुनी हयातिमां ससराना द्रव्यमां विधवा वहुने भोजन अने कपडां शिवाय बीजो अधिकार मळे नहीं.

> दानगृहादिकं सर्वं, कार्यं श्वश्रूमनोऽनुगम् ॥
> करणीयं सदा वध्वा, श्वश्रूर्मातृसमा यतः ॥ १ ॥

अर्थ–वळी तेवी विधवा वहुए सासुनी मरजी मुजब सोंपेलुं घरनुं सर्व कार्य हमेशां करवुं जोइए, केमके, सासुने मातातुल्य कहेली छे.

हवे कोइक माणस सासु अने पतीनी हयातिमां अपुत्रीओ मरण पामे, तो दत्तक पुत्र करवानो (सासुससरामांथी) कोने अधिकार छे? ते कहे छे.

> गृहीयाद्दत्तकं पुत्रं, पतिवद्विधवा वधूः
> न शक्ता स्थापितुं तं च, श्वश्रूर्निजपतेः पदे ॥१॥

अर्थ–(तेवा संयोगमां) पतिनी पेठे विधवा वहुए दत्तक पुत्र ग्रहण करवो, पण सासु तेने [illegible] पोताना पतिनी [illegible] शके नहीं.

हवे सासुससराना स्वाधिनमां रहेलां, पोताना पतिना द्रव्यने विधवा वहु लेइ शके के नहीं ? ते कहे छे.

स्वपतिनार्जितं द्रव्यं, श्वश्रूश्वसुरहस्तगम्
विधवाप्तुं न शक्ता त-त्स्वामिदत्ताधिपैव हि॥१॥

अर्थ-सासुससराना स्वाधिनमां रहेलां एवां पोताना पतिए उपार्जन करेलां द्रव्यने, विधवा वहु मेलवी शके नहीं. तेओना स्वाधिनमां तो तेओना स्वामीए दीधेलुं द्रव्यज रही शके.

हवे कोइक माणसने पोतानी स्त्री अने पुत्र बन्ने साथे अणबनाव थयो, अने तेथी तेउने जुदां कर्यां. अने त्यारबाद ते माणस मृत्यु पाम्यो. पाछलथी पुत्र पण संतान विना मृत्यु पाम्यो. तो ते माणसनी मिल्कत कोण ग्रहण करे ? ते कहे छे.

अपुत्रपुत्रमरणे, तद्द्रव्यं लाति तद्वधूः
तन्मृतौ तस्य द्रव्यस्य, श्वश्रूः स्यादधिकारिणी १

अर्थ-जो पुत्र, संतानविना मृत्यु पामे, तो तेनुं द्रव्य तेनी (विधवा) वहु ग्रहण करे, अने ते वहुना मृत्युबाद ते द्रव्यनी सासु मालिक थाय.

हवे पोताना स्वामिए मेलवेलां धनने सासुनी हयातिमां, विधवा वहु खरची शके के नहीं ? ते कहेछे.

रमणोपार्जितं वस्तु, जंगमं स्थावरात्मकम्
देवयात्राप्रतिष्ठादि, धर्मकार्ये च सौहृदे ॥ १ ॥
· श्वश्रूसत्वे व्ययीकर्तुं, शक्ता चेद्विनयान्विता
कुटुंबस्य प्रिया नारी, वर्णनीयान्यथा न हि ॥२॥

अर्थ-विधवा वहु जो विनयी तथा कुटुंबने वहाली अने प्रशंसापात्र होय तो सासुनी हयातिमां पण, पोताना स्वामीए

सेवनारी, विनयथी मस्तक नमावीने सासु तथा पुत्रपासे याचना करनारी होय, तो पण ते पतिना धननो सासुने पूछ्याविना पोतानी इच्छा मुजब व्यय करी शके नहीं. (वेचाण करी दीधेला द्रव्यनो व्यय करवाने तो सर्वनो अधिकार छेज.)

हवे पूर्वे कहेला गुणोवाळी जो विधवा न होय, तो ससराना द्रव्यमां सासुनी हयाति छतां तेणीनो केटलो अधिकार छे ? ते कहे छे.

श्वशुरस्यार्पिते द्रव्ये, श्वश्रूसत्त्वेऽथवा वधूः ॥
नाधिकारमवाप्नोति, भुक्त्याच्छादनमंतरा ॥ १ ॥

अर्थ—सासुनी हयातिमां ससराना द्रव्यमां विधवा वहूने भोजन अने कपडां शिवाय बीजो अधिकार मळे नहीं.

दत्तगृहादिकं सर्व, कार्यं श्वश्रूमनोऽनुगम् ॥
करणीयं सदा वध्वा, श्वश्रूर्मातृसमा यतः ॥ १ ॥

अर्थ—वळी तेवी विधवा वहूए सासुनी मरजी मुजब सोंपेलुं एवुं घरनुं सर्व कार्य हमेशां करवुं जोइए; केमके, सासुने मातातुल्य कहेली छे.

हवे कोइक माणस माता अने पत्नीनी हयातिमां अपुत्रीओ मरण पामे, तो दत्तक पुत्र करवानो (सासुवहूमांथी) कोने अधिकार छे ? ते कहे छे.

गृहीयाद्दत्तकं पुत्रं, पतिवद्विधवा वधूः
न शक्ता स्थापितुं तं च, श्वश्रूर्निजपतेः पदे ॥१॥

अर्थ—(तेवा संयोगमां) पतिनी पेठेज विधवा वहूए दत्तक पुत्र ग्रहण करवो, पण सासु तेवा दत्तक पुत्रने पोताना पतिनी जगोए स्थापी शके नहीं.

हवे सासुससराना स्वाधिनमां रहेलां, पोताना पतिना द्रव्यने विधवा वहु लेइ शके के नहीं ? ते कहे छे.

स्वपतिनार्जितं द्रव्यं, श्वश्रूश्वसुरहस्तगम्
विधवाप्तुं न शक्ता त-त्स्वामिदत्ताधिपैव हि॥१॥

अर्थ–सासुससराना स्वाधिनमां रहेलां एवां पोताना पतिए उपार्जन करेलां द्रव्यने, विधवा वहु मेलवी शके नहीं. तेओना स्वाधिनमां तो तेओना स्वामीए दीधेलुं द्रव्यज रही शके.

हवे कोइक माणसने पोतानी स्त्री अने पुत्र बन्ने साथे अणबनाव थयो, अने तेथी तेओने जुदां कर्यां. अने त्यारबाद ते माणस मृत्यु पाम्यो. पाछलथी पुत्र पण संतान विना मृत्यु पाम्यो. तो ते माणसनी मिल्कत कोण ग्रहण करे ? ते कहे छे.

अपुत्रपुत्रमरणे, तद्द्रव्यं लाति तद्वधूः
तन्मृतौ तस्य द्रव्यस्य, श्वश्रूः स्यादधिकारिणी १

अर्थ–जो पुत्र, संतानविना मृत्यु पामे, तो तेनुं द्रव्य तेनी (विधवा) वहु ग्रहण करे, अने ते वहुना मृत्युबाद ते द्रव्यनी सासु मालिक थाय.

हवे पोताना स्वामिए मेलवेलां धनने सासुनी हयातिमां, विधवा वहु खरची शके के नहीं ? ते कहेछे.

रमणोपार्जितं वस्तु, जंगमं स्थावरात्मकम्
देवयात्राप्रतिष्ठादि, धर्मकार्ये च सौहृदे ॥ १ ॥
श्वश्रूसत्वे व्ययीकर्तु, शक्ता चेद्विनयान्विता
कुटुंबस्य प्रिया नारी, वर्णनीयान्यथा न हि ॥२॥

अर्थ–विधवा वहु जो विनयी तथा कुटुंबने वहाली अने प्रशंसापात्र होय तो सासुनी हयातिमां पण, पोताना स्वामीए उपा-

सेवनारी, विनयथी मस्तक नमावीने सासु तथा पुत्रपासे याचना करनारी होय, तो पण ते पतिना धननो सासुने पूछ्याविना पोतानी इच्छा मुजब व्यय करी शके नहीं. (वेचण करी लीधेला द्रव्यनो व्यय करवाने तो सर्वनो अधिकार छेज.)

हवे पूर्वे कहेला गुणोवाली जो विधवा न होय, तो ससराना द्रव्यमां सासुनी हयाति छतां तेणीनो केटलो अधिकार छे ? ते कहे छे.

> श्वशुरस्यार्पिते द्रव्ये, श्वश्रूसत्वेऽथवा वधूः ॥
> नाधिकारमवाप्नोति, भुक्तयाच्छादनमंतरा ॥ १ ॥

अर्थ–सासुनी हयातिमां ससराना द्रव्यमां विधवा वहुने भोजन अने कपडां शिवाय बीजो अधिकार मळे नहीं.

> दत्तगृहादिकं सर्वं, कार्यं श्वश्रूमनोऽनुगम ॥
> करणीयं सदा वध्वा, श्वश्रूर्मातृसमा यतः ॥ १ ॥

अर्थ–वळी तेवी विधवा वहुए सासुनी मरजी मुजब सोंपेलुं एवुं घरनुं सर्व कार्य हमेशां करवुं जोइए; केमके, सासुने मातातुल्य कहेली छे.

हवे कोइक माणस माता अने पत्नीनी हयातिमां अपुत्रीज मरण पामे, तो दत्तक पुत्र करवानो (सासुवहुमांथी) कोने अधिकार छे ? ते कहे छे.

> गृहीयाद्दत्तकं पुत्रं, पतिवद्विधवा वधूः
> न शक्ता स्थापितुं तं च, श्वश्रूर्निजपतेः पदे ॥१॥

अर्थ–(तेवा संयोगमां) पतिनी पेठेज विधवा वहुए दत्तक ग्रहण करवो, पण सासु तेवा दत्तक पुत्रने पोताना पतिनी . स्थापी शके नहीं.

हवे सासुससराना स्वाधिनमां रहेलां, पोताना पतिना द्रव्यने विधवा वहु लेइ शके के नहीं ? ते कहे छे.

स्वपतिनार्जितं द्रव्यं, श्वश्रूश्वसुरहस्तगम्
विधवाप्तुं न शक्ता त-त्स्वामिदत्ताधिपैव हि ॥१॥

अर्थ–सासुससराना स्वाधिनमां रहेलां एवां पोताना पतिए उपार्जन करेलां द्रव्यने, विधवा वहु मेळवी शके नहीं. तेणीना स्वाधिनमां तो तेणीना स्वामीए दीधेलुं द्रव्यज रही शके.

हवे कोइक माणसने पोतानी स्त्री अने पुत्र बन्ने साथे अणबनाव थयो, अने तेथी तेउने जुदां कर्यां. अने त्यारबाद ते माणस मृत्यु पाम्यो. पाछळथी पुत्र पण संतान विना मृत्यु पाम्यो. तो ते माणसनी मिल्कत कोण ग्रहण करे ? ते कहे छे.

अपुत्रपुत्रमरणे, तद्द्रव्यं लाति तद्वधूः
तन्मृतौ तस्य द्रव्यस्य, श्वश्रूः स्यादधिकारिणी १

अर्थ–जो पुत्र, संतानविना मृत्यु पामे, तो तेनुं द्रव्य तेनी (विधवा) वहु ग्रहण करे, अने ते वहुना मृत्युबाद ते द्रव्यनी सासु मालिक थाय.

हवे पोताना स्वामिए मेळवेलां धनने सासुनी हयातिमां, विधवा वहु खरची शके के नहीं ? ते कहेछे.

रमणोपार्जितं वस्तु, जंगमं स्थावरात्मकम्
देवयात्राप्रतिष्ठादि, धर्मकार्ये च सौहृदे ॥ १ ॥
श्वश्रूसत्वे व्ययीकर्तुं, शक्ता चेद्विनयान्विता
कुटुंबस्य प्रिया नारी, वर्णनीयान्यथा न हि ॥२॥

अर्थ–विधवा वहु जो विनयी तथा कुटुंबने वहाली अने प्रशंसापात्र होय तो सासुनी हयातिमां पण, पोताना स्वामीए उपा

सेवनारी, विनयथी मस्तक नमावीने सासु तथा पुत्रपासे याचना करनारी होय, तो पण ते पतिना धननो सासुने पूछ्याविना पोतानी इच्छा मुजब व्यय करी शके नहीं. (वेचण करी लीधेला द्रव्यनो व्यय करवाने तो सर्वनो अधिकार छेज.)

हवे पूर्वे कहेला गुणोवाली जो विधवा न होय, तो ससराना द्रव्यमां सासुनी हयाति छतां तेणीनो केटलो अधिकार छे ? ते कहे छे.

श्वशुरस्यार्पिते द्रव्ये, श्वश्रूसत्त्वेऽथवा वधूः ॥
नाधिकारमवाप्नोति, भुक्तयाच्छादनमंतरा ॥ १ ॥

अर्थ–सासुनी हयातिमां ससराना द्रव्यमां विधवा वहुने भोजन अने कपडां शिवाय वीजो अधिकार मले नहीं.

दत्तगृहादिकं सर्वं, कार्यं श्वश्रूमनोऽनुगम् ॥
करणीयं सदा वध्वा, श्वश्रूर्मातृसमा यतः ॥ १ ॥

अर्थ–वली तेवी विधवा वहुए सासुनी मरजी मुजब सोंपेलुं एवुं घरनुं सर्व कार्य हमेशां करवुं जोइए; केमके, सासुने मातातुल्य कहेली छे.

हवे कोइक माणस माता अने पत्नीनी हयातिमां अपुत्रीओ मरण पामे, तो दत्तक पुत्र करवानो (सासुवहुमांथी) कोने अधिकार छे ? ते कहे छे.

गृहीयाद्दत्तकं पुत्रं, पतिवद्विधवा वधूः
न शक्ता स्थापितुं तं च, श्वश्रूर्निजपतेः पदे ॥१॥

अर्थ–(तेवा संयोगमां) पतिनी पेठेज विधवा वहुए दत्तक पुत्र मदए करवो, पण सासु तेवा दत्तक पुत्रने पोताना पतिनी जगोए स्थापी शके नहीं.

हवे सासुससराना स्वाधिनमां रहेलां, पोताना पतिना द्रव्यने विधवा वहु लेइ शके के नहीं ? ते कहे छे.

स्वपतिनार्जितं द्रव्यं, श्वश्रूश्वसुरहस्तगम्
विधवामुं न शक्ता त-त्स्वामिदत्ताधिपैव हि ॥१॥

अर्थ-सासुससराना स्वाधिनमां रहेलां एवां पोताना पतिए उपार्जन करेलां द्रव्यने, विधवा वहु मेलवी शके नहीं. तेणीना स्वाधिनमां तो तेणीना स्वामीए दीधेलुं द्रव्यज रही शके.

हवे कोइक माणसने पोतानी स्त्री अने पुत्र वच्चे साथे अणबनाव थयो, अने तेथी तेउने जुदां कर्यां. अने त्यारवाद ते माणस मृत्यु पाम्यो. पाछलथी पुत्र पण संतान विना मृत्यु पाम्यो. तो ते माणसनी मिल्कत कोण ग्रहण करे ? ते कहे छे.

अपुत्रपुत्रमरणे, तद्द्रव्यं लाति तद्वधूः
तन्मृतौ तस्य द्रव्यस्य, श्वश्रूः स्यादधिकारिणी १

अर्थ-जो पुत्र, संतानविना मृत्यु पामे, तो तेनुं द्रव्य तेनी (विधवा) वहु ग्रहण करे, अने ते वहुना मृत्युवाद ते द्रव्यनी सासु मालिक थाय.

हवे पोताना स्वामिए मेलवेलां धनने सासुनी हयातिमां, विधवा वहु खरची शके के नहीं ? ते कहेछे.

रमणोपार्जितं वस्तु, जंगमं स्थावरात्मकम्
देवयात्राप्रतिष्ठादि, धर्मकार्ये च सौहृदे ॥ १ ॥
श्वश्रूसत्वे व्ययीकर्तुं, शक्ता चेद्विनयान्विता
कुटुंबस्य प्रिया नारी, वर्णनीयान्यथा न हि ॥२॥

अर्थ-विधवा वहु जो विनयी तथा कुटुंबने वहाली अने प्रशंसापात्र होय तो सासुनी हयातिमां पण, पोताना स्वामीए ७

सेवनारी, विनयथी मस्तक नमावीने सासु तथा पुत्रपासे याचना करनारी होय, तो पण ते पतिना धननो सासुने पूछ्याविना पोतानी इच्छा मुजब व्यय करी शके नहीं. (वेचाण करी खीधेला द्रव्यनो व्यय करवाने तो सर्वनो अधिकार छेज.)

हवे पूर्वे कहेला गुणोवाळी जो विधवा न होय, तो ससराना द्रव्यमां सासुनी हयाति छतां तेणीनो केटलो अधिकार छे ? ते कहे छे.

श्वशुरस्यार्पिते द्रव्ये, श्वश्रूसत्त्वेऽथवा वधूः ॥
नाधिकारमवाप्नोति, भुक्तयाच्छादनमंतरा ॥ १ ॥

अर्थ-सासुनी हयातिमां ससराना द्रव्यमां विधवा वहुने भोजन अने कपडां शिवाय बीजो अधिकार मळे नहीं.

दत्तगृह्यादिकं सर्वं, कार्यं श्वश्रूमनोऽनुगम् ॥
करणीयं सदा वध्वा, श्वश्रूर्मातृसमा मता ॥ २ ॥

अर्थ-वळी तेवी विधवा वहुए सासुनी मरजी मुजब गोपेतुं एवुं घरनुं सर्व कार्य हमेशां करवुं जोइए; केमके, सासुने माता-तुल्य कहेली छे.

हवे कोइक माणस माता अने पत्नीनी हयातिमां अपुत्रीओ मरण पामे, तो दत्तक पुत्र करवानो (सासुवहुमांथी) कोने अधिकार छे ? ते कहे छे.

गृहीयाद्दत्तकं पुत्रं, पतिवद्विधवा वधूः
न शक्ता स्थापितुं तं च, श्वश्रूर्निजपतेः पदे ॥३॥

अर्थ-(तेवा संयोगमां) पतिनी पेठेज विधवा वहुए दत्तक पुत्र ग्रहण कर्यो, पण सासु तेवा दत्तक पुत्रने पोताना पतिनी जग्याए स्थापी शके नहीं.

अर्थ- विवाह समये मातपिताए जे आभरण अने अग्निनी साखे (कन्याने) आभरण आदिक आप्यां होय, ते " अध्यग्निकृत स्त्रीधन " कहेवाय.

पुनः पितृगृहादूढा-नीता यद्भूषणादिकम् ।
बंधुभ्रातृसमक्षं स्या-दध्यावाहनिकं च तत् ॥ १ ॥

अर्थ- वळी परीने पीयरथी, जे, जे कंई आभरण आदिक बंधुओनी साक्षिए लावे ते " अध्यावाहनिक स्त्रीधन " कहेवाय.

प्रीत्या श्वशुराभ्यां यद्दत्तं,प्रणता च मातृभिः ॥
मुखेक्षणादिसमये, तत्स्यात् प्रीतिजं धनम् ॥ १ ॥

अर्थ- पुत्रवधूनी सेवाथी अने पगे पडवाथी संतोष पामी सासु अने सासराए प्रीतिथी वहुने जे कंइ आप्युं होय, ते " प्रीतिज स्त्रीधन " कहेवाय.

पुनर्लग्नः स्वजनेभ्यो-ऽस्याः पितृगृहागता ॥
प्राप्ता स्वर्णरत्नादि, तस्या औदयिकं धनम् ॥ १ ॥

अर्थ- वळी परणाया बाद परीने पियरथी आवनारीने जे स्वर्ण अथवा रत्नादिक मळे, ते " औदयिक स्त्रीधन " कहेवाय.

परिणयनकाले यद्दत्तं स्वर्णांशुकादिकम् ।
जायापतिकुलाभ्यां तु तदन्वाधेयकं मतम् ॥ १ ॥

अर्थ- वळी परिणयन वखते, वर अने कन्याना कुटुंबीओ ते वखत वस्त्रादिक आपतां होय, ते " अन्वाधेयक स्त्रीधन " कहेवाय.

देशान्तरीयगमनात्तु, स दाता सर्वेऽप्यद्य ।
आगमिष्यति ततः प्रीत्या, सर्वप्रीतिरिति स्मृतम् ॥ १ ॥

अर्थ- वळी देशे जवा वखते ... [illegible]

तद्धृत्य समानीतं, लब्धं विद्याबलेन च ॥
प्राप्तं मित्राद्विवाहे वा, तथा शौर्येण सेवया ॥ २ ॥
अर्जितं येन यत्किंचि-त्तत्तस्यैवाखिलं भवेत् ॥
तत्र भागहरा न स्यु- रन्ये- केऽपि च भ्रातरः ॥३॥

अर्थ– पितानुं द्रव्य नष्ट कर्याविना, अने भाइओनी सहाय-विना, जे कुलागत (भागनुं) द्रव्य पिताए लीधुं नथी, ते द्रव्य जे विद्याबलथी लावे, अथवा विवाहमां जे कंइ (पोताना) मित्रोतरफथी मले, अथवा पराक्रमथी अने कोइनी सेवाथी जे द्रव्य जेणे मेलव्युं छे, ते सघला द्रव्यनी मालिकी तेनेज मले, तेमां बीजा कोइपण भाइओनो भाग लागे नहीं.

हवे जेना भाग न पडी शके तेवुं स्त्री धन कहे छे.

विवाहकाले वा पश्चा-त्पित्रा मात्रा च बंधुभिः ॥
पितृव्यैश्च वृद्धस्वस्रा, पितृस्वस्रा तथापरैः ॥ १ ॥
मातृस्वस्रादिभिर्दत्तं, तथैव पतिनापि यत् ॥
भूषणांशुकपात्रादि, तत्सर्वं स्त्रीधनं भवेत् ॥ २ ॥

अर्थ–विवाह समये, अथवा पाछलथी पिताए, माताए, भाइओए, काकाओए, मोटी सासुए, फोइए, अने मासी आदिकोए, तथा पतिएपण जे अलंकारो वस्त्रो, के पात्रादि (कन्याने) आप्यां होय ते सघलुं स्त्रीधन कहेवाय.

हवे ते स्त्रीधन अनेक प्रकारनुं छे पण टुंकामां कहीए तो तेना पांच भेदो छे, ते कहे छे.

विवाहे यच्च पितृभ्यां, धनमाभूषणादिकम् ॥
विप्राग्निसाक्षिकं दत्तं, तदध्यग्निकृतं भवेत् ॥ १ ॥

अर्थ- विवाह समये मातपिताए जे भाभरण अने अग्निनी साखे (कन्याने) आभूषण आदिक आप्यां होय, ते " अध्य-ग्निकृत स्त्रीधन " कहेवाय.

पुनः पितृगृहाद्वध्वा-नीतं यद्भूषणादिकम् ॥
बंधुभ्रातृसमक्षं स्या-दध्यावहनिकं च तत् ॥ १ ॥

अर्थ- वधू पतीने पीयरथी, भा, जे बंधु आभूषण आदिक बंधुओनी साक्षिए लावे ते " अध्यावहनिक स्त्रीधन " कहेवाय.

प्रीत्या स्नुषायै यद्दत्तं,श्वश्वा च श्वशुरेण च ॥
मुखेक्षणांघ्रिनमने, तद्धनं प्रीतिजं मतम् ॥ १ ॥

अर्थ- मुखजोती वेळाए अने पगे पडती वखते सासु अने सासराए प्रीतिथी वहूने जे द्रव्य आप्युं होय, ते " प्रीतिज स्त्रीधन " कहेवाय.

पुनर्भ्रातुः सकाशाद्य-त्प्राप्तं पितृगृहात्तथा ॥
ऊढया स्वर्णरत्नादि, तत्स्या दौदयिकं धनम् ॥ १ ॥

अर्थ- वधू परण्याबाद पतीने पियरथी भाइपासेथी जे स्वर्ण अथवा रत्नादिक मळे, ते " औदयिक स्त्रीधन " कहेवाय

परिक्रमणकाले य-द्दत्तं रत्नांशुकादिकम् ॥
जायापतिकुलस्त्रीभि-स्तदन्वाधेयमुच्यते ॥ १ ॥

अर्थ-वधू परिक्रमण समये, कोइ ओरतो अथवा कुळस्त्रीए जे रत्न तथा वस्त्रादिक आप्यां होय, ते " अन्वाधेय स्त्रीधन " कहेवाय.

एतत्स्त्रीधनमादातुं, न शक्तः सर्वथोऽप्यवि ॥
त्यागावसरे यतः प्रोक्तं, सर्वनीतिविशारदैः ॥ १ ॥

अर्थ- एवी रीते उपर दर्शावेलां स्त्रीधनने लेवाने कोइपण

मानवे नथी. केमके, सर्व नीतिशास्त्रोना पंडितोए ते धर्म मान्य कहेलुं छे.

भारस्यार्थेनडंकारो, जर्त्रा दत्तो न केनचित्॥
ग्राह्यः पतिमृतौ सोऽपि, मजेत्स्त्रीधनतां यतः॥

अर्थ– कोइक जर्तारे (स्त्रीने) पेहेरवामाटे जे आप्युं न होय. ते आजूषण पण जर्तारना मृत्युबाद जरतीके लेवाय.

हवे एवी रीतना स्त्रीधनने पण जर्तार कोइ समे लइ शके के नहीं ते कहे छे.

तेवी रीतना स्त्रीधनने, जयंकर व्याधि वखते, दुःख अथवा मोटी आपदासमये जर्तार लेइ शके, अने पछी ते धन पाछं लेइने ते "स्त्रीधन" तेणे पाछुं आपवुं.

उपर वर्णवेला दायजागना संबंधमां देशाचारने मान समजवो.

हवे उपसंहार कहे छे.

इत्येवं वर्णितस्त्वत्र, दायजागः समासतः॥
प्रमाणतं विशेषश्च, ज्ञेयोऽर्हन्नीतिशास्त्रतः॥ १॥

अर्थ– एवी रीते अहीं सामान्यपणाथी आगमने अनुसारे वर्णव्यो. ते संबंधी विशेष हकीकत "बृहदर्हन्नीति" शास्त्रथी जाणी लेवी.

॥ इति दायजागप्रकरणं समाप्तम् ॥

एवे सीमावादनुं प्रकरण कहे छे.

योगीन्द्रं सच्चिदानंदं, स्वजावध्वस्तकल्मषम्॥
प्रणिपत्य पुष्पदंतं, सीमानिर्णय उच्यते॥ १॥

अर्थ- योगीईना स्वामी, तथा सच्चिदानंदरूप, अने ज्ञाना-वधी नष्ट करेल छे (कर्मोरूपी) मद्दीनता जेमणे, एवा श्रीपुष्प-देव प्रभुने नमस्कार करीने हवे " सीमानिर्णय " कहेवाय छे.

पूर्वना प्रकरणमां दायभागनुं स्वरूप कह्युं. हवे ते दायभाग थयाबाद ज्ञातीयवर्गमां सीमानो विवाद थाय, माटे तेनो निर्णय करे छे.

" सीमा " एटले जमिनी मर्यादा, ते मर्यादा गाम, क्षेत्र, घर, तथा बगीचा आदिकनी अनेक प्रकारनी होय छे.

वळी ते मर्यादाना प्रत्येक पांच भेदो छे. चिह्निता ॥ १ ॥ मिश्रिता ॥ २ ॥ राजदत्ता ॥ ३ ॥ ज्ञापिनी ॥ ४ ॥ अने कल्पिता ॥ ५ ॥ ए पांच प्रकारनी मर्यादा होय छे

तेओमां " चिह्निता " एटले नदी, तथा सरोवर आदिक जलाशयोना चिन्होवाळी मर्यादा.

" मिश्रिता " एटले वृक्ष आदिकना चिन्होवाळी मर्यादा.

" राजदत्ता " एटले वादि प्रतिवादिए साथे मळीने पोते करेली मर्यादा.

" ज्ञापिनी " एटले साक्षीना अथवा पत्थरोना दृष्टांथी सूचित थयेली मर्यादा.

" कल्पिता " एटले कंईपण निशानीनी गेरहाजरीमां राजाए पोतानी बुद्धिथी ठरावेली मर्यादा.

एवी रीते पांच प्रकारनी " सीमा " कहेली छे.

हवे ते सीमा संबंधि वाद नीचे प्रमाणे छ प्रकारनो होय छे.

विवादोऽत्र भवेत षोढा, नाधि चाल्पपुरत्वं च धे ॥
... ॥ चैव, भुक्तिराभोगतस्तथा ॥ १ ॥

... विवाद छ प्रकारनो छे. अधिकवाद ॥ १ ॥
... न्यूनवाद ॥ २ ॥ अस्तित्ववाद ॥ ३ ॥ ...

समर्थ नथी, केमके, सर्व नीतिशास्त्रोना पंडितोए ते धनने "ऋागानर्ह" कहेलुं छे.

धारणार्थमलंकारो, जर्त्रा दत्तो न केनचित्॥
ग्राह्यः पतिमृतौ सोऽपि, व्रजेत्स्त्रीधनतां यतः॥ १॥

अर्थ– कोइक जर्तारे (स्त्रीने) पेहेरवामाटे जे आजूषण आप्युं न होय, ते आजूषण पण जर्तारना मृत्युबाद स्त्रीधनतरीके लेखाय.

हवे एवी रीतना स्त्रीधनने पण जर्तार कोइ समये लेइ शके के नहीं ते कहे छे.

तेवी रीतना स्त्रीधनने, जयंकर व्याधि वखते, डुकाळमांए अथवा मोटी आपदासमये जर्तार लेइशके, अने पछी धन प्राप्त थया बाद तेणीने ते " स्त्रीधन " तेणे पाछुं आपवुं.

उपर वर्णवेला दायजागना संबंधमां देशाचारने पण बलवान समजवो.

हवे उपसंहार कहे छे.

इत्येवं वर्णितस्तत्र, दायजागः समासतः॥
यथाश्रुतं विशेषश्च, ज्ञेयोऽर्हन्नीतिशास्त्रतः॥ १॥

अर्थ– एवी रीते अहीं सामान्यपणाथी आगमने अनुसारे दायजाग वर्णव्यो. ते संबंधी विशेष हकीकत " बृहदर्हन्नीति" नामना शास्त्रथी जाणी लेवी.

॥ इति दायजागप्रकरणं समाप्तम् ॥

हवे सीमावादनुं प्रकरण कहे छे.

योगींद्रं सच्चिदानंदं, सज्ज्ञानध्वस्तकल्मषम्॥
प्रणिपत्य पुष्पदंतं, सीमानिर्णय उच्यते॥ १॥

अर्थ– योगीओना स्वामी, तथा सच्चिदानंदरूप, अने स्वजावथी नष्ट करेल छे (कर्मोरूपी) मलीनता जेमणे, एवा श्रीपुष्पदंत प्रजुने नमस्कार करीने हवे " सीमानिर्णय " कहेवाय छे.

पूर्वना प्रकरणमां दायजागनुं स्वरूप कह्युं. हवे ते दायजाग थयाबाद जाईओवच्चे सीमानो विवाद थाय, माटे तेनो निर्णय कहेछे.

" सीमा " एटले जूमिनी मर्यादा, ते मर्यादा गाम, क्षेत्र, घर, तथा बगीचा आदिकनी अनेक प्रकारनी होय छे.

वली ते मर्यादाना प्रत्येक पांच जेदो छे. विक्षिला ॥ १ ॥ मिथिला ॥ २ ॥ राजखता ॥ ३ ॥ जामिनी ॥ ४ ॥ अने कासिका ॥ ५ ॥ ए पांच प्रकारनी मर्यादा होय छे.

तेओमां " विक्षिला " एटले नदी, तथा सरोवर आदिक जलाशयोना चिन्होवाली मर्यादा.

" मिथिला " एटले वृक्ष आदिकना चिन्होवाली मर्यादा.

" राजखता " एटले वादि प्रतिवादिए साथे मलीने पोते करेली मर्यादा.

" जामिनी " एटले माटीना अथवा पत्थरोना ढगलाथी सूचित थएली मर्यादा.

" कासिका " एटले कंईपण निशानीनी गेरहाजरीमां राजाए पोतानी बुद्धिथी ठरावेली मर्यादा.

एवी रीते पांच प्रकारनी " सीमा " कहेली छे.

हवे ते सीमा संबंधि वाद नीचे प्रमाणे ठ प्रकारनो होय छे.

विवादोऽत्र जवेत् षोढा, नास्ति चास्त्युजयं च वै ॥
न्यूनताधिकता चैव, जुक्तिराजोगतस्तथा ॥ १ ॥

अर्थ– सीमानो विवाद ठ प्रकारनो छे. अस्तिवाद ॥ १ ॥ नास्तिवाद ॥ २ ॥ उजयवाद ॥ ३ ॥ न्यूनतावाद ॥ ४ ॥ अ-

धिकतावाद ॥ ५ ॥ अने आज्ञोगज्जुक्तिवाद ॥ ६॥ ए रीतें छ प्रकारनो सीमावाद होय छे.

वादी एम कहे के, आ ज्जमि मारी छे, त्यारे प्रतिवादी कहे के, शुं आ ज्जमि तेना बापनी पण हती? एवी रीतना सीमावादने " अस्तिवाद " कहे छे. ॥ १ ॥

वादी एम कहे के, आ ज्जमिमां मारो पांच गुंठा जाग छे, त्यारे प्रतिवादी कहे के, तेनो तेनी अंदर एक जाग पण नथी. एवी रीतना सीमावादने " नास्तिवाद " कहे छे. ॥ २ ॥

वादी एम कहे के, आ सघलुं क्षेत्र मारुं छे, त्यारे प्रतिवादी कहेशे के, एम नहीं, अरधुं क्षेत्र तेनुं छे. एवी रीतना सीमाना वादने " उज्जयवाद " कहे छे. ॥ ३ ॥

वादी एम कहे के, आ क्षेत्र घणा वर्षथी आठ रज्जु जेटला परिमाणवालुं मारी मालेकीनुं छे. त्यारे प्रतिवादी कहेशे के, आठ रज्जुना परिमाणवालुं नथी, पण पांच रज्जुना परिमाणवालुं छे. एवी रीतना सीमाना वादने " न्यूनतावाद कहे छे. ॥ ४ ॥

तेवाज प्रसंगमां कोइ कहेशे के, तेथी अधिक छे. तेने "अधिकसंवाद " कहे छे. ॥ ५ ॥

वादी एम कहे के, आ ज्जमि मारी छे, अने प्राचीनकालथी मारा जोगवटानी छे, तेथी हजुपण हुंज जोगवुं छुं. त्यारे प्रतिवादी कहेशे के, तेनो जोगवटो प्राचीनकालथी नथी, एवी रीतना सीमाना वादने " आज्ञोगज्जुक्तिवाद " कहे छे. ॥ ६ ॥

हवे एवी रीतना ज्जमिवाद समये वादि अने प्रतिवादीनी स- [illegible] तेनो निर्णय करवो. तेमाटे निर्मल समये अधिकारी पुरुषोए [illegible]नी ज्जमी जोवी. तथा त्यां नजदीकमां वसता साक्षिओने बोलावी ते संबंधि पूछवुं. अने तेओना वचनथी निर्णय करीने त्यां निशानी करवी, के जेथी फरीने तेवो क्लेश न थाय. ते कहे छे.

सीमावादे समुत्पन्ने, राजकर्माधिकारिणः ॥
विवादास्पदस्थाने हि, गत्वा काले च निर्मले॥१॥
चिन्हं निर्णयकृत्तच्च, द्रष्टव्यं मार्गकनं भृशम् ॥
तदभावे च तत्पत्यान्, पार्श्वस्थानपि साक्षिणः २
प्राचीनमंत्रिणो वृद्धान्, गोपालांश्च कृषीवलान् ॥
वियोगिनश्च सामंतान्, ग्रामीणान् वनवासिनः॥३॥
प्रातिवेश्मिकतापन्नान्, सत्यधर्मपरायणान् ॥
आहूय शपथं धर्म्यं, वृत्तं च तत्र मार्गकनम् ॥४॥
पृष्टा तद्वचसा कृत्वा, सीमासंवादनिर्णयम् ॥
चिन्हं तत्र तथा कार्यं, यथा स्यान्न पुनः कलिः॥५॥

अर्थ-सीमानो विवाद थते छते राजकारभारीउंए, निर्मळका-ळमां (एटले पाणीनी रेल आदिकना व्याघातना अभावथी जे समये निशानी प्रगट जणाय ते काळमां-अर्थात् चोमासामां नहीं) विवादनी जगोए जइ, निर्णय करनारी पूर्वनी निशानी सारी रीते तपासवी. अने ते निशानी जो न मळे तो, त्यां नजदीक वसता एवा प्राचीन मंत्रीउं, वृद्धपुरुषो, गोवाळीआ, खेडुतो, योगीउं, सामंतो, गांवडीआ लोको, वनवासी लोको, तथा सत्य बोलनारा एवा पडोशीउंने बोलावी धर्मना सोगनपूर्वक तेउंनी साक्षी लेवी. अने तेउंने पूर्वनो वृत्तांत पूछीने, तेउंनां वचनोथी सीमानो निर्णय करवो. अने त्यां एवी रीतनी निशानी करवी के, जेथी करीने ते संबंधि क्लेश थाय नहीं.

हवे निशानी शानी करवी ? ते कहे छे.

सेतुना च तडागेन, देवतायतनेन च ॥
पाषाणैः सरसा वाप्या, कूपेनापःप्रवेण वा ॥१॥

उनी मारी जननारा दरेकने दंड करवोः आ दंड अज्ञान-पणाथी जे जुनी मारी नरे तेने माटेनो छे. पण जे जाणी जोइने छेतरपिंडीथी जुनी मारी नरे, तेने तो तेथी पण विशेष दंड करवो.

हवे जे जमीन सिमाडो जाणनारा न होय, त्यां शुं करवुं ? ते कहे छे.

चिह्नज्ञाता न कोऽप्यस्ति, यत्र तत्र महीपतिः ॥
आरामदेवखातादि-निपानोद्यानचिह्नतः ॥ १ ॥
वल्मीकास्थितुषाद्यैश्च, सीमां निर्णीय पालितः ॥
कुर्याच्चिह्नं यथा न स्या-त्तयोर्हि कलहः पुनः ॥२॥

अर्थ-ज्यां कोइपण सिमाडो जाणनारो न होय, त्यां राजाए बगीचो, देवालय, तळाव, वाडीओ, घर, तथा बगीचाना पाणी-ना स्थानकथी अने राफडानी सीमानो निर्णय करीने, फरीने तेम [illegible] कलह न थाय, तेवी रीते चिह्न करवुं.

अज्ञाने मध्यो दंडः, सीमासाक्ष्यनिर्णये ॥
[illegible] दुर्जनत्वेन, दंडोऽस्यो जायते पृथक् ॥३॥

अर्थ- [illegible] सीमा बोलनारने (राजाए) मध्यम दंड [illegible] न [illegible] विशेष दंड करवो.

[illegible] दुर्जनत्वेन, सीमाचिह्नानि यो नरः ॥
[illegible] स [illegible], [illegible] राजा ॥ ४ ॥

अर्थ- जे माणस दुर्जनपणाथी सीमानां चिह्नोनो नाश [illegible] दंड करवो.

[illegible] [illegible], [illegible] भाषा [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] ॥५॥

अर्थ- [illegible] जे माणस [illegible] चिह्नोनो नाश

करे, तेनो न्याय जाणनार राजाए वसो (रुपीआनो) दंड करवो.

हवे प्रसंगथी पूल तथा कुवा आदिकनो विषय कहे छे.

सेतुः कूपश्च क्षेत्रेऽपि, न निषेध्यो हि केनचित् ॥
स्वल्पबाधाकरास्तेऽपि, बहुलोकोपकारकाः ॥ १ ॥

अर्थ-पूल अने कूवो, जो के क्षेत्रनी अंदर होय, तो पण ते वापरवानो क्षेत्रना मालिके (कोइने) निषेध करवो नहीं, केमके, तेम करवाथी तेउं थोडी हरकत तो करे छे, तो पण घणा लोकोने ते उपकार करनारा छे.

यः सेतुः पूर्वनिष्पन्नः, संस्कारार्हो भवेद्यदा ॥
तदा तत्स्वामिनं पृष्ट्वा, तद्वंश्यं वाथ भूभुजम् ॥१॥
तं संस्करोति चेत्कोऽपि, तर्हि तत्फलभाग् भवेत् ॥
अन्यथा तत्फलं स्वामी, गृह्णीयाद्वा महीपतिः ॥२॥

अर्थ-पूर्वे बांधेलो एवो जो कोइक पूल ज्यारे समराववा योग्य थाय, त्यारे कोइक माणस जो तेना मालिकने अथवा तेना कुटुंबीने, अथवा राजाने पूछीने समरावे, तो ते माणस तेना फलनो भागी थाय, नहींतर तेनुं फल स्वामी अथवा राजा ग्रहण करे.

(आ लखाण परना क्षेत्रमां आवेला पूलने लगतुं छे.)

अंगीकृतेऽपि क्षेत्रे नो, कृषिं कुर्यान्न कारयेत् ॥
तेनापि देयं तन्मूल्यं, फलं स्यादथवा न हि ॥ १ ॥

अर्थ-पोते लीधेलां एवां पण क्षेत्रमां माणस खेती जो न करे; अथवा न करावे, तो पण तेणे तेनुं मूल्य आपवुं जोइए, पछी तेमां फल थाय अथवा न थाय.

उनी मादी जननान देशकने दंड करवो; आ दंड स्थान-न्नर्ड छे तडी मादी जरे तेने मारेलो छे, पण जे माली छोडने छोन्हिकनी उनी मादी जरे, तेने तो तेथी पण विशेष दंड करवो.

हवे छे स्थोर जिन्होंने जाणनारा न होय, तो शुं करवुं ? ते कहे छे.

> [illegible] न कोऽप्यस्ति, यत्र तत्र महीपतः ॥
> [illegible] निपानोद्यानवेश्मभिः ॥ १ ॥
> [illegible], सीमां निर्णीय पार्थिवः ॥
> [illegible] कुर्यात् पुनः ॥२॥

[illegible] जिन्होंने जाणनारो न होय, त्यां राजाए [illegible], तलाव, वाडिओ, पर, तथा [illegible] [illegible] सीमानो निर्णय करीने, [illegible] [illegible] न थाय, तेवी रीते [illegible].

> [illegible], सीमातन्मार्गवासिभैः ॥
> [illegible], दंडोऽन्यो नगति भूपतः ॥ ३ ॥

[illegible] सीमा [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] करवो.

> [illegible], सीमाहिंस्राणि यो नरः ॥
> [illegible], [illegible] ॥ ४ ॥

[illegible] सीमानो [illegible] [illegible] [illegible].

> [illegible], यो [illegible] च ॥
> [illegible] ॥ ५ ॥

[illegible]

[illegible], તેનો [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] પુત્ર [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] છે,

वेणुः कूपश्च [illegible]ऽपि, न [illegible] हि [illegible]ः ।
[illegible]ऽपि, [illegible] ॥ [illegible] ॥

અર્થ- પુત્ર અને પુત્રી, [illegible] છે, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

यः वेणुः पूर्व[illegible], [illegible] ।
[illegible] पुत्रः, [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible]ऽपि, [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] ॥ [illegible] ॥

અર્થ- [illegible] છે.

([illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible])

[illegible]ऽपि [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥

અર્થ- [illegible]

इति संक्षेपतः प्रोक्तः, सीमावादस्य निर्णयः ॥
ज्ञेयो विशेषो धीमद्भिः, मेहार्हन्नीतिशास्त्रतः ॥ १ ॥

अर्थ-एवी रीते संक्षेपमां सीमावादनो निर्णय कह्यो; विशेष प्रकारे तेनुं वर्णन बुद्धिवानोए बृहदर्हन्नीति नामना शास्त्रथी जाणी लेवुं.

॥ इति सीमावादप्रकरणं समाप्तम् ॥

॥ हवे वेतनादाननुं स्वरूप कहे छे. ॥

नत्वा श्रीशीतलं देवं, संसारांबुधितारकम् ॥
वेतनादानस्वरूपं, वर्ण्यतेऽत्र समासतः ॥ १ ॥

अर्थ-संसाररूपी समुद्रथी तारनारा एवा श्री शीतलनाथ प्रभुने नमस्कार करीने हवे टुंकामां वेतनादाननुं स्वरूप वर्णवाय छे.

पाछलना प्रकरणमां सीमावाद कह्यो, हवे तेमां चाकरोनी पण जरुर पडे छे, तेथी हवे तेउनुं स्वरूप कहे छे. (तेमां पण पेहेलां ते चाकरोना भेदो कहे छे.)

सेवकाः पंचधा प्रोक्ताः, शिष्यांतेवासिभृत्यकाः ॥
अधिकर्मकरास्तुर्याः, स्मृता दासास्तु पंचमाः ॥ १ ॥

अर्थ-शिष्य, अंतेवासि, भृत्य, अधिकर्मकरो, अने दासो एम पांच प्रकारना चाकरो होय छे.

चत्वारः प्रथमे तत्र, शुभकर्मकराः स्मृताः ॥
पंचमो दासको ह्यत्र, सर्वकर्मकरो भवेत् ॥ २ ॥

अर्थ-तेउमां पेहेला चार शुभ कर्मोने करनारा छे, अने पांचमो दास सर्व कार्योने करनारो होय.

हवे शिष्य एटले विद्याध्ययन करनारो, अंतेवासी एटले शिल्पविद्यानो अर्थी, जाकुं सेइ काम करनारो ते भृत्य कहेवाय,

नपला चाकरोनो जे उपरी ते अधिकर्मकर (मुकादम) कहे-वाय, तथा घरने आंगणे रहेला कचरा, विष्ठा, मूत्र आदिकने साफ करनार, तथा शेठना गुह्य अंगोनुं प्रक्षालन करनार ते " दास " कहेवाय छे.

भृत्यस्तु त्रिविधस्तत्रा-युधिकः प्रोक्त उत्तमः ॥
मध्यमः कर्षिकश्चैवा-धमो भारस्य वाहकः ॥ १ ॥

अर्थ- तेओमां भृत्य त्रण प्रकारनो होय छे; आयुधिक भृत्यने उत्तम जाणवो, कर्षिकने मध्यम जाणवो तथा भारउपाड-नारने अधम जाणवो.

दासाः पंचदश ख्याताः, गृहजः क्रीत आप्तितः ॥
लब्धो दायागतश्चैव, दुर्भिक्षे पोषितस्तथा ॥ १ ॥
युद्धे पणे च विजित ऋणग्राह् ऋणमोचितः ॥
रक्षितो भुक्तिदानेन, प्रव्रज्या प्रच्युतस्तथा ॥ २ ॥
स्थितो यः स्वयमागत्य, पुंश्चोढादासदासोभवतः ॥
अमातृपितृको यस्तु, विक्रेता स्वयमात्मनः ॥ ३ ॥
॥ विज्ञिर्विशेषकार ॥

अर्थ- दासो पंदर प्रकारना प्रसिद्ध छे. तेओमां जे घरनी दासीने पेटे जन्मेलो होय ते " गृहज " ॥ १ ॥ कहेवाय छे. मूल्य आपी जेने वेचातो लीधो होय ते " क्रीत " ॥ २ ॥ कहेवाय छे. शेठे कोइने धन धीरीने ते पेटे आडमरीके जेने राखेलो होय ते " आप्तित " ॥ ३ ॥ कहेवाय छे. मार्गमां जे आधार-विनानो, अथवा जे कोइ सार्थथी भ्रष्ट थयो होय, अने एवी रीते जे मळी आव्यो होय ते " लब्ध " ॥ ४ ॥ कहेवाय छे. विवाह प्रसंगे दायजामां आवेलो ते " दायागत " ॥ ५ ॥ कहेवाय छे. दुकाळमां जेनुं पोषण कर्युं होय तेवो दास " दुर्भिक्ष-

पोषित " ॥ ६ ॥ कहेवाय छे. संग्राममां जे जीताएलो होय तेवो दास " युद्धप्राप्त ॥ ७ ॥ कहेवाय छे. जुगारमां जे जीताएलो होय तेवो दास " द्युतजित " ॥ ८ ॥ कहेवाय छे. करज छूटे त्यांसुधि जे दासत्वपणाने प्राप्त थयो होय तेवो दास " ऋणभाक् " ॥ ९ ॥ कहेवाय छे. करजने बदलेज जे दास थयो होय ते " ऋणमोचित " ॥ १० ॥ कहेवाय छे. भोजनना बंधनथी जे दास थयो होय ते " रक्षित " ॥ ११ ॥ कहेवाय छे. दीक्षा छोडी दइने जे दास थयो होय ते " प्रव्रज्याप्रच्युत " ॥ १२ ॥ कहेवाय छे. पोतानी मेले जे दासतरीके आवीने रहेलो होय ते " स्वयमागत " ॥ १३ ॥ कहेवाय छे. शेठनी छोकरीने परणवानी लालचथी जे दासतरीके रह्यो होय ते " परीणयलोभत स्थितः " ॥ १४ ॥ कहेवाय छे. मातपिता मृत्यु पामवाथी जे पोतानी मेलेज दासपणाने प्राप्त थयो होय ते " आत्मनविक्रेता " कहेवाय छे.

हवे राजाए कोने दासपणामांथी छोडाववा ? ते कहे छे.

चौरैर्हृत्वा च विक्रीतो, बलाद्दासीकृतश्च यः ॥
दासत्वं तस्य नो युक्तं, बलात्तं मोचयेन्नृपः ॥ १ ॥

अर्थ–चोरोए चोरी करीने जे माणसने वेचेलो होय, अथवा बलात्कारे जेने दासरूप करेलो होय, तेवा माणसने दासपणुं नथी, माटे राजाए तेवा माणसने तेना दासपणाथी मुक्त करवो.

स्वामिनं मोचयेद्यस्तु, प्राणसंशयसंकटात् ॥
मुच्यते दासभावेन, पुत्रवद्भागभाक् च सः ॥ २ ॥

अर्थ– जे चाकर पोताना शेठने जीवितसंकटथी बचावे, ते चाकरने दासत्वपणाथी मुक्त करवो, तथा तेने पुत्रनी पेठे दायभाग आपवो.

(उपरकहेलो विधि सर्व साधारण दासोने माटे जाणवो.)

हवे तेमां विशेषपणुं बतावे छे.

द्रव्य आपी तेना धातरीके राखेला दासो करज जरी आप्याबाद मुक्त थाय छे, तेम अकाले पोषण करवाथी थएला दासो पण मुक्त थइ शके छे. जोजनमाटे जे माणस दास थयो होय, ते तेना शेठने जोजनखरच जेटलुं द्रव्य आपी मुक्त थइ शके छे, तेम युद्धमां, शरतबाजीमां, अने पोतानी मेळे मळेलो दास पण तेवीज रीते मुक्त थइ शके छे. जे माणसे दीक्षा लेइने ते दीक्षानो त्याग कर्यो होय, ते माणसने राजाए बलात्कारे पण दास करवो.

हवे दासने तेना दासपणामांथी छोडाववानो विधि कहे छे.

जे माणस जे वखते स्वामिनी कृपा मेळवीने दासपणाथी विमुक्त थाय छे, ते वखते शेठे एक जळथी भरेला घडाने फोडवो, तथा ते दासने जमनीचे राखीने तेना मस्तकनुं मार्जन करवुं, पछी तेना मस्तकपर पुष्पो तथा अक्षतोने त्रणवार शेठे नाखवा, अने तेने कहेवुं के, आजथी तुं दासपणाथी विमुक्त थयो छुं, तथा स्वतंत्र थयो छुं. अने हवे तारे हमेशां शुद्ध मनना अभिप्रायथी वर्तवुं.

हवे तेवा चाकरने चाकरीबदल केवी रीते द्रव्य आपवुं ? ते कहे छे.

भृत्याय स्वामिना देयं, यथाकृत्यं च वेतनम् ॥
आदौ मध्येऽवसाने वा, यथा यद्यस्य निश्चितम् ॥१॥

अर्थ– शेठे चाकरने तेनी चाकरी प्रमाणे द्रव्य आपवुं. तेमां तेने कार्य सोंपतिवेळाए जेवी रीते ठरावेल करेलो होय तेवी रीते कार्य पहेलां, मध्यमां, तथा छेवटे तेने द्रव्य आपवुं.

अनिश्चिते वेतने तु, कार्यायाद्दशमांशकम् ॥
दापयेन्नृपतिस्तस्मै, स ह्युपस्काररक्षकः ॥ १ ॥

अर्थ– चाकरीमाटेना द्रव्यनो जो ठराव करेलो न होय तो राजाए शेठना कार्यना नफामांथी तेने दशमो हिस्सो अपाववो, केमके ते चाकर शेठना मालनुं रक्षण करनारो होय छे. तेने माटे वृद्धअर्हन्नीतिनिर्माणमां कह्युं छे के,

किमिसाणिआपमूर्दिं जं लाहो हवइ तस्म दसमंसं दावेइ निवोनियं अणिगिरारेऊणं तस्स ॥ १ ॥

व्यापारे स्वामिवित्तस्य, हानिवृद्धिकरः स्वयम् ॥
योऽस्ति तस्मै भृतिर्देया-स्वामिनांशानुसारतः ॥ १ ॥

अर्थ– व्यापारमां शेठना द्रव्यनी जे चाकर हानि अथवा वृद्धि करनारो होय, ते चाकरने तेना शेठनी इच्छा प्रमाणे शेठे चाकरीबदल द्रव्य आपवुं जोइए.

(आ कलम जे चाकरनी चाकरीबदल द्रव्यनो ठराव न करेलो होय तेने माटे छे. अने तेवा प्रसंगमां शेठने जो घणो लाभ थाय तो शेठे तेने वधारे द्रव्य आपवुं, थोडो लाभ थाय तो थोडुं द्रव्य आपवुं.)

अनेककृतकार्ये तु, दद्याद्भृत्याय वेतनम् ॥
यथाकर्म तथा साध्ये, देयं तस्मै यथाश्रुतम् ॥१॥

अर्थ– करेलां एवां अनेक कार्योमाटे चाकरने तेना कार्यना प्रमाणमां चाकरीबदल द्रव्य आपवुं, अने ते कार्य संपूर्ण थयाबाद तेने शास्त्रमुजब आपवुं.

हवे चाकरमाटेनो दंड कहे छे,

संदत्ते वेतने भृत्यः, स्वकं कर्म करोति न ॥
द्विगुणं स च तो दंड्यो, दत्तं भृतिगणेन च ॥ १ ॥

अर्थ– चाकरीनुं द्रव्य लेइनेपण जे चाकर पोतानुं काम करतो नथी, तेने बमणो दंड करवो, अने चाकरीनुं द्रव्य अगाउथी लीधाविना पण जे काम करतो नथी, तेने तेनी चाकरीना मूल्य जेटलो दंड करवो.

अनसाध्ये कार्ये तु, देयं भृत्याय वेतनम् ॥
यथाकार्यं तथासिद्धे, सिद्धे देयं यथाश्रुतम् ॥ १ ॥

अर्थ– अनसाध्य कार्य प्रसंगे चाकरने कार्यना प्रमाणमां द्रव्य आपवुं, अने कार्य सिद्ध थयेथी शरत प्रमाणे द्रव्य आपवुं.

भांडं तु नाशयेत्किंचि-त्प्रमादाद्भारवाहकः ॥
तन्मूल्यप्रतिमं द्रव्यं, दापयेत्स्वामिनं नृपः ॥ १ ॥

अर्थ– भार उपाडनार मजुर प्रमादथी जो कांई वासणनो नाश करे, तो ते वासणना प्रमाण जेटली किमतनुं द्रव्य राजाए ते मजुरनीपासेथी ते वासणना मालिकने अपाववुं.

प्रतिवचःपरो भृत्यो, नित्यं विघ्नकरो भवेत् ॥
भृतिद्विगुणो दंड्यः स, दोषो हि बलवत्तरः ॥ १ ॥

अर्थ– जे चाकर हमेशां सामुं बोले छे, ते हमेशां विघ्नकरनारो थाय छे, माटे तेनो तेनी चाकरीना द्रव्यथी बमणो दंड करवो, केमके, तेनो ते दोष घणोज मोटो छे.

दंड्यः सप्तमभागेन, दत्तकार्ये परित्यजन् ॥
मार्गे तु प्रयभागेन, विना व्याध्यादिकारणम् ॥ १ ॥

अर्थ– सोंपेलुं कार्य तजीने जे चाकर चाल्यो जाय, तेनो सातमा भाग जेटलो दंड करवो, तेम मार्गमां जे तजीने चाल्यो जाय, तेनो त्रीजा भाग जेटलो दंड करवो (पण तेमां व्याधि आदिकना कारणनो अपवाद जाणवो.)

मार्गार्धसमतिक्रांतं, कुर्वंतं निजकर्म च ॥
भृत्यं त्यजति यः स्वामी, स दद्यात्सकलां भृतिम् १

अर्थ– (मुसाफरी दरम्यान) अरधो मार्ग उलंगीगएला, तथा पोतानुं कार्य (बरोबर)करता एवा चाकरने जे शेठ तजी आपे, ते शेठे तेने सघलो पगार आपवो जोइए.

इत्येवं वेतनादान-स्वरूपं चात्र वर्णितम् ॥
संक्षिप्तं श्रुतपाथोधि-मध्याद्रत्नमिवोद्धृतम् ॥१॥

अर्थ– एवी रीते अहीं ज्ञानरूपी समुद्रमांथी जाणेरत्नने उधरेलुं होय नहीं एवुं वेतनादाननुं स्वरुप संक्षिप्तथी वर्णव्युं छे.

॥ इति वेतनादान प्रकरणम् ॥

॥ अथ क्रयेतरानुसंताप प्रकरणं प्रारभ्यते ॥

श्रीश्रेयांसं नमस्कृत्य, वादिकौशिकभास्करम् ॥
क्रयेतरानुसंतापः, कथ्यतेऽत्र समासतः ॥ १ ॥

अर्थ– वादिरूपी घुवडोने सूर्यसरखा एवा श्रीश्रेयांसनाथ प्रभुने नमस्कार करीने हवे अहीं क्रयेतरानुसंताप नामनुं प्रकरण संक्षेपथी कहे छे.

पूर्वना प्रकरणमां चाकरोनुं स्वरूप कह्युं, हवे ते चाकरसहित द्रव्यवान माणस, ते चाकरद्वाराए अथवा पोतेपण क्रयविक्रय (खरीदी अने वेचाण) करे छे. तेमां वस्तुनी परीक्षाविना जो लेवडदेवड थाय, तो तेथी पश्चात्ताप पण थाय छे. माटे तेनुं स्वरूप कहे छे.

हवे तेमां आदिमां क्रीतानुशयनुं तथा विक्रीतानुशयनुं लक्षण कहे छे.

क्रेता पणेन पण्यं यो, क्रीत्वा जानाति नो यदु ॥
पश्चात्तापो भवेत्तस्य, स क्रीतानुशयः स्मृतः ॥ २ ॥

अर्थ- जे माणस मूल्य आपी वस्तु वेचाती ले, पण ते वेचाती लेइने ते वस्तुनी जो परीक्षा न करी शके, तो तेउने घणो पश्चात्ताप थाय छे, अने तेथी ते पश्चात्तापने "क्रीतानुशय" कहेलोछे.

विक्रीय द्रव्यं यो मन्ये-न्मूल्यमल्पमुपागतम् ॥
तस्य चित्तेनुतापो यो, विक्रितानुशयो भवेत् ॥ १ ॥

अर्थ- जे माणस वस्तु वेचीने एम माने के, मूल्य तो घणुंज थोडुं आव्युं; तेना चित्तमां थएलो एवो अनुताप, ते "विक्रेतानुशय" कहेवाय छे.

क्रीतं मत्यर्पितुं वस्तु, ग्राहकश्चेत्समीहते ॥
विकृतं तद्दिने चैव, तर्हि मत्यर्पयेद् ध्रुवम् ॥ १ ॥

अर्थ- वेचाती लीधेली वस्तु, ग्राहक जो पाछी देवाने इछे तो, ते वस्तुने बगाड्याविना तेज दिवसे ते पाछी आपी शके.

दद्द्वितीये दिवसे, पणः त्रिंशांशहानिभाक् ॥
तृतीये द्विगुणा हानिः, परतो देयमेव न ॥ १ ॥

अर्थ- ते वेचाती लीधेली वस्तु जो बीजे दिवसे पाछी आपे तो, तेनी किमतथी त्रीजो भाग जेटलुं मूल्य मले, अने त्रीजे दिवसे जो पाछी आपे तो, तेथी बमणो भाग ओछो मले, अने (बे दिवस) पछी तो वेचाती लीधेली वस्तु पाछी देइ शकायज नहीं. (उपर कहेलो नियम परीक्षा कर्याविनाज लीधेली वस्तुमाटे छे. पण परीक्षा करीने लीधेली वस्तु तो पाछी देइ शकायज नहीं.) कह्युं छे के,

परीक्षापूर्वकं क्रीतं, वस्तु यत्स्वामिना स्वयम् ॥
तद्विक्रेता न गृह्णीया-द्धव्यं मत्यर्पयेन्न च ॥ १ ॥

परतु, वेचनार माणमे ग्रहण करवी नहीं, तेम तेमाटे लीधेलुं मूल्य पण पाछुं आपवुं नहीं.

हवे परीक्षाना प्रसंगथी सुवर्ण आदिकनी हानिनी परीक्षा कहे छे.

वन्हौ स्वर्णस्य नो हानिः, रजतस्य पलद्वयम् ॥
त्रपोरष्टौ च ताम्रस्य, पंचायसि पलानि षट् ॥ १ ॥

अर्थ— अग्निमां नांख्याथी सुवर्णनी हानि थती नथी, रूपानी बे पल, जसतनी आठ पल, तांबानी पांच पल, तथा लोखंडनी छ पल जेटली हानि थाय छे (आ सघली हानि दर सोपले जाणवी) अने तेथी जो अधिक हानि थाय तो कारिगरनो दंड करवो. बृहदर्हन्नीतिमां पण कह्युं छे के,

" हाणीणह सुवण्णे अग्गीए पलदुग्गं जये रयए तंबरगयं प लोहे दसणीमे अट्ठपलगपलं "

त्रिंशद्भागक्षयो रोम-जाते च भूर्जके पुनः ॥
कौशेये वल्कले तु स्यान्न वृद्धिर्न क्षयः कदा ॥ ९ ॥

अर्थ– रोमथी बनावेलां वस्त्रमां त्रीशमा भाग जेटली हानि थाय, अने भूर्जपत्रना, रेशमना, तथा वल्कलना वस्त्रमां कदापि पण वृद्धि के हानि थाय नहीं.

क्रयेतरानुसंतापः, संक्षेपेणात्र सूत्रितः ॥
यद्ज्ञानेन प्रवीणाः स्यु-र्जना व्यापारकर्मणि १

अर्थ– एवी रीते अहीं संक्षेपथी क्रियेतरानुसंतापनुं वर्णन कर्युं, के जेना ज्ञानथी लोको व्यापारना कार्यमां प्रवीण थाय छे.

॥ इति क्रयेतरानुसंतापप्रकरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ स्वामिभृत्यविवाद प्रकरणं लिख्यते ॥

वासुपूज्यजिनं स्तुत्वा, दुष्टारातिविनाशकम् ॥
स्वामिभृत्यविवादोऽत्र, संक्षेपेणाभिधीयते ॥ १ ॥

अर्थ– दुष्ट एवा (अंतरंग शत्रुओने) नाश करनारा एवा श्री वासुपूज्य प्रभुनी स्तुति करीने अहीं संक्षेपथी स्वामि अने चाकरवर्गनो विवाद कहेवाय छे.

आगलना प्रकरणमां क्रयविक्रय वृत्तांत कह्युं. हवे वेचाती लीधेली एवी गायो तथा भेंसो आदिकने चारवामाटे गोवाल आदिकोने चाकर राखवा जोइए. हवे तेवा चाकरो ज्यारे अपराधमां आवे छे, त्यारे तेओनो मुकरदमो चाले छे. माटे हवे तेनुं वर्णन करे छे.

महिषी त्वष्टमाषैश्च परशस्यविनाशिनी ॥
दंड्यास्तदर्धैः सुरभि-स्तस्याप्यर्धैरजाविः ॥ २ ॥

अर्थ– पारका (खेतरना) पाकने नाश करनारी एवी भेंस

मार्गार्धसमतिक्रांतं, कुर्वंतं निजकर्म च ॥
भृत्यं त्यजति यः स्वामी, स दद्यात्सकलां भृतिम् १

अर्थ– (मुसाफरी दरम्यान) अरधो मार्ग उल्लंघीगएला, तथा पोतानुं कार्य (बरोबर)करता एवा चाकरने जे शेठ तजी आपे, ते शेठे तेने सघलो पगार आपवो जोइए.

इत्येवं वेतनादान-स्वरूपं चात्र वर्णितम् ॥
संक्षिप्तं श्रुतपाथोधि-मध्याद्रत्नमिवोद्धृतम् ॥१॥

अर्थ– एवी रीते अहीं ज्ञानरूपी समुद्रमांथी जाणेरत्नने उधरेलुं होय नहीं एवुं वेतनादाननुं स्वरुप संक्षिप्तथी वर्णव्युं छे.

॥ इति वेतनादान प्रकरणम् ॥

॥ अथ क्रयेतरानुसंताप प्रकरणं प्रारभ्यते ॥

श्रीश्रेयांसं नमस्कृत्य, वादिकौशिकभास्करम् ॥
क्रयेतरानुसंतापः, कथ्यतेऽत्र समासतः ॥ १ ॥

अर्थ– वादिरूपी घुवडोने सूर्यसरखा एवा श्रीश्रेयांसनाथ प्रभुने नमस्कार करीने हवे अहीं क्रयेतरानुसंताप नामनुं प्रकरण संक्षेपथी कहे छे.

पूर्वना प्रकरणमां चाकरोनुं स्वरूप कह्युं, हवे ते चाकरसहित द्रव्यवान माणस, ते चाकरद्वाराए अथवा पोतेपण क्रयविक्रय ([illegible]रीदी अने वेचाण) करे छे. तेमां वस्तुनी परीक्षाविना जो [illegible] थाय, तो तेथी पश्चात्ताप पण थाय छे. माटे [illegible]मां कहे छे.

[illegible] ते श्र आदिमां क्रीतानुशयनुं तथा विक्रीतानुशयनुं स्वरूप क[illegible] हवे

हवे तेमां [illegible]नुं लक्षण कहे छे.

[illegible] ते मूल्यं यो, क्रीता जानाति नो वहु ॥
[illegible] सो तस्य, स क्रीतानुशयः स्मृतः ॥ २ ॥

क्रेता पणेन प[illegible]

पश्चात्तापो [illegible]

अर्थ– जे माणस मूल्य आपी वस्तु वेचाती ले, पण ते ती लेइने ते वस्तुनी जो परीक्षा न करी शके, तो तेउने पश्चात्ताप थाय ने, अने तेथी ते पश्चात्तापने "क्रीतानुशय" कहेव

विक्रीय द्रव्यं यो मन्ये-न्मूल्यमल्पमुपागतम् ॥
तस्य चित्तेनुतापो यो, विक्रेतानुशयो भवेत् ॥ १

अर्थ– जे माणस वस्तु वेचीने एम माने के, मूल्य तो घणु थोडुं आव्युं; तेना चित्तमां थएलो एवो अनुताप, ते " वि तानुशय " कहेवाय ने.

क्रीतं मत्यर्पितुं वस्तु, ग्राहकश्चेत्समीहते ॥
विकृतं तद्दिने चैव, तर्हि मत्यर्पयेद् ध्रुवम् ॥ १ ॥

अर्थ– वेचाती लीधेली वस्तु, ग्राहक जो पाछी देवाने इच्छे तो, ते वस्तुने बगाड्याविना तेज दिवसे ते पाछी आपी शके.

ददद्द्वितीये दिवसे, पणः त्रिंशांशहानिभाक् ॥
तृतीये द्विगुणा हानिः, परतो देयमेव न ॥ १ ॥

अर्थ– ते वेचाती लीधेली वस्तु जो बीजे दिवसे पाछी आ तो, तेनी किमतथी त्रीजो भाग उंचुं मूल्य मले, अने त्रीजे दिवसे जो पाछी आपे तो, तेथी बमणो भाग ओछो मले; बाद (ये दिवस) पछी तो वेचाती लीधेली वस्तु पाछी देइ शके नहीं. (उपर कहेलो नियम परीक्षा कर्याविनाज लीधे माटे ले. पण परीक्षा करीने लीधेली वस्तु तो पाछी नहीं.) कयुं ले के,

परीक्षापूर्वकं क्रीतं, वस्तु यत्स्वामिन ॥
तद्विक्रेता न गृह्णीया-द्रव्यं मत्यर्पे ज्ञानविः ॥ १ ॥

अर्थ– जे वस्तु स्वामिए पोते परीक्षा करी

वेल छे) तेने हरनारा माणसनी ज्यारे राजाए खातरी करी, त्यारे पेहेलां ते थापण तेना स्वामिने अपाव्याबाद राजाए ते उपनिधिना हरनार माणसनो दंड करवो.

हवे कोइने जय आपीने जे छुष्ट माणस आवी थापणना संबंधमां ठगे, तेनो राजाए दंड करवो ते कहे छे.

राज्यगेहे श्रुतं मित्र, नृपः क्रुद्धस्तवोपरि ॥
ततस्त्वं मद्गृहे तिष्ट, रक्षामि त्वामसंशयम् ॥ १ ॥
चेद्भूयस्त्वगृहस्थानि, वस्तूनि द्राक् गृहिष्यति ॥
त्वदिछा चेत्समस्तानि, मद्गेहे स्थापयाम्यहम् ॥ २ ॥
इत्येवं कैतवं कृत्वा, जयं दत्वा हरेद्धनम् ॥
कन्यावास्तुहिरण्यादि, हेतुभिर्विविधैः खलः ॥ ३ ॥
स दंड्यो भूमिपालेन, कारागारादिबंधनैः ॥
निर्वास्यो नगरात्स्वीया-त्सर्वलोकप्रपंचकः ॥ ४ ॥

अर्थ– हे मित्र! राजदरवारमां तारी वात प्रसिद्ध थइ गइ छे, अने तेथी राजा तारापर गुस्से थएलो छे; माटे हवे तुं मारे घेर रहे, हुं खरेखर तारुं रक्षण करीश. वली कदाच तारा घरनी वस्तुओ पण राजा एकदम लेइ लेशे, माटे जो तारी इछा होय तो ते तारी सघली वस्तुओ हुं मारे घेर राखुं; एवी रीते विविध प्रकारना हेतुओथी ठगाइ करीने, तथा जय देखाडीने जे छुष्ट माणस कन्या, घर, तथा सुवर्ण आदिकनुं हरण करे छे, एवा ते सर्व लोकोने ठगनार माणसनो राजाए केदखाना तथा बंधनआदिकथी दंड करवो, अने तेने पोताना नगरथी बहार कहाडी मेलवो.

हवे साक्षियी निश्चितकरेला मुकरदमानो विषय कहेछे.

साक्षिनिश्चित्यनिक्षेप-विवादेऽन्योऽन्यमेव च ॥
यावत्साक्ष्यादिभिः सिद्धयेत्, तदेव स्यात्प्रमाणयुक् १

अर्थ– साक्षिथी निश्चित करवा लायक एवा थापणसंबंधि मुकरदमामां, केस ज्यारे अन्योन्य साक्षीआदिकथी पुरवार थाय, त्यारे ते सत्य प्रमाणवालो कहेवाय.

हवे आवा थापणसंबंधि मुकरदमामां साक्षिर्ज विविध प्रकारना होय छे. तेर्जमां योग्य कया अने अयोग्य कया? ते कहे छे.

यः कृत्यस्यादिमंतं च, जानाति नितरां नरः ॥
प्रत्यक्षदर्शी साक्षी स्या-न्न परः श्रुतिमात्रतः ॥ १ ॥

अर्थ– जे माणस ते कार्यनी आदि अने अंत हमेशां जाणे छे, अने प्रत्यक्ष जोनारो छे, तेज साक्षी थइ शके, पण बीजो केवल सांजलवामात्रथीज साक्षी थइ शके नहीं.

हवे ते साक्षी बे प्रकारनो होय छे, स्वाजाविक अने नैयोगिक तेर्जमां स्वाजाविक साक्षीर्जना ७ जेदो होय छे. अने नैयोगीक पांच प्रकारनो होय छे.

ग्रामीणः प्राड्विपाकश्च, नृपश्च व्यवहारिणः ॥
राज्यस्वकार्यासिरतो,ऽर्थिना तु प्रहितश्च यः ॥ १ ॥

अर्थ– ग्रामीण एटले गांवडीर्ज, जामीन, राजा, व्यापारी, राज्यकार्यवालो, अने पोताना कार्यवालो तथा वादीए मोकलेलो

कुल्याकुल्यविवादेपु, विज्ञेयास्तेऽपि साक्षिणः ॥
न्यायोक्तगुणसंपन्ना, अर्थिप्रत्यर्थिमोदिनः ॥ १ ॥

अर्थ– कुलीन अथवा अकुलीन मुकरदमार्जमां, न्यायमां कहेला गुणोवाला, अने वादी तथा प्रतिवादिने हर्ष करनारा एवा तेर्जने पण साक्षी जाणवा.

रक्षितः स्मारितश्चैव, यदृच्छागत एव च ॥
गुप्तोऽथ चानीतश्चापि, एवं पंचविधः परः ॥ १ ॥

अर्थ– रक्षित, एटले वादीए पोते लावेलो, पोतानी मेळे आवेलो, गुप्त तथा लावेलो ए पांच प्रकारनो (नैयोगिक) साक्षी जाणवो.

स्वधर्मनिरताः शस्याः, कुलीनाश्च तपस्विनः ॥
दानिनो धनिनः पुत्र-वंतो बहुकुटुंबिनः ॥ १ ॥

अर्थ– पोताना धर्ममां रक्त, प्रशंसा करवा लायक, कुलीन, तपस्वी, दान देनारा धनवान, पुत्रवान, घोहोळा कुटुंबवाळा,

निर्लोभाश्च विजातीयाः, श्रुताध्ययनसंयुताः ॥
शुद्धवंशोद्भवा वृद्धाः, कार्या वै साक्षिणः सदाः॥१॥

अर्थ– निर्लोभी, परजातिवाळा ,ज्ञानना अभ्यासवाळा, शुद्ध-वंशथी उत्पन्न थएला, तथा वृद्धो एवा साक्षीओ हमेशां करवा.

स्त्रीणा साक्ष्ये स्त्रियः कार्याः, पुरुषाणां नरास्तथा ॥
परोपकारनिरताः शत्रुमित्रसमेक्षणाः ॥ १ ॥

अर्थ– स्त्रीओनी साक्षी समये स्त्रीओने साक्षी करवी, तथा पुरुषोनी साक्षीवेळाए पुरुषोने साक्षी करवा; तेओ सघळा परोपकारी तथा शत्रु अने मित्रप्रते तुल्य दृष्टि राखनारा होवा जोइए.

हवे ते रक्षितादिकोनुं स्वरूप कहे छे.

अर्थिना स्वयमानीतो, यः पत्रे प्राक् निवेश्यते ॥
स साक्षी रक्षितो ज्ञेयो, ऽरक्षितः पत्रकादृते ॥ १ ॥

अर्थ– वादी पोते जे साक्षीने लावीने पेहेलां अरजीमां दाखल करे, ते साक्षीने रक्षित जाणवो, अने अरजीविनाना साक्षीने अरक्षित जाणवो.

कार्ये मुहुर्मुहुः पृष्टो, कार्यसिद्ध्यर्थमेव च ॥
स्मार्यते चार्थिना यो वै, स स्मारित इहोच्यते ॥१॥

उथाथी कार्यनी सिद्धिमाटेज वादी
ने अहीं " स्मारितसाक्षी " कहे छे.

त्वयं राज्यसज्ञास्थले ॥
ादृच्छागत उच्यते ॥ १ ॥

टे जे साक्षी पोतानी मेळे राज्यस-
आव्यो होय ते " यदृच्छागत "
साक्षी कहेवाय छे.

प्रसंगादागतः साक्षी, वा प्रयोजनतः स्वयम् ॥
प्रत्यर्थिवचनं श्रोतु-मर्थिना स्थापितश्च यः ॥ १ ॥

अर्थ- प्रसंगथी पोतानी मेळे आवेलो, अथवा कंई कार्यमाटे आवेलो, अथवा प्रतिवादीनी जुबानी सांभळवाने आवेलो, एवा साक्षीने वादीए जे स्थापन कर्यो होय, तेने पण " यदृच्छागत साक्षी " जाणवो.

गुप्तसाक्षी स विज्ञेयो, ऽर्थिनः कार्यस्य सिद्धिदः ॥
साक्ष्युक्तश्रवणाज्जात-स्फूर्तिरुत्तरदायकः ॥ १ ॥

अर्थ- साक्षीना वचनो सांभळीने स्फुरता आववाथी जे साक्षी उत्तर आपे, तेने वादीना कार्यनी सिद्धि आपनारो गुप्त साक्षी जाणवो.

इति संक्षेपतः प्रोक्तो, निक्षेपविधिसंग्रहः ॥
विस्तृतिरस्य विज्ञेया, महार्हन्नीतिशास्त्रतः ॥ १ ॥

अर्थ- एवीरीते संक्षेपथी थापणनी विधिनुं स्वरूप कह्युं, तेनो विस्तार बृहदर्हन्नीति नामना शास्त्रथी जाणी लेवो.

॥ इति निक्षेपप्रकरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ अस्वामिविक्रमकरणं मारभ्यते ॥

श्रीमदर्हतमानम्या-ऽनंतं चानंतसौख्यदम् ॥
यथागमं वर्ण्यतेऽत्र, विक्रयोऽस्वामिवस्तुनः ॥ १ ॥

अर्थ– अनंतसुखना देनारा एवा श्रीमान् श्री अनंतनाथजी प्रभुने नमस्कार करीने, आगमनी रीति प्रमाणे, स्वामीनी गेरहाजरीमां वेचाए थती वस्तुसंबंधि स्वरूप कहे छे.

पूर्वना प्रकरणमां निक्षेपनुं (थापणनुं) स्वरूप कह्युं. हवे ते थापण राखेली वस्तु, कोइक खोटो माणस स्वामीनी आज्ञाविना पण वेची नाखे, माटे हवे तेनुं वर्णन करे छे. हवे तेमां पेहेलुं स्वामीनी आज्ञाविनाना वेचाणनुं स्वरूप कहे छे.

प्रछन्नं परकीयस्य, नष्टनिक्षिप्तवस्तुनः ॥
विक्रयः स्वाम्यसत्वे यः, स स्यादस्वामिविक्रयः २

अर्थ– चोराएली के थापण राखेली एवी पारकी वस्तुनुं गुप्त रीते स्वामीनी आज्ञाविना जे वेचाण करवुं, तेने "अस्वामीविक्रय" कहे छे.

हवे स्वामीनी आज्ञाविना वस्तु वेचनारो माणस केवा दंडने योग्य थाय? ते कहे छे.

स्वाम्याज्ञातमृते कोऽपि, विक्रीणात्यन्यवस्तु यः ॥
स दंड्यश्चौरवद्वस्तु, दापयेत्स्वामिनं नृपः ॥ ३ ॥

अर्थ– जे कोइ माणस स्वामीनी आज्ञाविना परनी वस्तु वेंचे छे, तेने चोरनी पेठे दंडवो, अने ते वस्तु राजाए तेना मालिकने सोंपवी.

संध्याकाले अथवा रात्रिए एटले वस्तु वेचावानो समय गया बाद कोइ गरीब माणसपासेथी गुप्त रीते, थोडुं मूल्य आपी,

मोटी किम्मतनी जो कोइ माणस वस्तु वेचाती ले, तो तेने दंड करी शकाय के नहीं? ते कहे छे.

दीनान्महर्घ्यवस्तूनां, क्रेताऽकाले रहस्यपि ॥
अल्पद्रव्येण गृहीत्वा-दस्युवद्दंडभाग् भवेत् ॥ १ ॥

अर्थ- अकाल वेलाए गुप्त रीते गरीब माणसपासेथी अल्पमूल्य आपीने जे मोटी कीमतनी वस्तु लेवे, तेनो चोरनी पेठेज दंड थइ शके.

हवे ज्यारे वस्तुनो मालिक, बीजाए वेचेली एवी पोतानी वस्तुने ज्यारे खरीद करनारना हाथमां रहेली जुए, त्यारे शुं करवुं? ते कहे छे.

लब्ध्वा स्वमन्यविक्रीतं, क्रेतृहस्तस्थितं धनी ॥
तं ग्राहयेत्तलारक्षं, दंड्यौ तेनापि तौ तदा ॥ १ ॥

अर्थ- बीजाए वेचेली एवी पोतानी वस्तुने खरीद करनारना हाथमां रहेली जोइने, मालीके ते खरीद करनारने कोटवालने हाथे पकडाववो; अने ते कोटवाले पण तेउं बन्नेने एटले वेचनार तथा खरीदनारने दंडवा.

नष्टं चापहृतं वस्तु, मदीयमिति साधयेत् ॥
ततः क्रेतापि शुद्ध्यर्थं, विक्रेतारं प्रदर्शयेत् ॥ १ ॥

अर्थ- खोवाएली अथवा चोराएली वस्तुने "आ मारी छे" एम जे कोइ कहे, तेणे पोताना पवित्रपणामाटे ते वस्तु वेचनारने बतावी आपवो जोइए.

ततो मूल्यं स चाप्नोति, शुध्येच्चापि न संशयः ॥
यद्यशक्तस्तमानेतुं, तदा साक्ष्यादिभिः क्रयम् ॥ १ ॥

अर्थ- पछी तेने मूल्य मली शके छे, अने पोते पवित्र पण

छे, तथा लोकमां अत्यंत अप्रीति करनारुं छे, एवुं कठोर वचन उत्तम माणसोए प्राण जतां पण बोलवुं नहीं.

वाचा सत्यापि या लोके, जीवानां दुःखदायिका ॥
सा ग्राह्यते न केनापि, वनवासितपस्विना ॥ १ ॥

अर्थ- सत्य वची पण जे वाणी लोकमां जीवोने दुःखदाइ छे, तेवी वाणी कोइपण वनवासी तपस्वी अंगीकार करे नहीं.

ब्राह्मणक्षत्रविट्शूद्रा, वदंतः परुषं वचः ॥
नृपेणात्महितार्थं ये, दंड्या वर्णानुसारतः ॥ १ ॥

अर्थ- ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य अने शूद्रमांनो जे माणस कठोर वचन बोले, तेओने आत्महितमाटे राजाए तेओनी जाति प्रमाणे दंड करवो.

द्विजोऽयं चौर इत्युक्त्वा, व्याक्रोशं क्षत्रियो यदि ॥
कुरुते नृपतिर्दंडं, देयास्तं मुद्रिकाशतैः ॥ १ ॥

अर्थ- आ ब्राह्मण चोर छे, एम कहीने ज्यारे क्षत्रीय आक्रोश करे त्यारे राजाए तेनो सो मोहोरोनो दंड करवो.

वैश्याक्रोशे तदर्धं स्यात्-शूद्राक्रोशे च विंशतिः ॥
क्षत्राक्रोशे तु क्षत्रस्य, दंडः स्याद्द्वितीयांशतः ॥१॥

अर्थ- वैश्यनो आक्रोश करे तो तेथी अरधो दंड करवो, शूद्रना आक्रोश थतां वीश मोहोरोनो दंड करवो, अने क्षत्री जो क्षत्रीनो आक्रोश करे तो द्वितीयांश एटले अरधो दंड थाय.

ब्राह्मणेन द्विजाक्रोशे, आक्रुष्टे क्षत्रियेऽपि च ॥
तस्य दंडोनयोरपि, वर्णाद्विजन्मनः सदा ॥ १ ॥

अर्थ- ब्राह्मण जो द्विजनो आक्रोश करे, क्षत्रीनो आक्रोश करे, तो बंनेने तुल्य दंड करवो ब्राह्मण पणानां आशयो.

वैश्याक्रोशे तु विप्रस्य, पणानां पंचविंशतिः ॥
शूद्राक्रोशे भवेत्तस्य, दंडस्तु दशभिः पणैः ॥ १ ॥

अर्थ– वैश्यनो आक्रोश करते छते ब्राह्मणनो पचीस पणोनो दंड थाय, अने शूद्रनो आक्रोश होते छते दश पणोनो दंड थाय.

वैश्येन ब्राह्मणाक्रोशे, मुद्रासार्धशतैर्दमः ॥
क्षत्राक्रोशे तदर्धः स्या च्छूद्राक्रोशे ततोऽर्धकः ॥१॥

अर्थ– वैश्यथी ब्राह्मणनो आक्रोश होते छते दोढसो मोहोरोनो दंड थाय, क्षत्रीनो आक्रोश होते छते तेथी अर्ध थाय, अने शूद्रनो आक्रोश होते छते तेथी पण अर्ध थाय.

वैश्याक्रोशे तु वैश्यस्य, पणैस्त्रिंशद्भिरीरितः ॥
शूद्रेण ब्राह्मणाक्रोशे, दंडः स्यात्ताडनादिभिः ॥१॥

अर्थ– वैश्यनो जो वैश्य आक्रोश करे, तो त्रीस पणोनो दंड थाय, शूद्रथी जो ब्राह्मणनो आक्रोश थाय, तो ताडन आदिकथी दंड थाय.

क्षत्राक्रोशे शतं सार्धं, वैश्याक्रोशे तदर्धकम् ॥
शूद्रेण शूद्राक्रोशे तु, पणानां पंचविंशतिः ॥ १ ॥

अर्थ– क्षत्रीना आक्रोश वेलाए दोढसोनो, वैश्यना आक्रोश वखते तेथी अर्ध, शूद्रथी जो शूद्रनो आक्रोश थाय तो पचीस पणोनो दंड थाय.

जातिदोषं वदेन्मिथ्या, ब्राह्मणे क्षत्रिये विशि ॥
स तु, दंडमवाप्नोति, वेदाब्धिद्विपणैः क्रमात् ॥ १ ॥

अर्थ– ब्राह्मण, क्षत्रीय अने वैश्यमते जे फोगट जातिदोष बोले तेनो अनुक्रमे चार, सात अने बे पणोनो दंड थाय.

जाहेर खबर.

सर्वे जैनबंधुउने मालम थाय जे श्रमरा तरफथी हालमां नीचेना नवा अपूर्व जैनी ग्रंथो, गुजराती जाषांतर साथे छपावीनें पाकां पुठांथी बांधी बहार पडवामां श्राव्या छे.

योगशास्त्र.– (कर्ता श्री हेमचंद्राचार्य) किम्मत रु. ३–४–०
सामुद्रिक शास्त्र.(कर्ता श्री जद्रबाहुस्वामि)किम्मत रु. १–०–०
शुकनशास्त्र.– (कर्ता श्री जिनदत्तसूरि) गुजराती लीपीमां छे किम्मत रु. ०–६–०
प्रतिष्ठाकल्प. (कर्ता श्री सकलचंद्रजी) किम्मत रु. ०–८–०
जलजात्रादिविधि.–(कर्ता श्री रत्नशेखरसूरि) किम्मत रु.–६–०
अष्टकजी.–(कर्ता श्री हरिजद्रसूरि, टीकाकार श्री जिनेश्वरसूरि) किम्मत रु. १–१२–०
कल्पसूत्र.(सुखबोधिकाटीकानुं गुजराती जाषांतर चित्रोस.)२–८–०
धर्म सर्व स्वाधिकार. (कर्ता श्री जयशेखरसूरि) तथा कस्तूरिप्रकरण. (कर्ता श्री हेमविमलगणि) कि. रु. ०–८–०
शत्रुंजय माहात्म्य खंड पेहेलो(कर्ता श्री धनेश्वरसूरि)कि. रु.२-४-०
वैराग्यकल्पलता. (कर्ता श्री यशोविजयजी उपाध्याय)रु.३-०-०
दिग्विजयप्रकरण. (कर्ता श्री विनयसागरोपाध्यायजी) रु. ०-५-०
जैनकुमारसंजव महाकाव्य. (कर्ता श्री जयशेखरसूरि) रु.१-१२-०
जद्रबाहु संहिता.(जैननोअपूर्वज्योतिषग्रंथ)(कर्ताश्रीजद्रबाहुस्वा.)
मेघमालाविचार. (कर्ता श्री) कि.
त्रीलोक्य प्रकाश (अथवा)